बच्चों की त्रैमासिक पत्रिका

बालप्रहरी

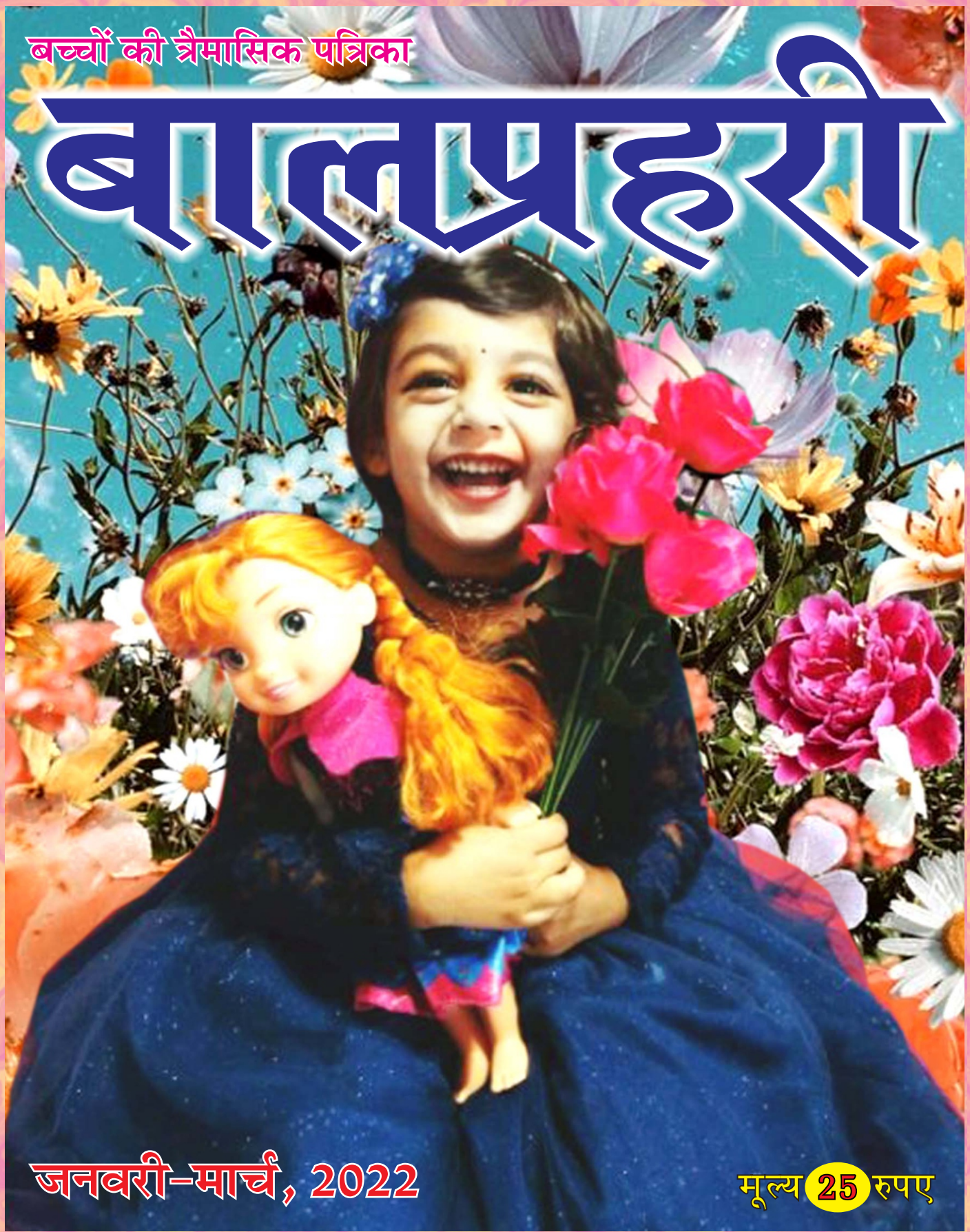

जनवरी–मार्च, 2022

मूल्य 25 रुपए

उत्तराखंड राज्य स्थित पंचप्रयाग

● उदय किरौला

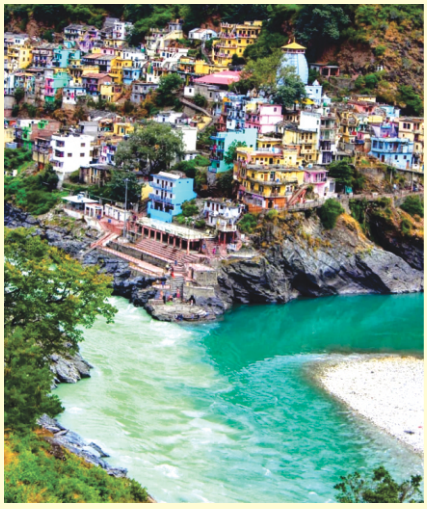

उत्तर प्रदेश स्थित प्रयागराज सहित समूचे भारत में 14 प्रयाग बताए गए हैं। इनमें से 5 प्रयाग उत्तराखंड में स्थित हैं। जिन्हें रुद्रप्रयाग, कर्णप्रयाग, नंदप्रयाग, देवप्रयाग तथा बिष्णुप्रयाग नामों से जाना जाता है। वैसे तो उत्तराखंड में बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री, जोशीमठ, जागेश्वर आदि प्रमुख धार्मिक एवं पर्यटक स्थल हैं। यहां स्थित पंच बदरी, पंच केदार के साथ ही पंच प्रयाग भी प्रसिद्ध है। यहां हम उत्तराखंड स्थित 5 प्रयागों के बारे में जानेंगे।

देवप्रयाग – हरिद्वार ऋषिकेश श्रीनगर मोटर मार्ग पर ऋषिकेश से 74 किमी दूरी पर मुख्य मोटर मार्ग पर स्थित है देवप्रयाग। माना जाता है कि देवप्रयाग का नाम देव शर्मा नामक ऋषि के नाम पर पड़ा। कहा जाता है कि ऋषि ने सतयुग में इस स्थान पर तपस्या की थी। उन्होंने भगवान से वर मांगा कि इस स्थान को तीर्थ के रूप में जाना जाए। किवदंती है कि भगवान राम ने रावण वध के बाद ब्रहमहत्या के पाप से बचने के लिए इस स्थान पर तपस्या की थी। यह स्थान टिहरी जनपद में स्थित है। यहां पर अलकनंदा तथा भागीरथी का संगम होता है। इसी स्थान से भागीरथी को गंगा के नाम से जाना जाता है। रघुनाथ मंदिर यहां का प्रसिद्ध मंदिर है। माना जाता है कि गोरखा शासन (सन् 1803-1815) में इस मंदिर का जीर्णोद्धार हुआ था।

रुद्रप्रयाग- देवप्रयाग से श्रीनगर की ओर चलने पर श्रीनगर के बाद रुद्रप्रयाग मुख्य मोटर मार्ग पर ऋषिकेश से 141 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह अलकनंदा तथा मंदाकिनी नदी के संगम पर स्थित है। यहां रुद्रनाथ का प्रसिद्ध मंदिर है। माना जाता है कि इस स्थान पर देवर्षि नारद ने भगवान शिव की कठिन तपस्या की थी। चमोली जिले के दो भाग करके रुद्रप्रयाग जनपद बनाया गया। केदारनाथ की यात्रा करने वाले लोगों को रुद्रप्रयाग से होकर जाना होता है।

कर्णप्रयाग- रुद्रप्रयाग से एक मार्ग केदारनाथ की ओर जाता है। दूसरा मार्ग बद्रीनाथ की ओर जाता है। रुद्रप्रयाग से बद्रीनाथ जाने वाली सड़क में रुद्रप्रयाग से गौचर होते हुए अगला स्टेशन कर्णप्रयाग होता है। यह ऋषिकेश से 173 किमी. दूरी पर स्थित है। कर्णप्रयाग अलकनंदा तथा पिंडर नदी के संगम पर स्थित है। माना जाता है कि प्राचीन समय में कर्ण ने इस स्थान पर सूर्य की उपासना की थी। मान्यता है कि सूर्य ने अपना अमोघ कवच कर्ण को इसी स्थान पर प्रदान किया। इस कारण यहां का नाम कर्णप्रयाग पड़ा। सन् 1808 में कैप्टन रीपर ने यहां एक मंदिर देखा। जिसमें कर्ण की मूर्ति स्थापित थी। माना जाता है कि कत्यूरी शासकों के शासन के समय यहां पर सूर्य मंदिर था। सन् 1894 में आई भयंकर बाढ़ में कर्णप्रयाग का सूर्य मंदिर बह गया। उस बाढ़ में कर्णप्रयाग का बहुत बड़ा भाग बह गया। कहते हैं कि उसके बाद कर्णेश्वर महादेव नाम से यहां पर मंदिर स्थापित हुआ। यह स्थान चमोली जनपद में स्थित है। यह उत्तराखंड की ग्रीष्मकालीन राजधानी गैरसैण के निकट है। हरिद्वार-ऋषिकेश-श्रीनगर व रुद्रप्रयाग होते हुए कर्णप्रयाग तक रेल लाइन निर्माण का कार्य द्रुतगति से चल रहा है।

नंदप्रयाग- कर्णप्रयाग बद्रीनाथ मोटर मार्ग पर कर्णप्रयाग से लगभग 20 किमी पर स्थित है नंदप्रयाग। यह स्थान अलकनंदा तथा मंदाकिनी के संगम पर स्थित है। कहा जाता है कि भगवान कृष्ण के पिता राजा नंद ने पुत्र प्राप्ति के लिए यहां तपस्या की थी। राजा नंद के नाम पर इस स्थान का नाम नंदप्रयाग पड़ा। इस स्थान को यदुवंश की राजधानी से भी जोड़ा जाता है। माना जाता है कि सन् 1894

में भयंकर बाढ़ के कारण इस क्षेत्र के मंदिर भी बह गए। बाद में मंदिर की स्थापना ऊंचाई पर की गई। किवदंती है कि रावण ने इसी स्थान पर कठिन तपस्या के बाद अपने दस सिर काटकर शिव को अर्पित किए थे। यह स्थान भी चमोली जनपद के अंतर्गत स्थित है।

बिष्णुप्रयाग-चमोली जनपद में जोशीमठ के समीप बिष्णुगंगा एवं धौली नदियों के संगम पर बसा है बिष्णुप्रयाग। माना जाता है कि नारद ने यहां पर भगवान बिष्णु की कठिन तपस्या की थी। यहां बिष्णु का बहुत प्राचीन मंदिर स्थित है।

उत्तराखंड स्थित पंचप्रयागों के दर्शन के लिए देश व विदेश से पर्यटक प्रतिवर्ष आते रहते हैं। पंचप्रयाग जाने के लिए हरिद्वार से बस एवं जीप सेवा उपलब्ध है।

●●●

RNII UTTHIN/2004/18604

वर्ष-17 अक्टूबर, 2021 - मार्च, 2022 अंक-04

संरक्षक : डॉ. सरस्वती बाली
डॉ. भैरूंलाल गर्ग
श्री नवीन पाठक
श्री विपिनचंद्र जोशी
डॉ. जे.एस. मेहता
श्रीमती मंजू पांडे 'उदिता'
श्री सुरेन्द्रसिंह नेगी
श्री मोहनलाल टम्टा
डॉ. सुनीता रतूड़ी
डॉ. आर.सी.रस्तोगी
डॉ. बी.पी. साह
श्री राजकुमार जैन 'राजन'
श्री के.पी.एस.अधिकारी
डॉ. सलमा जमाल
श्रीमती श्यामा माहेश्वरी
डॉ. दीपा कांडपाल
श्री रतनसिंह किरमोलिया
श्री नीरज पंत
श्री प्रकाश जोशी
सुश्री विनीता जोशी
श्रीमती विमला जोशी 'विभा'
डॉ. कामना सिंह
श्री महेन्द्र सिंह राणा
सुश्री प्रभा किरण जैन
सुश्री कमला मेनन
दीक्षा बिष्ट
डॉ.(मेजर) शक्ति राज
श्री दयानंद आर्य
श्रीमती पुष्पा पाल
श्री रविकांत खंडेलवाल
श्री संजय प्रजापति
श्री श्याम पलट पांडेय
श्रीमती नीमा पांडेय
श्री हेमचंद्र पंत
डॉ. डी. पी. चौधरी
श्री अरूण पंत
डॉ. आशा बिष्ट
श्रीमती मोहनी बाजपेयी
डॉ. ज्योति पांडे त्रिपाठी
श्रीमती माया पंत
श्री टी.वी.चंद्रा सुब्बा
डॉ. अशोक कुमार नेगी

संपादक : उदय किरौला
संपादकीय सहयोग: प्रमोद तिवारी, संतोष किरौला
मुखपृष्ठ/कला पक्ष : मोहिनी बाजपेयी
इंटरनेट संस्करण: वेद प्रकाश

संरक्षक सदस्यता	:	5,000 रु.
आजीवन सदस्यता	:	2,000 रु.
3 वर्ष का शुल्क	:	300 रु.
एक प्रति	:	25 रु.

बालप्रहरी खाता संख्या : 0962000101357002
आई.एफ.सी कोड : पी.यू.एन.बी. 0096200
बैंक नाम : पंजाब नेशनल बैंक, अल्मोड़ा

E-mail. : balprahri@gmail.com
Web.: www.balprahri.com
Face book- udai kiroula balprahri
Whats App - 9412162950

बच्चों के नाम पाती — 02
बच्चों की कलम से — 05

कहानी:
नन्हे सांताओं का कमाल — विजयकुमार खत्री — 21
सब्र की कीमत — हरीश कुमार 'अमित' — 27
नेकी का फल — रामेंद्र कुशवाहा — 33
मूक समझौता — डॉ. कुसुम रानी नैथानी — 36
लक्ष्मी — डॉ. जमुना कृष्ण राज — 38
गुणवान और प्रतिभावान — राधेलाल नवचक्र — 39
मेरे प्यारे दादाजी — नरेंद्र श्रीवास्तव — 43
मुट्ठी में जीवन — डॉ. रंजना जायसवाल — 45

कविता :
हाथी/सर्दी/प्रकृति — कैलाश त्रिपाठी/डॉ. वर्षा चौबे/मनमोहन गुप्ता — 19
कुमाउनी/गढ़वाली कविता — पवनेश ठकुराठी/डॉ.प्रीतम अपछ्याण — 20
अगर न होते/कुहरा/जलेबी — बलदाऊराम साहू/डॉ.विष्णु शास्त्री 'सरस'/पवन पहाड़िया — 26
कबूतर/तितली रानी/काली बिल्ली — डॉ.रामनिवास 'मानव'/डॉ. राकेश चक्र/राजा खुगशाल — 26
बर्फ/बच्चा/हाथी आया — विपिन जोशी/'कोमल'/अशोक पटेल/संगीता गुप्ता — 27
मेंढक/छुट्टी/मार्निंग वॉक — डॉ.दलजीत कौर/सुरेशचंद्र सर्वहारा/डॉ.त्रिलोकी सिंह — 32
आई दिवाली/हम बच्चे हैं — ज्ञान प्रकाश 'पीयूष'/भूपालसिंह अधिकारी — 41
चुहलबाजी/मनमानी/पोतू — डॉ. दिविक रमेश/कौशल पांडे/डॉ.प्रत्यूष गुलेरी — 44

जानकारी :
बालसाहित्य की थाती:शंभुलाल शर्मा 'बसंत' — नीरज पंत — 04
ऐसा क्यों होता है? — डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल — 23
थॉमस अल्वा एडिसन का बचपन — कृपालसिंह शीला — 28
आसमान में उड़ती परियां — गोवर्धन यादव — 29
बोलो देवीदा — देवेंद्र मेवाड़ी — 31
फरवरी माह के महत्वपूर्ण दिवस — गरिमा राना — 37
पर्यावरणविद् : सुंदरलाल बहुगुणा — गीता लालवानी — 42

प्रतियोगिताएं:
निबंध प्रतियोगिता-40 — 15
कविता प्रतियोगिता-69 — 16
कहानी लिखो प्रतियोगिता-69 — 18
सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता-69 — 47

अन्य :
आप कितने सूक्ष्मदर्शी हैं? — 15
चुटकुले/क्या आप जानते हैं? — 17
हंसना मना है — 30
वर्ण पहेली — 40
रंगों के नाम ढूंढो — 42
पुस्तक समीक्षा — 46
सुडोकू — 16
पहेलियां/अनमोल वचन — 19
खोजबीन — 35
रंग भरो — 41
अंक पहेली — 44
पुस्तक प्राप्ति — 48

बालसाहित्य संस्थान अल्मोड़ा की ओर से प्रकाशक/मुद्रक एवं संपादक उदय किरौला द्वारा प्रकाश पब्लिकेशन हल्द्वानी से मुद्रित तथा दरबारीनगर, पूर्वी पोखरखाली, अल्मोड़ा (उत्तराखंड) से प्रकाशित। संपादक - उदय किरौला

संपर्क : दरबारीनगर,अल्मोड़ा, उत्तराखंड-263601 मो.9412162950, 9557619107

बच्चों के नाम पाती

दोस्तो!

विवेक का चयन नवोदय विद्यालय में कक्षा 6 में हुआ था। प्रवेश का कल अंतिम दिन था। उसके पिताजी ने सारा सामान रात को ही रख लिया था। अब उसे स्कूल के छात्रावास में रहना था। सुबह सारे लोग जल्दी उठ गए। सबके मन में एक नई उमंग सी थी। विवेक तो बहुत खुश था। उसने अपने दोस्तों से छात्रावास के बारे में सुना था। वहां एक से एक नए दोस्त मिलेंगे। वह रात भर सपने भी छात्रावास के ही देख रहा था।

सुबह तैयार होकर विवेक अपने पिताजी के साथ निकल पड़ा। घर से मोटर मार्ग लगभग दो किलोमीटर दूर था। उसकी माताजी भी बड़ा सा बैग सिर पर रखकर पीछे से चल रही थी। वह भी सड़क तक विवेक को छोड़ने जा रही थी।

घर से कुछ ही दूर चले थे। एक बिल्ली रास्ता काट गई। विवेक की माताजी को तो जैसे सांप सूंघ गया। वह बोली, ''विवेक! बिल्ली ने रास्ता काट दिया है। जरूर कोई अपशकुन होने वाला है। हम लोग घर को चलते हैं। दूसरे दिन देखेंगे।''

विवेक के पिताजी ने समझाते हुए कहा, ''विवेक का नवोदय विद्यालय में एडमिशन होना है। कोई घर की खेती नहीं है। जब मन आ जाए,चले गए। मन नहीं लगा तो वापिस आ गए। यदि आज हम समय पर नहीं गए। तो प्रतीक्षा सूची वाले को प्रवेश मिल जाएगा। बाद में इसे प्रवेश नहीं मिल पाएगा।''

''हा! पापा ठीक कह रहे हैं माताजी।'' विवेक ने पिताजी की बात को आगे बढ़ाते हुए कहा।

''तुम कुछ भी कहो। मैं विवेक को नहीं भेजूंगी। ये तो ऐसा हो रहा है जैसे आ बैल मुझे मार।'' जब मुसीबत का पता है। तब नुकसान क्यों उठाना है। बिल्ली के काटने से अपशकुन हो गया। अब हम आगे नहीं जाऐंगे।'' विवेक की माताजी ने हठ करते हुए कहा।

बहुत देर तक माता-पिता की आपस में बहस होती रही। विवेक ने भी मां को समझाया। पर उसकी मां के आगे दोनों की दाल नहीं गली। तीनों सामान लेकर घर की ओर लौट गए।

रास्ते में गांव की अध्यापिका मनीषा जी मिल गई। वह अपने स्कूल जा रही थी। गांव के सारे बच्चे उन्हें 'मनीषा काकी' के नाम से पुकारते थे। वह भी बच्चों को बहुत प्यार करती थी। विवेक की माताजी ने सारी घटना मनीषा काकी को बता दी।

मनीषा काकी पहले तो हंसी। फिर उन्होंने कहा, ''आप बच्चे का भविष्य बरबाद न करें। नवोदय विद्यालय में तो बहुत मेहनत के बाद बच्चे का चयन होता है। आप इस अवसर को न गवाएं।'' विवेक की माताजी ने सुषमा जी से गांव की भाषा में बहुत ही सहज भाव से कहा, ''अरे भुलू! बिल्ली ने रास्ता काट दिया है। इस अपशकुन में विवेक को कैसे भेजें?''

मनीषा ने कहा, ''दीदी! आप भी कहां लकीर की फकीर बनी हो? पहले जमाने में आज की तरह यातायात के साधन नहीं थे। लोग पैदल ही जाते थे। रास्ते तंग थे। जंगल और झाड़ियों से होकर लोग एक स्थान से दूसरे स्थान को जाते थे। रास्ते में दूसरे जंगली जानवरों के डर से जब बिल्ली आगे को न चलकर दाएं या बाएं जाती थी। तो लोग समझते थे कि आगे खतरनाक जानवर हो सकता है। ऐसा सोचते हुए लोग थोड़ी देर अपनी यात्रा स्थगित कर देते थे। या रूककर जाते थे।''

अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए मनीषा ने कहा, ''दीदी! बगैर सोचे समझे पुरानी बातों पर यकीन करने को ही अंधविश्वास कहा जाता है। आज तो गांव के रास्ते बहुत चौड़े हो गए हैं। यातायात के साधन बढ़ गए हैं। अब सभी लोग पुरानी बातों पर एकदम से यकीन नहीं करते हैं। बच्चे भी क्या, क्यों व कैसे सवाल करते हुए बिल्ली के दाएं-बाएं जाने के कारण ढूंढते हैं।''

बात करते हुए मनीषा चाची ने विवेक की माताजी का बैग उठाते हुए कहा, ''आप मेरे साथ चलिए। बिल्कुल शंका मत कीजिएगा।'' सुषमा की बातों से सहमत होते हुए तीनों मोटर मार्ग की ओर चल पड़े।

विवेक की माताजी ने कहा, ''जी रयै रे मनीषा! आज तुमने हमारी आंखें खोल दी। अगर तुम न आती तो हम तो अभी घर पर होते।''

बातों-बात में सड़क आ गई। थोड़ी देर में बस भी आ गई। उसकी माताजी ने उसे गले लगाकर खूब पढ़ाई करने को कहा। विवेक अपने पिताजी के साथ बस में बैठकर चला गया। विवेक को स्कूल छोड़कर शाम को उसके पिताजी भी घर आ गए। अब मां खुश थी।

आपको कहानी कैसी लगी,,जरूर लिखना। तुम्हारे पत्र/फोन की प्रतीक्षा करूंगा। बालप्रहरी के बारे में भी लिखना।

- तुम्हारा दोस्त

उदय किरौला

मुझे बालप्रहरी पत्रिका बहुत पसंद है। इस बार मैंने अपने जन्म दिन के अवसर पर बालप्रहरी की संरक्षक सदस्यता 5000 रुपए भिजवा दी है। अब मुझे पत्रिका नियमित भिजवाते रहिएगा। मुझे बालप्रहरी की कविताएं तथा कहानियां अच्छी लगती हैं। चित्र में रंग भरो, चुटकुले, पहेलियां तथा अंतर बताओ मुझे बहुत पसंद हैं। यदि कहानियों में रंगीन चित्र हो जाते तो पत्रिका और भी सुंदर लगती। पिछले अंक में मोहिनी बाजपेयी जी के बनाए चित्र हमें अच्छे लगे। अच्छे चित्रों के लिए बधाई।

- मीमांसा भट्ट, कक्षा-4
रेनेसा नर्सरी एंड स्कूल गंगोलीहाट,पिथौरागढ़

★

मैं पिछले बहुत समय से बालप्रहरी की ऑनलाइन कार्यशालाओं से जुड़ी हूं। लॉकडाउन से ही हम लोग जब घर में ऊब गए थे। तब से बालप्रहरी की कार्यशाला से जुड़कर जहां हमारा मन लगा रहता है। वहीं अपनी अभिव्यक्ति का अवसर भी मिलता है। मुझे तथा मेरी बहन अदिति को बालप्रहरी की कार्यशाला में संचालन करने, अध्यक्ष तथा विशिष्ट अतिथि बनने का अवसर मिला है। साक्षात्कार कार्यक्रम के साथ ही वाद-विवाद की कार्यशाला रखी जाए। ऐसा मेरा सुझाव है।

- आयुषी श्रीवास्तवा, कक्षा-9
रा.बा.इं.कालेज जामौ, अमेठी,उ.प्र.

★

बालप्रहरी का जुलाई-सितंबर, 2021 अंक प्राप्त हुआ। उत्तराखंड की महत्वपूर्ण जानकारी देने के लिए आभार। बालप्रहरी में कहानी, कविता के अलावा विभिन्न प्रतियोगिताएं,पहेलियां तथा चुटकुले मुझे अच्छे लगते हैं। इसमें बच्चों की रचनाएं छपती हैं। मैं भी भेज रहा हूं।

- प्राची बहादुर, कक्षा-6
एम जी एम स्कूल राउरकेला,उड़ीसा

आपके पत्र

बालप्रहरी पत्रिका हमको साहित्यिक मंच उपलब्ध करा रही है। इसमें बच्चों की कविताएं तथा ड्राइंग प्रकाशित होती हैं। बालप्रहरी एक पत्रिका ही नहीं बच्चों के सर्वांगींण विकास का एक सशक्त मंच है। ऑनलाइन कार्यशालाओं के माध्यम से बच्चों में बोलने की कला का विकास हो रहा है। उन्हें मंच संचालन का अवसर मिल रहा है। हम जब कभी किसी मंच का संचालन करेंगे तो उस समय बालप्रहरी के ऑनलाइन कार्यक्रम को याद करेंगे। बालप्रहरी ऑनलाइन मंच के आदरणीय श्री आकाश सारस्वत जी उपनिदेशक शिक्षा विभाग उत्तराखंड, बालप्रहरी के संरक्षक श्री श्यामपलट पांडेय जी तथा दूसरे संरक्षक डॉ. अशोककुमार नेगी जी का भी मैं सभी बच्चों की ओर से आभार व्यक्त करता हूं। मैं कहना चाहूंगा कि सभी को बालप्रहरी की ऑनलाइन कार्यशालाओं से जुड़ना चाहिए।

- उत्कर्ष सती, कक्षा-6
दून अकादमी, जवाहरनगर,ऊधमसिंहनगर

★

बालप्रहरी के पिछले अंक में मेरी कविता ओर मेरी बहन सोनू की कविता छपी है। मुझे बहुत खुशी हुई। मैं आगे भी पत्रिका के लिए कविताएं भेजते रहूंगी। मेरी मम्मी मुझे बालप्रहरी की ऑनलाइन क्लास से भी जोड़ती है। पहले मुझे ऑनलाइन जुड़ने में झिझक होती थी। अब मेरा आत्मविश्वास बढ़ा है। एक बार मुझे ऑनलाइन कार्यशाला में अध्यक्ष बनने का भी अवसर मिला है। बालप्रहरी परिवार का आभार।

- आरती चौहान, कक्षा-5
राजकीय प्रा. विद्यालय कुणीधार, मानिला, अल्मोड़ा

मजबूरी

दिन दुगूनी रात चौगूनी,
गति से बढ़ रहा है कोरोना।
साबुन सेनेटाइजर से दोस्ती करो,
हाथ जरूर ही धोना।
छै गज दूरी मास्क जरूरी,
मूल मंत्र अपनाना है।
भीड़ भाड़ वाली जगहों से,
अपना पीछा छुड़ाना है।
जन-जन को जागरूक करना,
है बहुत ही आज जरूरी।
घर से बाहर तभी निकलें,
जब हो बहुत मजबूरी।

- अक्षरा भट्ट, कक्षा-11
कुर्मांचल अकादमी अल्मोड़ा

मेरे पापा

ओ कोरोना ओ कोरोना,
बता कहां से तेरा आना।
सही बता तू अपना ठिकाना,
रहता कहां है तू कोरोना।
करना है अब तेरा सफाया,
आखिर तेरा काल जो आया।
मास्क दोस्त बन गया हमारा,
सेनेटाइजर आ गया है सारा।
कोरोना तूझे हम भगाएंगे,
तेरा राज सभी को बताएंगे।
कोरोना से नहीं डरना है,
बस सबको बचाव करना है।

- चैतन्य बिष्ट, कक्षा-7
आर्मी पब्लिक स्कूल अल्मोड़ा

कोरोना

हम सबको मिलकर,
कोरोना को भगाना है।
न जाएं भीड़-भाड़ में,
लोगों को समझाना है।
बचाव ही ईलाज है,
यह सबको बताना है।
डरें नहीं बचाव करें,
ये सबको समझाना है।

- अर्जरागिनी सारस्वत, कक्षा-7
प्रिल्यू 121 ड पब्लिक स्कूल आगरा,उ.प्र.

बालसाहित्यकार : शंभुलाल शर्मा 'बसंत'

प्रख्यात बालसाहित्यकार शंभुलाल शर्मा का जन्म 11 अप्रैल, 1948 को रायगढ़,छत्तीसगढ़ में हुआ। 'मामा जी की अमराई' तथा 'चंदा मामा के आंगन में' सहित उनकी लगभग 15 पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। 'बालप्रहरी' सहित देश की प्रसिद्ध बाल पत्रिकाओं में उनकी रचनाएं प्रकाशित हुई हैं। मई,2021 में उनका निंधन हो गया। बालसाहित्य के पुरोधा को शत-शत नमन। यहां उनकी कुछ रचनाएं दी जा रही हैं।

-संपादक

मैना की शादी

अमराई तो खूब सजी है
मैना की है शादी,
इसीलिए तो बगिया-बगिया
कोयल करे मुनादीं।
पड़की, सुग्गा, श्यामा बुलबुल
इस से एक चिरैया,
हंस-हंस मैना से बतियाएं
संग में है गौरैया।
चू-चू, चीं-चीं, कूं-कूं कितने
स्वर में गाएं बढ़िया,
ताक धिना-धिन, फुदक-फुदककर
नाच रहीं हैं चिड़िया।
डाल-डाल हर पात सजा है
मौसम है सुखदाई,
शादी के दिन मैना रानी
मन ही मन सकुचाई।
सोच रही है मैना क्या-क्या,
हुई शर्म से लाल,
मुझे बता दे कोई-
कैसी होती है ससुराल।

मेरा रोबोट

लंदन वाले चाचू जी से,
मिला मुझे उपहार।
एक खिलौना जन्म दिवस पर,
बढ़िया सा इक बार।
बटन दबाते ही झटपट,
वह ऐसा करे कमाल।
'हाय हलो' कह बड़े प्यार से,
पूछे सबका हाल।
अपना परिचय भी देता है,
बतला कर वह नाम।
नए जमाने का रोबोट,
करे गजब का काम।

शिशु गीत

कितना आता मजा अगर,
हम भी होते जादूगर।
अपने जादू के बल से,
उड़ जाते इस भूतल से।
चंदा के घर हम जाते,
मामा जी हैं कहलाते।
और वहां की बुढ़िया से,
बतियाकर हम बढ़िया से।
इक-दो किस्से सुन आते,
तारे भी कुछ चुन लाते।

शेरू की सभा

बीच सभा में बोल रहे थे,
शेरू जी एक बार।
जंगल से हैं लाभ हमें,
क्या इस पर करें विचार।
हाथी उठकर सूंड हिलाते,
बोला वह 'श्रीमान'
जंगल पर ही तो निर्भर है,
अपना सकल जहान।
कंद मूल,फल,जड़ी-बूटियां,
देता यह भरपूर।
पास बुलाता है बादल को,
रहते हैं जो दूर।
शुद्ध हवा ऊपर से देकर,
सदा लुटाता प्यार।
इसीलिए तो मेरे मत से,
हो इसका विस्तार।
सहमत हुए सभी पशु-पक्षी,
सुन हाथी की बात।
हरा-भरा जंगल ही सचमुच,
खुशियों की सौगात।

संकलन : नीरज पंत, अल्मोड़ा

बालप्रहरी की ऑनलाइन गतिविधियों से जुड़ने के लिए संपर्क करें

बालप्रहरी पत्रिका प्रकाशन के साथ ही बालप्रहरी एवं बालसाहित्य संस्थान अल्मोड़ा द्वारा कोरोना काल में बच्चों के लिए ऑनलाइन गतिविधियां भी आयोजित की जा रही हैं। जो बच्चे कविता या ड्राइंग में रुचि रखते हैं। वे बालप्रहरी में नि:शुल्क प्रकाशन के लिए ड्राइंग/कविता/यात्रा वृतांत आदि भिजवा सकते हैं।

बालप्रहरी की ऑनलाइन कार्यशालाओं में बच्चों के लिए कविता वाचन/कहानी वाचन/ पत्र वाचन/आत्मकथा वाचन/ बाल कवि सम्मेलन/त्वरित भाषण/ लोक कथा वाचन/ लोक गीत गायन/देश भक्ति गीत गायन/नृत्य तथा चित्रकला की कार्यशालाएं आयोजित की जा रहीं हैं। इच्छुक बच्चे वाट्सअप नंबर 9412162950 को अपने मोबाइल पर सेव करके गतिविधियों/बालप्रहरी समूह से जुड़ने की सहमति दे सकते हैं। ऑनलाइन कार्यशालाओं में जुड़ने वाले बच्चों को ऑनलाइन प्रशस्ति पत्र समूह के माध्यम से दिए जाने का प्रावधान भी किया गया है। अधिक जानकारी के लिए मोबाइल नंबर 9412162950 पर संपर्क किया जा सकता है।

- संपादक

बच्चों की कलम से:

सर्दी

सर्दी आई सर्दी आई,
निकल गए कंबल रजाई।
ऊंचे पहाड़ में बर्फ पड़ी,
घर में भी तो ठंड बढ़ी।
छिपा सूरज बादल के पीछे,
दुबके सब रजाई खींचे।
अब तो हो रहा है जाड़ा,
गरमा गरम पीओ सब काढ़ा।

– वर्णिका जोशी, कक्षा-6
केंद्रीय विद्यालय नौएडा,उ.प्र.

मेरा स्कूल

कितना सुंदर है स्कूल,
रंग बिरंगे खिले हैं फूल।
फुल सुहाने सब को भाते,
देख उन्हें सब ललचाते।
टीचर हमको पाठ पढ़ाती,
नई-नई बातें रोज बताती।
फलों से गिनती करवाती,
टॉफी देकर हमें समझाती।

– मानसी रावत, कक्षा-5
खष्टी देवी इंटर कालेज हल्द्वानी

फूल

हरदम हंसते रहते फूल,
पेड़ों की तो शान हैं फूल।
तितली को हर्षाते फूल,
खुशबू हमको देते फूल।
कांटों संग रहते हैं फूल,
भेदभाव न करते फूल।
पर्यावरण स्वच्छ रखते फूल,
हम सब भी लगाएं फूल।

– चिन्मयी शर्मा, कक्षा-5
शंकरदेव वि.निकेतन ,पुरणिगुदाम,नगांव, असम

रेडियोग्राफी दिवस

सामान्यतया जब हम बीमार होते हैं। डॉक्टर के पास जाते हैं। तब डॉक्टर हमारी बीमारी के लक्षण के अनुसार हमें दवा देते हैं। अधिकतर मामलों में हम ठीक भी हो जाते हैं। कई मामलों में डॉक्टर हमें टेस्ट करवाने की सलाह देते हैं। ब्लड टेस्ट, यूरिन टेस्ट, सुगर टेस्ट आदि। कई बार हड्डियों के टूटने या अंदरूनी जांच के लिए डॉक्टर एक्सरे करवाने की सलाह देते हैं। एक्सरे मशीन से शरीर के अंदरी भाग में टूटी हड्डियों का पता लग जाता है। उसी के अनुसार डॉक्टर मरीज का ईलाज करते हैं।

एक्सरे यानी एक्स रेडिएशन की खोज 8 नवंबर,1895 को जर्मन वैज्ञानिक विल्हेम कोनराड रोंटजेन ने की थी। उनकी इस खोज पर सन् 1901 में विल्हेम को फीजिक्स का नोबल पुरस्कार भी मिला था।

किसी भी गंभीर बीमारी का पता एक्स रे से लग जाता है। यूरोपियन सोसाइटी आफ रेडियोलॉजी, रेडियो-लॉजिकल सोसाइटी आफ अमेरिका तथा अमेरिका कॉलेज आफ रेडियोलॉजी की पहल पर सन् 2012 में पहली बार रेडियोग्राफी दिवस यानी एक्सरे दिवस मनाया गया। तब से हर साल 8 नवंबर को समूचे विश्व में 8 नवंबर को रेडियोग्राफी दिवस मनाया जाता है। इस दिवस पर लोगों को जागरूक करने के लिए कई कार्यक्रम चलाए जाते हैं।

– प्रांजलि लोहनी, कक्षा-9
होली विसडम स्कूल चंपावत

मेरी बिल्ली

मेरी बिल्ली प्यारी बिल्ली,
चंकी है इसका नाम।
दोस्त भी मेरी ये,
पर बढ़ाती मेरा काम।
कभी दौड़ती पोज बनाती,
दूध मांगने पास ये आती।
चूहे सारे हजम कर जाए,
चिड़िया को भी ये खा जाती।

– पल्लवी त्रिपाठी, कक्षा-8
कुमाऊं पब्लिक स्कूल द्वाराहाट,अल्मोड़ा

मेरा भाई

जब से तू आया है भाई,
मेरे जीवन में बहार है आई।
बहुत सुंदर है मेरा भाई,
कहती है ये मेरी माई।
भाई का रखूंगी ध्यान,
तभी मिलेगा मुझे सम्मान।
मेरा भैया मेरी आन,
उससे ही है मेरी शान।

– तनीषा आर्या, कक्षा-7
रा.कन्या जू.हा.जैनोली, रानीखेत

मां

मां! जब तेरे आंगन में आई,
मैंने प्यारी सी दुनिया पाई।
आंचल में छुप जाती थी,
सुरक्षित अपने को पाती थी।
हाथ थामकर चलना सिखाया,
हमेशा साहस तुमसे पाया।
मां होती है पालनहार,
प्रणाम करूं मैं बारंबार।

– लावन्या आर्या, कक्षा-6
कुमाऊं पब्लिक स्कूल द्वाराहाट, अल्मोड़ा

बच्चों की कलम से :

फूल

कांटों संग करें दोस्ती,
फूल की पहचान है।
सबको जो अपना बना ले,
मिलता उसे ही मान है।
घर आंगन महकाते फूल,
हम सब फूल लगाएं।
फूलों से हम भी सीखें,
फूलों सा हम भी मुस्काएं।

– अनेरी पोद्दार, कक्षा-5
मेडिकेप्स इंटरनेशनल स्कूल इंदौर, म.प्र.

नारी

कोमल है पर कमजोर नही,
शक्ति का नाम ही नारी है।
जग को जीवन देने वाली,
हर संकट में तू भारी है।
दो परिवारों को संवारती,
जग में नारी महान है।
कहां नहीं हैं आज नारियां,
बस करना उनका सम्मान है।

– चित्रांशी लोहनी, कक्षा-5
माउंट कार्मल स्कूल चंपावत

सूरज

आसमान में सूरज दादा,
रोज ही आ जाते हैं।
बचपन से देखते तुमको,
अपने संग ही पाते हैं।
गरमी में डरते तुमसे,
जाड़े में प्यार करते हैं।
जाड़े में तुम भगवान,
गरमी में तुमसे डरते हैं।

– जाह्नवी मठपाल, कक्षा-6
कुमाऊं पब्लिक स्कूल द्वाराहाट,अल्मोड़ा

बादल

ठंडे के दिन आए हैं,
घने बादल ये छाए हैं।
दिखता सूरज कभी-कभी,
ठंड से कांप रहे सभी।
बादल सूरज पर भारी है,
समझो अत्याचारी है।
बादल दादा हट जाओ,
बच्चों के प्यारे बन जाओ।

– संजना आर्या, कक्षा-8
सरस्वती शिशु मंदिर झुपुलचौरा,अल्मोड़ा

मेरे दादा

कहानी हमको रोज सुनाते,
मेरे दादा सबसे अच्छे।
अच्छी-अच्छी बात बताते,
खुश रहते उनसे सब बच्चे।
दादा का सम्मान करें हम,
इससे हमें मिलेगा मान।
मेरे दादा सचमुच में,
मेरे पूरे घर की शान।

– अर्पित चतुर्वेदी, कक्षा-4
मल्लिकार्जुन स्कूल चंपावत

सूरज

जाड़े से हमें बचाने,
सूरज दादा रोज आते हैं।
क्या अमीर क्या गरीब,
सबके पास जाते हैं।
बादल तो अपना दुशमन,
उससे हम सब डरते हैं।
जाड़े में बादल न आए,
हम यही कामना करते हैं।

– प्रेरणा पुरोहित, कक्षा-5
राजकीय प्रा. विद्यालय मंगरोली,चमोली

मेरा गांव

मेरे गांव का नाम लिस्वाल्टा बांगर है। यह उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जनपद में स्थित है। पहाड़ की ऊंची चोटी पर स्थित मेरे गांव का प्राकृतिक दृश्य बहुत ही मनोहारी है। यह हिमालय की गोद में स्थित कल-कल बहती छयकुंडा नदी के पावन तट पर स्थित है।

मेरे गांव में लगभग 120 परिवार हैं। वर्तमान में यहां लगभग 800 लोग निवास करते हैं। अधिकतर घर पत्थर से बने हैं। परंतु अब लोग सीमेंट के घर बना रहे हैं। लगभग सभी लोग खेती करते हैं। अधिकतर घरों में लोगों ने गाय व भेंस पाली हैं। सभी अपने घर के समीप क्यारी बनाकर सब्जी उगाते हैं।

खलियान बांगर, रणधार बांगर, कोटबांगर, पूलन बांगर मेरे गांव के समीपवर्ती गांव हैं। मेरे गांव में दो विद्यालय हैं। बड़ी क्लास के बच्चे समीपवर्ती राजकीय इंटर कालेज कोटबांगर में पढ़ने के लिए जाते हैं।

मेरे गांवों में देवी-देवताओं के कई मंदिर हैं। कुछ मंदिर में सारे गांव वालों द्वारा पूजा की जाती है तो कुछ मंदिर निश्चित परिवारों के अपने होते हैं। सार्वजनिक मंदिरों की पूजा में गांव के लोग शामिल होते हैं। बड़े आयोजन में गांव से बाहर रह रहे प्रवासी भी शामिल होते हैं।

गांव में बगड़ नाम का फील्ड यानी मैदान तैयार हो रहा है। बच्चे छुट्टियों में सामूहिक तौर पर खेलते हैं। हमारे लिए खुशी की बात है कि हमारे गांव का एक लड़का नीट की परीक्षा देकर डॉक्टरी कोर्स कर रहा है।

– शिवांशु रावत, कक्षा-9
रा.इ.का.कोटबांगर,रुद्रप्रयाग

बच्चों की कलम से :

क्रिसमस

क्रिसमस का आया त्यौहार,
सबके लिए लाया उपहार।
रहेंगे सारे बच्चे फ्री,
मिलकर बनाएं क्रिसमस ट्री।
क्रिसमस पर खाएं पकवान,
सभी धर्मों का रखो मान।
शिशु ईशु के गाएं गीत,
क्रिसमस पर प्यारा संगीत।

-एकांशा पंत, कक्षा-4
गगन पब्लिक स्कूल नौएडा,उ.प्र.

त्यौहारों में क्रिसमस,
हम बच्चों को भाता है।
अपनी झोली से निकालकर,
कोई उपहार हमें दे जाता है।
शांताक्लाज जी हम बच्चों को,
उपहार देकर जाते हैं।
दयालु ईशु को हम सभी,
प्रेम से हार पहनाते हैं।

- प्रियांशी, कक्षा-7
राजकीय उ.प्रा.विद्यालय गुमखाल, पौड़ी

दिसंबर में हर वर्ष,
क्रिसमस का त्यौहार आता।
सबको मिलते हैं उपहार,
बच्चों को तो खूब भाता।
शांता क्लाज को देखकर,
बच्चे खुश हो जाते हैं।
करते हैं सब मस्ती,
जब उपहार ये पाते हैं।

- प्रतिष्ठा जोशी, कक्षा-3
राजकीय आ.प्रा.विद्यालय पिंगलों, बागेश्वर

क्रिसमस का त्यौहार है आया,
शांता सबके मन को भाया।
करते सब उसका इंतजार,
सबको देगा वह उपहार।
बच्चे सजाएं क्रिसमस ट्री,
उपहार मिलेंगे उन्हें फ्री।
एकता सम्मान और भाईचारा,
हम सबका हो बस एक ही नारा।

- प्रखर बहुगुणा, कक्षा-7
टच वुड स्कूल, सहस्त्रधारा रोड, देहरादून

क्रिसमस डे

हरे-भरे क्रिसमस ट्री,
लाइट से जगमगाते हैं।
सेंटाक्लाज के तोहफों से,
बच्चे खुश हो जाते हैं।
भाई चारे के संग बढ़ें हम,
गरीबों का सम्मान करें।
उपहार देते सब बच्चों को,
सीखें जग में दान करें।
छोटी-छोटी खुशियां होंगी,
बच्चों के चेहरे पर जब।
गरीबी तब नहीं रहेगी,
घर आंगन महकेंगे तब।

- मानसी टम्टा, कक्षा 9
राजकीय इंटर कालेज बनमस्वाल,अल्मोड़ा

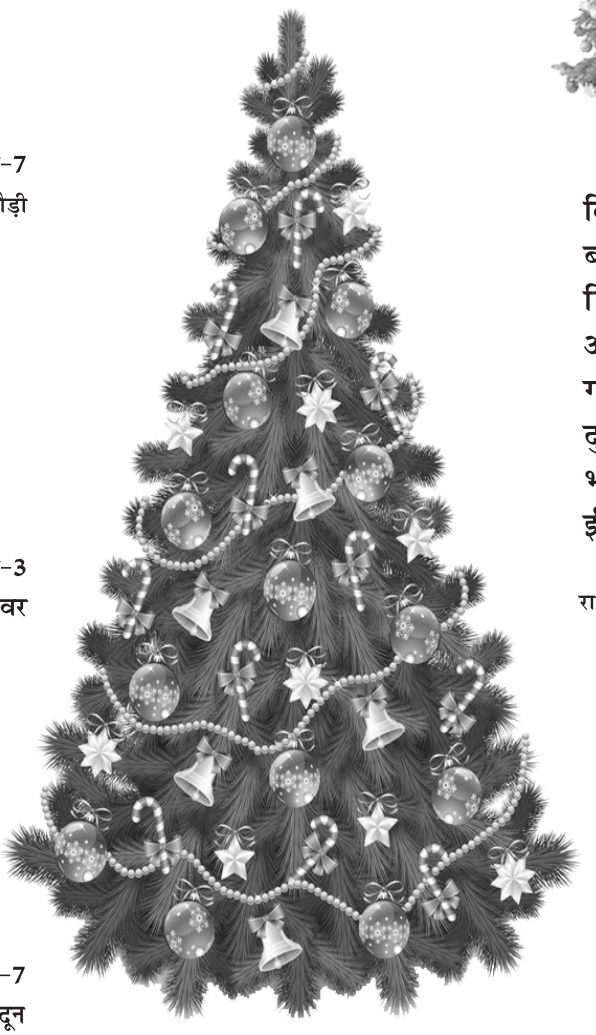

क्रिसमस डे

ठंडी-ठंडी हवाओं में,
कोई मैरी क्रिसमस गाता है।
हर बार थैली भरकर,
वह उपहार लेकर आता है।
जो बच्चों को करता प्यार,
क्रिसमिस ट्री लेकर आता है।
दिसंबर पच्चीस को आता वह,
शांता क्लाज कहलाता है।

- वैष्णवी पाल, कक्षा-4
रा.प्रा.विद्यालय देवलचौड़, हल्द्वानी

क्रिसमस

क्रिसमस आया क्रिसमस आया,
बच्चों के उपहार है लाया।
क्रिसमिस ट्री हम लगाएं,
अपना उपहार हम पाएं।
गरीबों को खुशिया दिलाएं,
दुखी जनों के काम वे आएं।
भाईचारा हम सब बनाएं,
ईशु को हम हार पहनाएं।

- शिवानी सैनी, कक्षा-7
रा.आ.उ.प्रा.विद्यालय वरहैनी,बाजपुर,ऊधमसिंहनगर

ईशु का जन्म दिन है आया,
क्रिसमिस टी हमने सजाया।
रिबन गिफ्ट घंटी लटकाया,
पर बच्चों को केक ही भाया।
शांता क्लाज ने लटकाई थैली,
देख बच्चों की आंखें फैली।
बांटें सबको उनका उपहार,
आया क्रिसमस का त्यौहार।

- ओजस्वी, कक्षा-4
जे आर एस पब्लिक स्कूल गौरीगंज,अमेठी,उ.प्र.

बच्चों की कलम से :

दूध

बचपन में मां हमारी,
हमको दूध पिलाती है।
बच्चा स्वस्थ रहे,
ऐसा जतन कराती है।
दूध होता पूरा आहार,
हम सब दूध पीया करें।
मिलती है इससे ताकत,
ये बात समझा करें।

- शीतल नेगी, कक्षा-8
राजकीय इंटर कालेज नौकुचियाताल,नैनीताल

स्वच्छ भारत

कूड़ा कूड़ेदान में डालें,
सबको ये बताएंगे।
हाथ साबुन से धोएं सब,
ऐसा अभियान चलाएगे।
रोगों की जड़ गंदगी,
सभी को ये बताएंगे।
स्वच्छ हो अपना भारत,
स्वच्छता अभियान चलाएंगे।

- कमल कुमार, कक्षा-9
जवाहर नवोदय विद्यालय चंपावत

गुड़िया

मेरी गुड़िया प्यारी गुड़िया,
सबके मन को भाती है।
बिल्कुल भी काम करे न,
मुझको बहुत सताती है।
आंखें नीली साड़ी पीली,
अपने साथ सुलाती हूं।
गाल हैं इसके गोरे-गोरे,
इस पर मन बहलाती हूं।

- कामाक्षी मठपाल, कक्षा-6
कुमाऊं पब्लिक स्कूल मल्ली मिरई,द्वाराहाट

यादगार घटना

यह बात तब की है। जब हम भीमताल में रहते थे। तब शायद मैं 11 साल की रही होंगी। मैं अपने दोस्तों के संग खेल रही थी। वहां मैं तथा मेरे साथी सीढ़ियों से कूदते। सीढ़ियों से चढ़ने और कूदने का अपना अलग मजा था। हम लोग रोज ही सीढ़ियों से चढ़ते और ऊंची सीढ़ियों से कूद मारते।

एक दिन सीढ़ियों से मेरा पैर अचानक फिसल गया। मैं गिर गई। ईश्वर को लाख-लाख धन्यवाद। मैं उस दिन ऊंची सीढ़ी से नहीं गिरी। वरना आज मैं जीवित नहीं होती। सीढ़ियों से गिरने पर मुझे बहुत चोट आई। हाथ पांव में तो लगी ही। मेरे मुंह का दांत टूटने वाला हो गया। मैं बहुत रोई। किसी ने मुझे नहीं उठाया। थोड़ी देर में एक आंटी आई। आंटी ने मुझे जमीन से उठाकर बैठाया। मुझे पानी से कुल्ला कराया।

मेरे मुंह से लगातार खून निकल रहा था। खून रुकने का नाम नहीं ले रहा था। उस आंटी ने मेरे पापा को फोन करके बुलाया। तब पापा ने चाचा को बुलाया। चाचा कार लेकर आए। मुझे दांत के डॉक्टर के पास ले गए। जब डॉक्टर मेरा ईलाज कर रहे थे। शायद मुझे होश नहीं था। बाद में डॉक्टर ने मेरे दांतों में तार लगा दिए। मेरे हाथ पर भी पट्टी बंधी थी। कुछ दिन तक डॉक्टर ने मुझे दवा खाने को कहा। कुछ दिन में मैं ठीक हो गई।

मैं जब भी उस दिन को याद करती हूं। मेरी रूंह कांप उठती है।

- ज्योति आर्या, कक्षा-9
राजकीय इंटर कालेज नौकुचियाताल,नैनीताल

असफलता

मैदान में हारा हुआ,
खिलाड़ी जीत सकता है।
लक्ष्य भेदने की सोचो,
हर कोई सफल हो सकता है।
जो सफल नहीं हो पाते,
वे बहाना ढूंढते हैं।
समझदार व मेहनती लोग,
असफलता का कारण ढूंढते हैं।

- अदीबा, कक्षा-8
कंट्रीवाइड पब्लिक स्कूल सोमेश्वर,अल्मोड़ा

अनुशासन

अनुशासन में सब रहें,
यह देश को महान बनाता है।
जो रहता अनुशासन में,
वहीं सफल हो पाता है।
हमारे स्कूल का अनुशासन,
सब बच्चों को भाता है।
स्कूल का मान बढ़ाने को,
हर बच्चा समय पर आता है।

- रिया, कक्षा-8
राजकीय इंटर कालेज कोटबांगर,रुद्रप्रयाग

पानी

पानी है अनमोल,
पानी हमें बचाना है।
पेड़ों से मिलता पानी,
हमको पेड़ लगाना है।
पेड़ पानी के भंडार,
सबको ये बताना है।
पेड़ लगाओ पेड़ बचाओ,
ये सबको समझाना है।

- उर्वशी सेमवाल, कक्षा-8
रा.इ.का.कोटबांगर,रुद्रप्रयाग

बच्चे

हम नन्हे से बच्चे हैं,
दिल के साफ सच्चे हैं।
सबको प्रणाम हम करते हैं,
गलत काम से डरते हैं।

- कोमल जोशी, कक्षा-2
यूनिवर्सल इंटर कालेज, चंपावत

बच्चों की कलम से :

वर्षा

वर्षा जब भी आती है,
सारे खेत लहराते हैं।
धरती में होती हरियाली,
बच्चे खुश हो जाते हैं।
जाड़ै की बारिश तो,
ठंड से हमें रूलाती है।
अकड़ जाते हैं हाथ-पांव,
नानी याद आ जाती है।

- मीनाक्षी आर्या, कक्षा-6
राजकीय इंटर कालेज कौसानी, बागेश्वर

मोबाइल

मोबाइल का आया जमाना,
बच्चे इससे बिगड़ रहे हैं।
कोरोना के दौर में बच्चे,
मोबाइल से पढ़ रहे हैं।
मोबाइल पर चिपके रहने से,
आंखें खराब हो जाती हैं।
केवल पढ़ाई में काम लाओ,
हमारी मैम जी बताती हैं।

- गौरव सनवाल, कक्षा-7
सिटी कांवेंट स्कूल खटीमा,ऊधमसिंहनगर

बहिन

भाई बहन का रिश्ता,
जग में एक अनूठा है।
बहना फिर भी प्यार करे,
अगर भाई यूं रूठा है।
भाई बहन के प्यार का बंधन,
रक्षा बंधन कहलाता है।
राखी बांधने का त्यौहार,
हर साल जरूर आता है।

- यमन साहू, कक्षा-10
शासकीय उ.मा.विद्यालय घोटिया, छत्तीसगढ़

हमारा खटीमा

खटीमा उत्तराखंड के ऊधमसिंहनगर जनपद का नगर है। यह नेपाल की सीमा और उत्तर प्रदेश के पीलीभीत जनपद की सीमा से जुड़ा है। यहां से कुछ ही दूरी पर नेपाल देश की सीमा है। नानकमत्ता, पूर्णागिरी के साथ ही नेपाल की सीमा से सटा होने के कारण यहां पर्यटकों का आना-जाना रहता है। इस क्षेत्र में थारू जनजाति के लोग अधिक रहते हैं। यहां पहाड़ के विभिन्न जनपदों से भी आकर लोग बस गए हैं। यहां पर पालीप्लेक्स, एस्टर तथा खटीमा फाइबर्स आदि कारखाने भी हैं। लोहियाहेड में शारदा नदी पर पन बिजली का एक पावर हाऊस है। खटीमा, दिल्ली, देहरादून, बरेली आदि प्रमुख स्थानों से सीधे बस सेवा से जुड़ा है। यहां से पीलीभीत तथा टनकपुर के लिए रेल सेवा भी उपलब्ध है। निकटतम हवाई अड्डा पंतनगर है। यहां शिक्षा एवं स्वास्थ्य की पर्याप्त सुविधाएं हैं। मेरा मन करता है कि देश के स्वच्छ नगरों की तरह हमारा खटीमा भी साफ-सुथरा रहे।

राणा प्रताप इंटर कालेज खटीमा में 1 से 5 जनवरी तक बालप्रहरी की कार्यशाला हुई। इस कार्यशाला में मैंने भी अपनी हस्तलिखित पुस्तक तैयार की।

- आरूषी सिंह, कक्षा-6
राजकीय उच्च प्राथमिक स्कूल उमरूखुर्द,खटीमा

तिरंगा

हमारा तिरंगा बड़ा महान,
ये है भारत देश की शान।
तीन रंगों में इसकी जान,
चक्र से मिले चलने का ज्ञान।
हमारा तिरंगा बहुत ही प्यारा,
तिरंगा अपना राजदुलारा।
बढ़ाएंगे हम इसका मान,
ये है भारत देश की आन।

- पाखी जैन, कक्षा-4
मिकाडो इंटरनेशनल स्कूल उदयपुर,राजस्थान

मां

बच्चा पहला शब्द पुकारे,
वह शब्द है मां।
बच्चा जिसको पहले देखता,
वह मूरत है मां।
उंगली पकड़ चलना सिखाए,
वह सूरत है मां।
पहला निवाला वह खिलाए,
सुख-दुख की भागीदार है मां।
खुद रोकर हमें हंसाए,
प्यारी प्यारी होती मां।
बुढापे में न मिले सहारा,
घर से निकाली जाती मां।

- दिया, कक्षा 8
सावन पब्लिक स्कूल सिरसा, हरियाणा

स्वच्छता

स्वच्छता के रखवाले,
हम स्वच्छता अभियान चलाएंगे।
स्वास्थ्य व स्वच्छता का,
संबंध सभी को बताएंगे।
रखवाले हम भारत के,
भारत को स्वच्छ बनाएंगे।
भारत अपना स्वच्छ रहे,
हम स्वच्छता अभियान चलाएंगे।

- कुनाल कुमार, कक्षा-8
रा.उ.प्रा.वि.बिजरौली,नौकुचियाताल,नैनीताल

सूरज

ठंड बहुत बढ़ गई है,
सूरज दादा जल्दी आना।
सुबह सवेरे जल्दी आकर,
ठंड से तुम हमें बचाना।
अपनी किरणें फैलाकर,
सबको गरमी दे जाना।
मेरे दादा सूरज दादा,
जाड़े में तुम जल्दी आना।

-उत्कर्ष सती, कक्षा 6
दून अकादमी पंतनगर,ऊधमसिंहनगर

बच्चों की कलम से :

पुस्तक

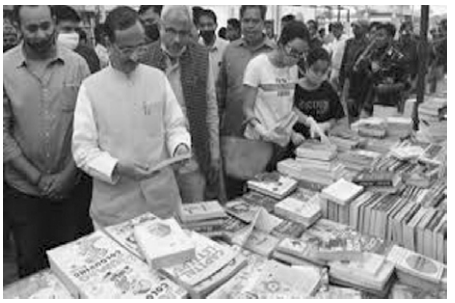

ज्ञान की भंडार है पुस्तक,
हमारा बढ़ाती है ये ज्ञान।
सम्मान पुस्तक का जो करे,
पुस्तक देती उसको मान।
सच में दोस्त होती पुस्तक,
दोस्त का हम रखें मान।
अपमान न हो पुस्तक का,
हमको रखना है ये ध्यान।

– पूर्णिमा कबडवाल, कक्षा-10
कुमाऊं पब्लिक स्कूल द्वाराहाट,अल्मोड़ा

बिजली की बरबादी

कूलर पंखे का करो उपयोग,
पर बिजली भी हमें बचानी है।
जरूरत न हो बंद कर दो,
ये बात सब को बतानी है।
बिजली बचाओ देश बढ़ाओ,
यही हमारा नारा है।
बरबादी न हो बिजली की,
यही कर्तव्य हमारा है।

– दीपक मौर्या, कक्षा-7
सरस्वती वि.मं.इं.कालेज खटीमा

कोरोना

कोरोना से डरें नहीं,
बस सावधानी जरूरी है।
मास्क सेनेटाइजर व साबुन,
बस हाथ धोना जरूरी है।
वैक्सीन सब जरूर लगाएं,
सुई से तुम डरो ना।
सावधानी यदि रखोगे,
दूर जाएगा कोरोना।

– हर्षित जोशी, कक्षा 7
डायनेस्टी माडर्न गुरूकुल एकैडमी, खटीमा

नेशनल कैडेट कोर

एन.सी.सी. का फुल फार्म है- NATIONAL CADET CORPS यानी नेशनल कैडेट कोर। एन.सी.सी. में स्कूल और कालेज के छात्रों को सेना, नौसेना तथा वायु सेना के लिए उपयुक्त सैन्य प्रशिक्षण प्रदान किया जाता हैं। एन.सी. सी. समूचे विश्व का सबसे बड़ा वर्दीधारी संगठन है। एन.सी.सी. की स्थापना 16 अप्रैल,1948 को हुई थी। इसका आदर्श वाक्य है-एकता और अनुशासन। यह संगठन कहीं न कहीं युवाओं को रक्षा के तौर तरीकों की जानकारी के साथ ही उनमें नेतृत्व की भावना भी जाग्रत करता है। एन.सी.सी. का मुख्यालय दिल्ली में है। यह संगठन भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय से संबंधित होता है। राज्य स्तर पर भी एन.सी.सी. निदेशालय होता है। जो कि राज्य के सरकारी तथा गैर स्कूलों में एन.सी.सी. की यूनिट स्थापित करने के लिए कार्य करता है।

एन.सी.सी.के झंडे में तीन रंग होते हैं। थल सेना के लिए लाल, नौ सेना के लिए गहरा नीला तथा वायु सेना के लिए हल्का नीला रंग। अलग-अलग संस्थानों में एन.सी.सी. थल सेना, वायु सेना तथा नौ सेना अलग-अलग तौर पर स्थापित होती है। थल सेना से संबंधित एन.सी.सी कैडेट की वर्दी खाकी, वायु सेना की हल्की नीली तथा नौ सेना की वर्दी सफेद होती है। यह मुख्यतया 3 वर्ष का कोर्स होता है। जूनियर डिवीजन के छात्रों/कैडेट को 2 साल की ट्रेनिंग पूरी करने पर 'ए' सार्टीफिकेट दिया जाता है। सीनियर डिवीजन के छात्रों को दो साल की ट्रेनिंग में 'बी' सार्टीफिकेट दिया जाता है। सीनियर डिवीजन के कैडेट को तीन साल की ट्रेनिंग के बाद 'सी'सार्टीफिकेट दिया जाता है। एन. सी.सी. का 'बी' तथा 'सी' सार्टीफिकेट प्राप्त करने के लिए जरूरी नहीं है कि आपने 'ए' सार्टीफिकेट प्राप्त किया हो। 'बी' तथा 'सी' सार्टीफिकेट के लिए बकायदा अलग से परीक्षा देनी होती है।

'हम सब भारतीय हैं' एन.सी.सी. का राष्ट्रीय गीत है। इस गीत की रचना सुदर्शन फाकिर ने की थी। एन.सी.सी. प्रशिक्षण प्राप्त तथा 'सी' प्रमाण प्राप्त धारकों को सरकार द्वारा कई मामलों में नौकरी में भर्ती में छूट या प्राथमिकता दिए जाने का प्रावधान है। 12 वर्ष से 26 वर्ष तक का कोई भी युवा एन.सी. सी. में प्रवेश ले सकता है। यदि आपके स्कूल में एन.सी.सी. है तो आप उसे जरूर जौइन करें।

– तनीषा बिष्ट, कक्षा-8
राजा आनंदसिंह रा.बा.इं.कालेज अल्मोड़ा

गुरू

जीवन के घोर अंधेरे में,
प्रकाश बनकर जो आता है।
हर लेता है जो दुख हमारा,
खुशियों की फसल उगाता है।
शिष्य का नाम बढ़े जग में,
उसका यही अरमान रहे।
सबके हृदय में गुरू के लिए,
बस इसलिए सम्मान रहे।

– मीनाक्षी, कक्षा-9
रा.उ.मा.वि.कांटली,अल्मोड़ा

क्रिसमस

क्रिसमस आया क्रिसमस आया,
उपहार शांता क्लाज है लाया।
क्रिसमस ट्री घर पर सजाया,
खुशियों की बौछार है लाया।
शांता क्लाज को देखकर ही,
बच्चे खुश हो जाते हैं।
खुशियों का त्यौहार है ये,
बच्चे उपहार पाते हैं।

सुष्मिता हरजानी, कक्षा 9
ईमाथॉनशन लालबाग गर्ल्स कालेज लखनऊ,उ.प्र.

बच्चों की कलम से :

पृथ्वी

पृथ्वी जन्म भूमि हमारी,
देती जीवन हमें अनमोल।
स्वच्छ इसे रखना है,
मन से निकले मेरे बोल।
पेड़ लगाकर इस सजाएं,
करें हम इसका श्रंगार।
जल और वायु हमें मिले,
पेड़ करें हम पर उपकार।

– मनोज जोशी, कक्षा-8
राजकीय इंटर कालेज आरा सल्पड़, अल्मोड़ा

हरी सब्जियां

हरी सब्जियां रोज खाओ,
खाओ रोज टमाटर लाल।
पालक गाजर लाही और,
हरी मिर्च मचाए धमाल।
करेला कड़ुवा होता मगर,
सेहत का ये रखता ध्यान।
अपनी सेहत बनानी है तो,
हरी सब्जी को दो सम्मान।

– हिमांशु तिवारी, कक्षा 9
जवाहर नवोदय विद्यालय चंपावत

गढ़वाली भाषा

गढ़वाली हमारी मातृभाषा,
यही हमारी पहचान है।
इसे सीखना है जरूरी,
यही हमारी शान है।
दूसरी भाषाएं सीखें हम,
इससे मिलेगा हमको मान।
पर अपनी भाषा बचानी है,
मातृभाषा हमारी पहचान।

– पायल पंवार, कक्षा-8
राजकीय इंटर कालेज कोटबांगर, रुद्रप्रयाग

मेरे सपनों का गांव

मेरे गांव का नाम कंझारी है। इस गांव में तीन स्कूल हैं। इसमें से एक स्कूल में पढ़ाई नहीं होती है। मैं चाहती हूं कि उस स्कूल में भी पढ़ाई हो। यहां सड़कों पर बहुत गड्ढे हैं। मैं सोचती हूं कि वे गड्ढे कम हो जाएं। मेरे गांव के लोग बहुत अच्छे हैं। गांव के लोग आपस में कभी भी नहीं लड़ते हैं। मैं सोचती हूं गांव के लोगों में हमेशा भाईचारा बना रहे। मेरा मानना है कि हमारे गांव में एक खेल का मैदान होना चाहिए। जहां हम खेलने जाया करें। गांव में एक गौशाला है। वह बहुत गंदा रहता है। मैं चाहती हूं कि वहां साफ-सफाई रहे। मेरे गांव में एक अस्पताल भी होना चाहिए। मेरे गांव में साफ-सफाई हो। पढ़ाई की अच्छी सुविधाएं हों, ऐसा मैं चाहती हूं।

– सपना निषाद, कक्षा-9
इंटर कालेज हुसेपुरा सुरई, जालौन, उ.प्र.

भाई बहन

भाई बहन का रिश्ता,
पवित्र है और प्यारा।
दोनों झगड़ते रहते हैं,
जानती है दुनिया सारा।
एक दूजे का रखतेध्यान,
पर मां को बहुत सताते।
मार झगड़े के चक्कर में,
कभी मार दोनों ही खाते।

– सृष्टि, कक्षा-8
डी.ए.वी.पुलिस पब्लिक स्कूल सिरसा, हरियाणा

फौजी

फौजी ड्रेस पहनकर मैं,
भारत का मान बढ़ाऊंगी।
दुश्मन पानी नहीं मांगेगा,
सीमा पर मार गिराऊंगी।
देश के लिए मर मिटते हैं,
फौजी हैं इस देश की शान।
देश की रक्षा करते हैं,
फौजी का हम करें सम्मान।

– लक्ष्मी गुर्जर, कक्षा-6
रा.उ.मा.वि.गोपालपुरा, टोंक, राजस्थान

स्वच्छता अभियान

खुले में शौच बंद हो,
ये सबको समझाना है।
शौचालय सभी बनाएं,
सबको ये बताना है।
घर मुहल्ला साफ रहे,
अभियान ये चलाना है।
गंदगी है बीमारी की जड़,
स्वच्छता अभियान चलाना है।

– राहुल सिंह डंगवाल, कक्षा-7
राजकीय जूनियर हाईस्कूल सीम, बासोट, अल्मोड़ा

जल ही जीवन है

जल ही जीवन है,
जल ही जीवन का आधार।
जल बरबाद न करो,
ये मेरी कविता का सार।
पेड़ जल के स्रोत हैं,
पेड़ हमको लगाने हैं।
वन से जल, जल से जीवन,
वन के लाभ बताने हैं।

– शिवम किरौला, कक्षा-6
कुमाऊं पब्लिक स्कूल द्वाराहाट, अल्मोड़ा

बच्चों की कलम से :

फौजी

फौजी बनकर बड़ी शान से,
मैं देश का मान बढ़ाऊंगा।
रक्षा करने भारत मां की,
मैं बंदकू उठाऊंगा।
सच्चा प्रहरी बनकर मैं,
दुश्मन को मार भगाऊंगा।
देश का मान बना रहे,
तिरंगा मैं फहराऊंगा।

– हर्ष पांडे, कक्षा-6
केंद्रीय विद्यालय कौसानी, बागेश्वर

कोरोना

ओमिक्रान की लहर चली,
कोरोना फिर आ गया।
चिंतित हैं सारे लोग,
इसका भय फिर छा गया।
मास्क अब जरूरी है,
इस बात का रखो ध्यान।
दूर से ही करो प्रणाम,
तभी बचेगी भैया जान।

– अर्चित जैन, कक्षा-6
मिकाडो इंटरनेशनलन स्कूल उदयपुर,राजस्थान

तिरंगा

तिरंगा देश की शान है,
सब बढ़ाएं इसका मान।
ये है भारत की पहचान,
सभी करें इसका सम्मान।

– चैतन्या साह, कक्षा 5
सरस्वती शिशु मंदिर, बागेश्वर

बेटियां

'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' नारा आजकल गांव-गांव तक पहुंच गया है। इस कारण गांव में भी अधिकतर लोग बेटियों को पढ़ा रहे हैं। गांव की अधिकतर लड़कियों को माता-पिता या उनके अभिभावक स्कूल भेज रहे हैं। पर उन्हें पढ़ने का समय नहीं मिल पाता है।

गांवों में अभी भी कम पढ़ी-लिखी माताएं हैं। वे सोचती हैं कि बेटी को स्कूल भेज दिया तो उन्होंने अपना फर्ज निभा दिया। उन्हें पता नहीं होता है कि स्कूल में जो पढ़ाई होती है। उस पाठ को घर पर भी दोहराना होता है। स्कूल का होमवर्क भी होता है। वे घर पर लड़कियों को पढ़ने का समय नहीं देती। परिणाम स्वरूप वे अपना होमवर्क तक नहीं कर पाती। उन्हें स्कूल में डांठ पड़ती है। उनका मन पढ़ाई में नहीं लगता है। शिक्षक द्वारा पढ़ाया गया पाठ भी उनकी समझ में नहीं आता है।

मेरा तो कहना है कि गांव में सभी माताओं तथा अभिभावकों को लड़कियों को होमवर्क पूरा करने, स्कूल में पढ़ाए गए पाठ को दोहराने व पुस्तक पढ़ने के लिए अवसर देना चाहिए। शहर में तो लड़कियों को ट्यूशन पर भी भेजा जाता है। परंतु गांव में लड़कियों को पढ़ाई के लिए समय नहीं मिल पाता है। उसके बावजूद लड़किया पढ़ाई में आगे रहती हैं। माता-पिता को लड़कियों की पढ़ाई पर ध्यान देना चाहिए।

– साक्षी, कक्षा 11
राजकीय बालिका इंटर कालेज गंगोलीहाट,पिथौरागढ़

पर्यटक

घर से निकले घूमने,
पर्यटक कहलाते हैं।
घूमना होता इनका शौक,
ये दूर-दूर तक जाते हैं।
मेहमान बनकर पर्यटक,
नौकुचियाताल भी आते हैं।
चहल-पहल रहती खूब,
ये यहां की शान बढ़ाते हैं।

– विवेक पलड़िया, कक्षा 8
रा.इ.का.नौकुचियाताल,नैनीताल

स्कूल

बस्ते का बोझ न हो,
ऐसा हो हमारा स्कूल।
रटना न पड़े हमें,
सबका हो ऐसा स्कूल।
खेल खेल में आए मजा,
कुछ ऐसा होना चाहिए।
मैडम व सर से दोस्ती,
कुछ ऐसा होना चाहिए।

– प्रशांत जोशी , कक्षा 9
यूनिवर्सल इंटर कालेज चंपावत

मेरा भारत

मेरा भारत देश महान,
इसका मान बढ़ाएंगे।
दुश्मन पानी नहीं मागेगा,
मजा उसे चखाएंगे।
तिरंगे की कसम हमें,
तिरंगे का मान बढ़ाएंगे।
आपस में मिलकर रहेंगे,
देश को महान बनाएंगे।

– जिज्ञासा जोशी, कक्षा 5
कंट्रीवाइड पब्लिक स्कूल सोमेश्वर, अल्मोड़ा

बच्चों की कलम से :

वैक्सीन

बन गई है वैक्सीन,
बनने लगी दवाई।
दो गज की दूरी बनाएं,
हम कोरेाना में भाई।
रूप बदल कर आ रहा,
देखो फिर कोरोना।
मास्क हमें लगाना है,
साबुन से हाथ है धोना।

– आरती चौहान, कक्षा-7
रा.प्रा.वि.कुणीधार, मानिला,अल्मोड़ा

हमारा उत्तराखंड

गंगा का उद्गम स्थल,
भारत का ये भाल है।
झरनों का मीठा पानी,
सच में बहुत कमाल है।
बांज बुरांस के पेड़ यहां,
शुद्ध हवा हमको देते हैं।
उपकारी होते हैं पेड़,
गंदी हवा स्वयं लेते हैं।

– गुंजन शर्मा, कक्षा-11
रा.बा.इं.कालेज बग्वालीपोखर,अल्मोड़ा

हमारी मैडम

भट्टीगांव प्राथमिक स्कूल,
यहां की छटा निराली है।
गंगा आर्या मैडम हमारी,
करती हमारी रखवाली है।
खेल-खेल में हमें सिखाती,
सब बच्चों को करती प्यार।
आगे हमें बढ़ाती है,
हमें दिलाती हैं उपहार।

– प्राची पंत , कक्षा 5
राजकीय प्राथमिक विद्यालय भट्टीगांव, चंपावत

कोहरा

घना कोहरा आया है,
दिन में अंधेरा छाया है।
घर में सब छिप जाते हैं,
घर में शोर मचाते हैं।

– ऋषभ देव रावत,
आयशर स्कूल, परवाणु, सोलन, हि.प्र.

कंप्यूटर

चार्ल्स वेब्ज ने बनाया कंप्यूटर,
उसको हम सब नमन करें।
कंप्यूटर का आया जमाना,
इसको सब सीखा करें।
जो भी फाइल मांगो इससे,
तुरंत ये दे देता है।
क्या दिमाग इसका है,
मेरी बात मान लेता है।

– अदिति श्रीवास्तव, कक्षा 6
आर.आर.एस.एन.जे.एच.एस. जामौ,अमेठी,उ.प्र.

चंपावत

ऊपर मां हिंग्ला का मंदिर,
नित देता आशीष।
नीचे पावन गंडकी,
झुकाते हम सब शीष।
चंपावत का गोलू देव,
मां पूर्णा का धाम।
पूजा नित ही करते हैं,
रोज सुबह और शाम।
पर्यटक दूर-दूर से आते,
करें उनका हम स्वागत।
साफ सफाई यहां रहे,
हमको बनानी है ये आदत।

– गौरव पचौली, कक्षा-10
जवाहर नवोदय विद्यालय चंपावत

मोबाइल

मोबाइल हूं मोबाइल,
सबकी बात कराता हूं।
हो जाती आंखें खराब,
सबको मैं समझाता हूं।
उपयोगी हूं मैं बहुत,
मुझ से काम लिया करो।
कुछ करते मेरा दुरुपयोग,
तुम ऐसा मत किया करो।

– सविता भारती, कक्षा-8
कस्तूरबा गांधी आ.बा.वि खरसाड़ी, उत्तरकाशी

मोबाइल

विज्ञान का जमाना है,
मोबाइल घर-घर पहुंच गया।
सबका ध्यान है फोन पर,
मानो सब कुछ ठहर गया।
बहुत काम का होता ये,
इसका सब सदुपयोग करें।
केवल खेल नहीं खेलें,
पढ़ाई में उपयोग करें।

– लक्की भट्ट, कक्षा-8
अटल उत्कृष्ट रा.इ.का.हल्दूचौड़, नैनीताल

बच्चों की कलम से :

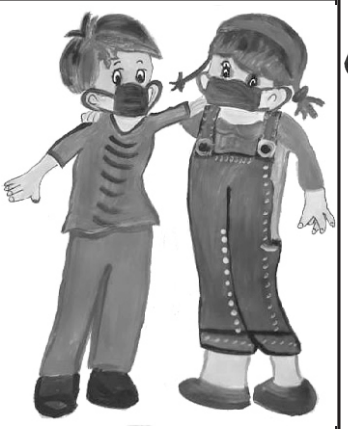

यश बिष्ट, कक्षा-6
विवेकानंद इंटर कालेज, अल्मोड़ा

महक मेहरा, कक्षा-7
जी.जी.जे.एच.एस.जैनोली

अदिति श्रीवास्तवा, कक्षा-6
आर.आर.एस.एन.जे.एच.एस.प.स्कूल जामौ,अमेठी,उ.प्र.

नैतिकसिंह बिष्ट, कक्षा-4
गाइड लाइन पब्लिक स्कूल, गंगोलीहाट

वर्धन जोशी, कक्षा-9
कुर्मांचल पब्लिक स्कूल, अल्मोड़ा

मिलन सिंह बुंगला, कक्षा-10
द गाइड लाइन पब्लिक स्कूल, गंगोलीहाट

यामिनी जोशी, कक्षा-4
नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, नानकमत्ता

हिमानी पपने, कक्षा-6
बाल विकास विद्या मंदिर, भटकोट, चौखुटिया

नेहा सिंह, कक्षा-7
अंकुर आनावा स्कूल, नोएडा,उ.प्र.

चांदनी आर्या, कक्षा-6
राजकीय जू.हाईस्कूल कटारमल,अल्मोड़ा

अंजली बिनवाल, कक्षा - 08
रा.उ.मा.वि. भेटुली, अल्मोड़ा

यामनी आर्या, कक्षा - 10
जी.आई.सी. नकुचियाताल, नैनीताल

निबंध प्रतियोगिता-40

निबंध प्रतियोगिता में 14 वर्ष तक के बच्चे नि:शुल्क भाग ले सकते हैं। प्रतियोगिता के तहत 'यदि मैं अपने स्कूल का प्रधानाचार्य होता/होती' विषय पर लगभग 250 शब्दों का निबंध लिखकर भेजना है। चयनित निबंध को बालसाहित्य संस्थान अल्मोड़ा के सौजन्य से 200 रुपए की पुस्तकें/पत्रिकाएं उपहार में भेजी जाएंगी। निबंध के साथ नाम/पता/कक्षा/स्कूल व घर का पूरा पता तथा टेलीफोन न. अवश्य लिखें। निबंध संपादक बालप्रहरी अल्मोड़ा, उत्तराखंड-263601 के पते पर दिनांक 15 मार्च,2022 तक भेजें। निबंध प्रतियोगिता-39 में निम्न निबंध चयनित हुआ है। इन्हें उपहार में पुस्तकें/पत्रिकाएं भेजी जा रही हैं।

मेरी चार अच्छी आदतें तथा चार अन्य सुधारने योग्य आदतें

किसी काम को बार-बार किया जाए तो वह हमारी आदत बन जाती है। अच्छी आदतों को अपनाना मुश्किल होता है। इसके विपरीत बुरी आदतें आसानी से अपना रास्ता बना लेती हैं। इस कारण हमें अपने जीवन में कई परेशानियां झेलनी पड़ती हैं।

मैं अपनी चार अच्छी आदतों की बात करूं तो मैं अपना होमवर्क समय पर कर लेती हूं। इससे मेरे शिक्षक मुझसे खुश रहते हैं। मेरी दूसरी अच्छी आदत है कि मैं घर के कामों में अपनी मां की मदद करती हूं। मैं कचरा हमेशा डस्टबिन में ही डालती हूं। मुझे कभी भी कोई भी कूड़ा सड़क में डालते हुए दिखाई देता है तो मैं उनसे कूड़ा डस्टबिन में डालने के लिए कहती हूं। मेरी एक और अच्छी आदत है मैं हमेशा दूसरों की मदद करती हूं। मैं हमेशा जरूरतमंदों की मदद करती हूं।

मुझे अपनी कई आदतों पर स्वयं में बहुत अफसोस होता है। मुझे नींद बहुत प्यारी है। कभी-कभी मैं बेवजह रोती हूं। मुझे लगता है कि मैं बहुत वाचाल किस्म की हूं। मैं अपना सामान कई बार नियत स्थान पर नहीं रखती हूं। मेरी इन आदतों से मेरे घर वाले भी मुझसे परेशान रहते हैं। मैं अपनी कई आदतें सुधारने के लिए प्रयासरत हूं। मैं स्वयं भी मानती हूं कि अपनी कई आदतों को सुधारने में मैं स्वयं ही पहल कर सकती हूं। हम स्वयं के आदतों की विवेचना करें। इससे हम अपने दिमाग को सही आदतों के लिए तैयार कर सकते हैं। लगातार प्रयास करने से हम वैसा ही बन जाते हैं। यहीं तो आदत हैं।

- अनेरी पोद्दार, कक्षा 5

मेडीकेप्स इंटरनेशनल स्कूल इंदौर,म.प्र.

(इसके अतिरिक्त हिमांशी बिष्ट (छिताड़) सागर कुमार (डूनी, पिथौरागढ़), पिंकी (डोबाल खेत्) वैष्णवी पंत (जालंधर), उत्कर्ष सती (पंतनगर) दक्षता गुसाई (गैरसैण) का निबंध भी प्रशंसनीय था। - संपादक

आप कितने सूक्ष्मदर्शी हैं?

★ चांद मोहम्मद घोसी, नन्हा बाजार, मेड़ता सिटी (राजस्थान)

यहां चित्रित एक जैसे दोनों चित्रों में ध्यान से देखकर 10 अंतर बताइए।

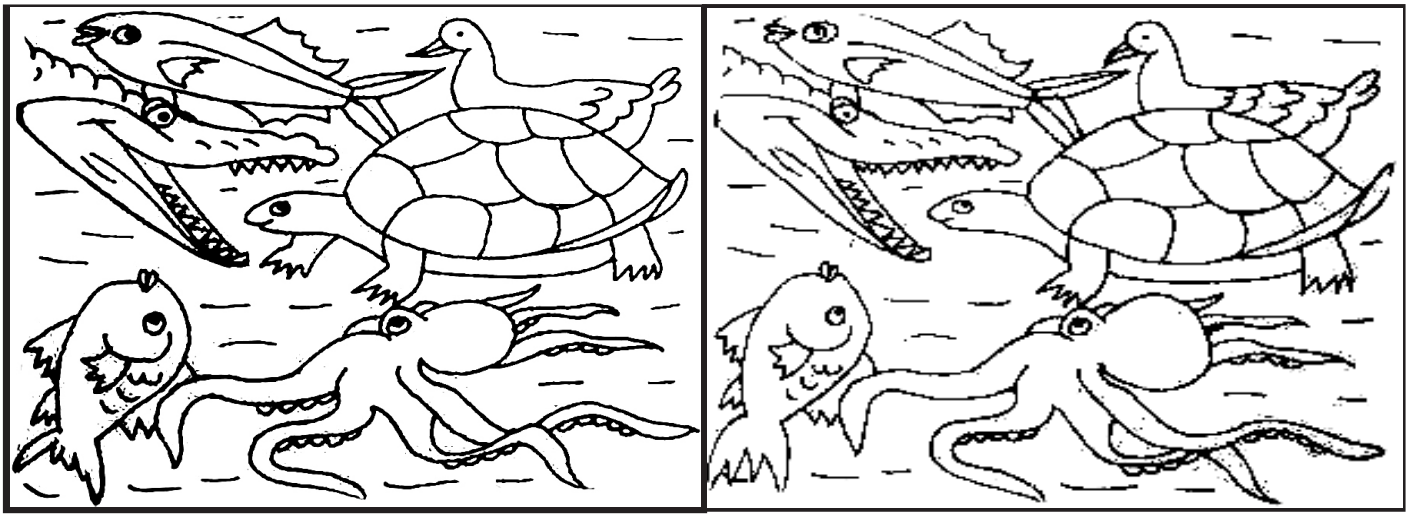

उत्तर :- 1. ऊपर मछली की आंख भिन्न है। 2. मगरमच्छ के दांत अधिक हैं। 3. बतख की चोंच में अंतर है। 4. बतख के पंख भिन्न हैं। 5. कछुवे की पूंछ बड़ी है। 6. उसका एक पैर कम है। 7. आक्टोपस का सिर छोटा है। 8. उसकी एक भुजा के दांत नहीं हैं। 9. उसकी एक भुजा ऊपर नीचे है और 10. मछली की पूछ बड़ी है।

कविता लिखो प्रतियोगिता-69

दाएं बने चित्र को ध्यान से देखो। चित्र को देखकर-विचारकर तुम्हें 8 पंक्ति की स्वरचित कविता 15 मार्च, 2022 तक संपादक बालप्रहरी, अल्मोड़ा उत्तराखंड-263601 के पते पर भेजनी है। प्रतियोगिता में 14 वर्ष तक के बच्चे निःशुल्क प्रतिभाग कर सकते हैं। कविता के नीचे अपना नाम, पता तथा उम्र तथा फोन नंबर लिखकर हस्ताक्षर करने हैं। सबसे अच्छी कविता को बालप्रहरी में प्रकाशित किया जाएगा। ग्रामीण समाज कल्याण समिति (ग्रास) तल्ला चीनाखान, अल्मोड़ा के सौजन्य से 200 रुपए की पुस्तकें/पत्रिकाएं उपहार में भेजी जाएंगी। कविता लिखो प्रतियोगिता-68 में निम्नलिखित कविता चयन की गई है। इन्हें पुस्तकें/पत्रिकाएं उपहार में भेजी जा रही हैं।

मेरी बहना

बहना ओ बहना मेरी,
क्या तारों को गिन पाती है।
चांद से भी प्यारी तू,
हरदम ही मुस्काती है।
हंसती जैसे चांद है तू,
बहना मेरी प्यारी है।
दुनिया की सब बहनों में,
सचमुच तू न्यारी है।

— सोनाक्षी तिवारी कक्षा - 5
इनोसेंट हार्ट स्कूल जालंधर, पंजाब

इसके अतिरिक्त उत्कर्ष सती(पंतनगर) प्रतिष्ठा रावत (सोलन, हि.प्र.), कविता रावत (हरनोली), अदिति (अहमदाबाद), पाखी जैन (उदयपुर, राजस्थान), चिन्मयी शर्मा (नगांव, असम), भूमिका पाठक (कोटाबाग), काव्यांजलि (अल्मोड़ा) की कविताएं भी प्रशंसनीय थी। -संपादक

अल्मोड़ा से प्रकाशित कुमाउंनी मासिक पत्रिका

पहरू

के लिए कुमाउंनी भाषा में कहानियां, कविताएं आदि रचनाएं सादर आमंत्रित हैं। आजीवन सदस्यता 1500 रुपए अथवा वार्षिक सदस्यता 200 रुपए भिजवाकर सहयोग करें।

- डॉ हयात सिंह रावत,
संपादक- पहरू

'इंद्र सदन' सुनारीनौला, अल्मोड़ा, मोबा. 9412924897

सुडोकू

सुडोकू 9×9 यानी 81 खानों का वर्ग है। यह 3×3 खानों के 9 छोटे खानों में बंटा होता है। पहेली सुलझाने के लिए खाली स्थान पर 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। ध्यान रखें आड़ी या खड़ी लाईन में एक संख्या केवल एक ही बार आए।

1				9				
2		9					5	
	4		7			6		
	5		3			1		
	6	3	1		4	5	2	
		4			5		6	
		5			8		7	
	2					3		8
				3				5

चुटकुले

शिक्षक - बच्चो! सबसे अधिक नशा किसमें होता है।
गोलू - किताब में सर जी
शिक्षक - कैसे?
गोलू - क्योंकि किताब खोलते ही नींद आ जाती है।

अध्यापक- किस हाथ का लिखा सुंदर होता है?
बबीता - दाएं हाथ की लिखावट।
सोनू - किसी भी हाथ से लिखो लिखना तो पैन से होता है।

टीचर- मोनू! घर की बिजली तथा बादलों में गरजने वाली बिजली में क्या अंतर है?
मोनू - बादलों में गरजने वाली बिजली का बिल नहीं देना होता है।

मम्मी - बेटा! तुम दो घंटे से बाहर खड़े-खड़े बात कर रहे हो। अंदर बैठ कर बात कर लो।
टिंकू- मम्मी! मेरे दोस्त के पास बैठने का समय नहीं है।

पिताजी- बेटा! तुम हमेशा भूगोल की पुस्तक ही पढ़ते हो। बताओ पृथ्वी और चंद्रमा में क्या संबंध है?
बेटा- भाई बहन का संबंध है पिताजी।
पिताजी - ऐसा कैसे कह सकते हो?
बेटा - पृथ्वी को हम माता कहते हैं। चंद्रमा को मामा, इसलिए।

पापा - आज रिजल्ट आ गया है। तुम्हारे कितने अंक आए हैं?
विक्की- 500 अंक आए हैं पापा।
पिताजी -अलग-अलग विषयों में बताओ।
विक्की- हिंदी में 5 अंगरेजी में 0 तथा गणित में 0 कुल मिलाकर 500 अंक

टीचर- गोलू! बताओ। जाड़े में दिन छोटे और गरमी में दिन बड़े क्यों होते हैं?
गोलू- सर! आपने ही तो बताया है कोई भी वस्तु गरमी पाकर फैलती है। ठंडी होने पर सिकुड़ती है। इसी प्रकार जाड़े में दिन छोटे होते जाते हैं। गरमी में बड़े होते जाते हैं।

- **जिज्ञासा जोशी, कक्षा 5,** कन्ट्रीवाइड पब्लिक स्कूल सोमेश्वर
- **मीमांसा भट्ट, कक्षा 4,** रेनेसा नर्सरी एंड स्कूल गंगोलीहाट
- **जतिन सती, कक्षा 3,** दून एकैडमी, पंतनगर,ऊधमसिंहनगर
- **ईशा अवस्थी,कक्षा 8,** शा. क.उ.मा.वि.नया हरसूद,खंडवा,म.प्र.
- **मीनाक्षी आर्या,कक्षा 12,** आर्य कन्या इंटर कालेज अल्मोड़ा

क्या आप जानते हैं?

● विमला जोशी 'विभा'

आलू की सब्जी तो हम सभी ने खाई है। लगभग सभी ने आलू देखा भी होगा। आलू में छोटे-छोटे छिद्र होते हैं। इसमें छेद या गड्डे देखकर पहले एक दौर में लोग आलू देखकर नाक भौं सिकोड़ते थे। लोगो में ये भी भ्रांति थी कि आलू खाने से कोढ़ नामक बीमारी हो जाती है। स्कॉटलेंड में तो पादरियों ने आलू खाने पर प्रतिबंध तक लगा दिया। उनका मानना था कि धर्म ग्रंथों में कहीं भी आलू को खाद्य पदार्थ नहीं बताया गया है।

यदि हम आदिकाल की बात करें तो पहले मानव कंद खाकर अपना गुजारा करता था। जब गेहूं तथा चावल आदि अनाजों का उत्पादन प्रारंभ नहीं हुआ। तब भी लोग आलू से अपना पेट भरते थे। वर्तमान में आलू दुनिया के लगभग सभी देशों में पाया जाता था। आलू का जन्म स्थान कोई चिली देश को मानते हैं तो कोई अमेरिका के वर्जिनिया क्षेत्र को। इस पर लोग एकमत नहीं हैं। आलू को अंगरेजी में पोटेटो कहा जाता है। भारत के बंगाल में इसे गल आलू, कर्नाटक में आलू गड्डा, आंध्र प्रदेश में आलू गद्दालू, कश्मीर में उले तथा गुजरात और महाराष्ट्र में बटाटां आदि नामों से जाना जाता है। इसका वैज्ञानिक नाम सोलेनम ट्यूबरोसम है। आलू की लगभग 250 से अधिक प्रजातियां हैं। मैदानी, समुद्री, पठारी,पहाड़ी, अत्यधिक शीत वाले क्षेत्रों में आलू की अलग-अलग प्रजातियां बोई जाती हैं।

आलू को सब्जियों का राजा कहा जाता है। अलग-अलग ढंग से इसकी तरकारियां बनाई जाती हैं। एक सौ ग्राम आलू में 23 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, दो ग्राम प्रोटीन तथा कैल्शियम, खनिज,लवण,फास्फोरस आदि पाया जाता है। इसे जहां कई दवाओं में इस्तेमाल किया जाता है। वहीं सुगर आदि कई बीमारियों में डॉक्टर आलू न खाने की सलाह देते हैं।

फ्रांस का सम्राट लुई 14 वां अपनी पोशाक पर आलू का फूल लगाया करता था। उसकी रानी अपने बालों के जूड़े में आलू के फूलों की माला पहनती थी। समूचे संसार में चीन आलू का सबसे बड़ा उत्पादक देश है। आलू उत्पादन में विश्व स्तर पर भारत दूसरे स्थान पर है। भारत के राज्यों की बात करें तो सबसे अधिक आलू का उत्पादन उत्तर प्रदेश में होता है। इसके बाद पश्चिम बंगाल तथा बिहार आदि राज्यों का नाम लिया जाता है। भारत में केरल को छोड़कर लगभग सभी राज्यों में आलू की खेती की जाती है। एक आंकड़े के अनुसार भारत में प्रत्येक व्यक्ति एक वर्ष में औसतन 14 किलो आलू खाता है।

- नबाबी रोड, हल्द्वानी, नैनीताल

कहानी लिखो प्रतियोगिता-69

दाएं बने चित्र को देखकर 14 वर्ष तक के बच्चे एक कहानी बनाकर संपादक बालप्रहरी, अल्मोड़ा उत्तराखंड-263601 के पते पर 15 मार्च, 2022 तक भेज कर प्रतियोगिता में नि:शुल्क भाग ले सकते हैं। कहानी के नीचे अपना नाम व पता तथा उम्र लिखकर हस्ताक्षर करने हैं। सबसे अच्छी कहानी को बालप्रहरी में प्रकाशित किया जाएगा तथा उपहार में 200 रुपए की पुस्तकें भारत ज्ञान विज्ञान समिति अल्मोड़ा के सौजन्य से भेजी जाएंगी। कहानी लिखो प्रतियोगिता-68 के लिए निम्न कहानी का चयन किया गया। इन्हें पुरस्कार में पुस्तकें / पत्रिकाएं भेजी जा रही हैं।

कोरोना की तीसरी लहर

''कोरोना की तीसरी लहर आ चुकी है। ओमिक्रॉन वैरिएट के नाम पर कोरोना पहले से खतरनाक रूप में आ रहा है। कम से कम कुछ दिन बाजार का खाना मत खाओ। केवल घर का ही भोजन करो। इम्यूनिटी बढ़ाने के लिए आजकल घर पर ही नए-नए आइटम बना रही हूं। फास्ट फूड तो वैसे भी खतरनाक है बेटा!'' गोलू का समझाते हुए मां ने कहा।

''मां ! बाजार में सारे लोग फास्ट फूड खा रहे हैं। किसी को कुछ नहीं हो रहा है। बहुत से दुकानों में फास्ट फूड बन रहा है। सारे लोग खुशी-खुशी सब खा रहे हैं।'' गोलू ने चिल्लाते हुए मां से कहा।

गोलू की बात का उत्तर देते हुए मां ने कहा, ''बेटा! फास्ट फूड में ढेर सारे मसाले व कैमिकल डाले जाते हैं। यह चटपटा तो हो सकता है। पर देर में पचता है। कहीं न कहीं आंतों के लिए खतरनाक होता है। चलो कभी खा लिया कोई बात नहीं। परंतु तुम तो बगैर चाउमीन खाए एक दिन भी नहीं रह सकते हो।''

''ठीक है मां! अब मैं कभी-कभी खाऊंगा'' गोलू बोला।

''पता नहीं कब से तेरी ये बात सुन रही हूं। आज स्कूल से जल्दी आना। शाम को नानी के घर जाना है। रास्ते में खेलते मत रहना। सीधे घर आ जाना।'' मां ने कहा।

''ठीक है मां!'' कहकर गोलू स्कूल के तैयार हुआ। अपने दोस्तों के साथ स्कूल चला गया। तीसरा पीरियड अंगरेजी का था। मेहता सर अंगरेजी की क्लास ले रहे थे। अचानक गोलू अपने को असहज महसूस कर रहा था। उसके पेट में दर्द हो रहा था। दर्द बहुत ही असहनीय होने लगा था। उसे लगा जैसे उल्टी आने वाली है। उसने बगल में बैठी सिमरन को इशारे से बताया कि उसका जी मचल रहा है। सिमरन ने मेहता सर से कहा, ''सर! गोलू की तबियत खराब हो रही है।''

मेहता सर ने बच्चों से कहा, ''एक दो बड़े बच्चे इसे बाहर लेकर चलो।'' इससे पहले के बच्चे उसे बाहर ले जाते। गोलू ने क्लास में ही उल्टी कर दी। बच्चे उसे बाहर लेकर गए। परंतु उसकी उल्टी नहीं रूक रही थी। प्रधानाचार्य जी को सूचना दी गई। प्रधानाचार्य जी ने गोलू के पापा को फोन किया। उन्होंने कहा कि वे अपनी गाड़ी से गोलू को सरकारी अस्पताल ले जा रहे हैं। वे अस्पताल पहुंचें।

अस्पताल के इमर्जेसी वार्ड में गोलू को भर्ती किया गया। उल्टी होने से गोलू के शरीर में ताकत नहीं थी। उसके शरीर में ग्लूकोज चढ़ाया गया। डॉक्टर ने इंजेक्शन लगाए। कुछ दवाएं भी दी। हल्का भोजन लेने तथा फास्ट फूड बिल्कुल भी नहीं खाने को कहा।

शाम को गोलू घर आ गया। गोलू ने मां से कहा, ''मां! तुम्हारी बातें मान लेता तो शायद मेरी तबियत खराब नहीं होती। अब मैं बाजार का खुला सामान व फास्ट फूड बिल्कुल भी नहीं खाऊंगा।'' मां ने गोलू का गले से लगा लिया।

— प्रियंका शर्मा, कक्षा 7
कस्तूरबा गांधी आ.बा .वि. सीतापुर,उ.प्र.

(इसके अतिरिक्त भूमिका वैष्णव (हल्द्वानी), वर्णिका शर्मा (जालंधर, पंजाब), विवेक (जबलपुर,म.प्र.), गुंजन शर्मा (पिलानी,हरियाणा), आयुषी (चित्तौड़गढ़,राजस्थान), दमयंती सक्सेना (आगरा,उ.प्र.),पीयूष जोशी(गंगोलीहाट) की कहानी भी प्रशंसनीय थी। -संपादक

अनमोल वचन

- जो दूसरों को जानता है,वह शिक्षित है। जो स्वयं को पहिचानता है वह बुद्धिमान है। - ताओजे
- पुत्र के प्रति पिता का यही कर्तव्य है कि वह उसे सभा की पहली पंक्ति में बैठने लायक बना दे। - तिरूवल्लूवर
- *गुणों की प्रशंसा में समय बरबाद मत करो, गुण अपनाने का प्रयास करो।* - काल मार्क्स
- *एक गुण समस्त दोषों को ढक लेता है।* - *चाणक्य*

संकलनः जी.आर.एस.यादव भाई, 28 प्रधानमंत्री सचिवालय अपार्टमेंट विकासपुरी, नई दिल्ली- 11 00 28
मोबाइल-93 12 34 06 98

पहेलियां

● शशिबाला श्रीवास्तव
रायबरेली (उ.प्र.)

1. दो हाइड्रोजन एक ऑक्सीजन से, मिलकर मैं बनता हूं, ठोस,द्रव और गैस, तीनों रूपों में मिलता हूं।
2. हिमालय से चलकर मैं, बंगाल की खाड़ी तक जाती हूं। मुझको लोग माता कहते,सबसे पवित्र कहलाती हूं।
3. प्रथम कटे तो लोग बनेंगे, मध्य कटे तो जंगल, मैं बढ़ूं तो लोग हंसे, कहकर मोटा थुलथुल।
4. दिखने में मैं रंग-बिरंगा, सबको आकर्षित करता हूं, कभी चढ़ूं मैं शव के ऊपर, कभी देवों पर चढ़ता हूं।

उत्तर: 1. पानी, 2. गंगा नदी, 3. बरगद, 4. फूल

हाथी

● कैलाश त्रिपाठी

पेट बड़ा है गर्दन मोटी,
मस्तक चौड़ा आंखें छोटी।
अपनी सूड़ डुलाता है,
देखो हाथी आता है।
मुंह में दांत हैं खाने के,
बाहर दांत दिखाने के।
अपने कान हिलाता है,
देखो हाथी आता है।
चालक के संकेत जानता,
उसके वह आदेश मानता।
चलते धूल उड़ाता है,
देखो हाथी आता है।
चाल मस्त मतवाली है,
पीछे पूंछ निराली है।
भारी वजन उठाता है,
देखो हाथी आता है।
दिखता सीधा समझदार है,
कहते उसको वफादार है।
पेड़ तोड़ वह खाता है,
देखो हाथी आता है।

- शिवकुटी, आर्यनगर, अजीतमल, औरैया,उ.प्र.

सरदी

● डॉ. वर्षा चौबे

सरदी ने कुंडी खटकाई,
दौड़े आए कोट रजाई।
मोजे कंबल टोपे स्वेटर,
मुस्काके करते अगुवाई।
धूप बिछाए पलके अंगना,
शीतल जल ले आए झरना।
बैठी दादी कुछ बतियाती
जुड़े पड़ौसी देते धरना।
पूस मास की ठंडी राते,
जल अलाव देते गरमाई।
कभी चटपटे कभी अटपटे,
बनते भजिए गरम पराठे।
खुश होकर मेहमानी करते
सरदी सबसे रहती चिपटे।
गर्म चाय की प्याली भरकर
मौसी ने दी सबको भाई।
मूंग चना खूब हर्षाए,
खेतों में बाली लहराए।
धना नाचे कलगी बांधे,
हल्दी लगी सरसों शर्माए।
ढोल बजाते गाते भंवरे
आंगन में बाजे शहनाई।

-बी/41गौतमनगर,
गोविदपुरा,भोपाल, म.प्र.

प्रकृति

● मनमोहन गुप्ता

मां प्रकृति को माना जब तक,
पाया उसका खूब दुलार।
रखा स्वस्थ था उसने हमको,
खूब लुटाया सब को प्यार।
चहूं ओर था निर्मल जल ही,
और प्रवाहित शुद्ध पवन।
हरियाली पूरित थी वसुधा,
खुशहाली थी सभी सदन।
कारखानों का कचरा जल के,
साथ रसायन लाया।
नदियां दूषित हुई हमारी,
कुआं भी घबराया।
परंपरागत स्रोत अभी जब,
भेंट चढ़े प्रदूषण के।
महामारी की आशंका से,
रोई प्रकृति आंसू भर के।
सब मिल कर रखें शुद्ध जल,
ऐसा संकल्प निभाएं।
कचरा और रसायन जल में,
कभी नहीं ढुलकाएं।

- एस.बी.के.गर्ल्स हा.से.स्कूल के पास मंडी अटलबंद, भरतपुर (राज.)
मोबाइल- 6378262325

कुमाउनी कविता :

बल्द भुला

● डॉ. पवनेश ठकुराठी

बल्द भुला ग्वां-ग्वां,
किलै करछै ड्वां-ड्वां।
हरी-भरी घा द्यूल,
र्‌वटनाक गास द्यूल।
बल्द भुला ग्वां-ग्वां,
किलै करछै ड्वां-ड्वां।
चोरि करि मीं चाण ल्यूल,
फिर त्वै कणी मि खिलूंल।
बल्द भुला ग्वां-ग्वां,
किलै करछै ड्वां-ड्वां।
तू म्यर दगड़ू भये,
कैथणी के झन कये।
बल्द भुला ग्वां-ग्वां,
किलै करछै ड्वां-ड्वां।

- लोअर माल रोड, त.खोल्टा,
अल्मोड़ा, उत्तराखंड
मोबाइल- 9528557051

गढ़वाली कविता :

हे पोथुली

● प्रीतम अपछ्याण

तिंदरा टीपियालि पोथुली कब बियाली
घोल बणै पूर्यालि पोथुली कब बियाली?
अंडरु तीन ह्वेगि घोलूंद कब च्वींच्याली
छोप बैठीं रैंदि घोलूंद कब च्वींच्याली?
अंडरु फूटि गैनि देखा धौं हे गैल्याओ
कुंगवा तीन मास का पिंड हे गैल्याओ!
ठूंठ खाब खोलियाली यूं तीन्यूंन
मयेड़ि ल्हैगि चारु खयाली यूं तीन्यूंन।
चड़ो कनू घोला कि अगेर हे देखा धौं
चिड़ि का पांख मूण तोप्यान हे देखा धौं!
इखारा पंख अब ऐग्यान कब उड़ाली
द्वारा पंख रूम उग्यांन कब उड़ाली?
भारि च्वींच्याट यूं तिन्युं को कान कोर्याली
घोल किनारा औण बैठ्यांन फाव मार्याली।
फुतफुत उड़ांदि चखूली जा चखूली
सीखि गैनी उड़ाण चखूली जा चखूली।

-रा.इ.का.अमस्यारी,बागेश्वर, मो.9412924354

पहाड़ा ननां हाल-चाल

मितुरो,

पहाड़ा नना हाल-चाल ठीकै छन। कोरोना तीसेरि लहर क्ये ऐछ। क्वे-क्वे नान-तिन तो बहुत खुशि है रयीं। स्कूल दुबार बंद है गयीं। क्वे-क्वे तो भगवान हूं प्रार्थना करण रयीं। प्रार्थना य छू कि भगवान एक द्वि महैण यानी सालाना इम्तिहान तक कोरोना में स्कूल बंद करै दियो। यदि भगवानैल उनेरि सुणि दी। समझो अच्छे दिन दुबार लौटि बे ऐ गयीं।

य है अच्छे दिन क्ये ह्वाल। जब बगैर पढ़ियै और बगैर इम्तिहान दियै दर्ज बदली जाण रौ। शायद शतयुग में लै यसै भाल दिन नि ऐ हुनाल।

उत्तखंड में चुनाव छन। आज भोउ नान तिन चुनावै कै खेल करण रयीं। एक नान कै कानि में बैठे बे 'जीतेगा भाई जीतेगा....' जसै नार लगाण रयीं। जो लै पार्टी और नेता ननां कैं बैज और कलैंडर दिण रयीं। नान सबूं कैं जम करण रयीं। बांकि फिर लेखूल।

तुमर मितुर,
प. गुसाईराम आचार्य

पहाड़ के बच्चों के हाल-चाल

दोस्तो,

पहाड़ के बच्चों के हाल-चाल ठीक हैं। कोरोना की तीसरी लहर क्या आई। कुछ-कुछ बच्चे तो बहुत खुश हो रहे हैं। स्कूल दोबारा बंद हो गए हैं। कुछ-कुछ तो भगवान से प्रार्थना कर रहे हैं। प्रार्थना ये है कि भगवान एक दो महीने यानी वार्षिक परीक्षा तक कोरोना में स्कूल बंदा करा दो। यदि भगवान ने उनकी सुन दी। समझो अच्छे दिन दोबारा लौट कर आ गए।

इससे अच्छे दिन क्या होंगे। जब बगैर पढ़े और बगैर परीक्षा दिए कक्षा बदल जा रही है। शायद शतयुग में भी ऐसे अच्छे दिन नहीं आए होंगे।

उत्तराखंड में चुनाव हैं। आजकल बच्चे चुनाव का ही खेल कर रहे हैं। एक बच्चे को कंधे पर बिठाकर 'जीतेगा भई जीतेगा.... जैसे नारे लगा रहे हैं। जो भी दल और नेता बच्चों को बैज और कलेंडर दे रहे हैं। बच्चे सभी को जमा कर रहे हैं। बांकी फिर लिखूंगा।

तुम्हारा दोस्त,
प. गुसाईराम आचार्य

कहानी :

नन्हे सांताओं का कमाल ...

● विजयकुमार खत्री

फेनी एक बड़ी कालोनी में रहती है। कालोनी के पास एक सामान्य मुहल्ले में सोम चाचा का घर है। उन्हें आस-पास के सभी बच्चे पहिचानते हैं।

उनके परिवार के बारे में कोई कुछ नहीं जानता। मगर हां, नन्हे-प्यारे बच्चे ही उनकी दुनिया है। वे तरह-तरह के खिलौने बेचते हैं और गरीब व जरूरतमंद बच्चों को मदद करने में उन्हें बहुत खुशी महसूस होती है।

आते-जाते वे बच्चों को चॉकलेट-मिठाइयां बांटते हैं। कोई बच्चा बीमार हो तो उसे अस्पताल भी ले जाते हैं। बच्चों की स्कूल के लिए कपड़े या किताबें भी ला कर देते हैं। वे बच्चों के साथ ढेर सारी बातें करते। उन्हें अच्छा नागरिक बनने की सीख देते।

वे बच्चों के साथ सभी त्यौहार मनाते। बच्चों को दिवाली पर पटाखे लाकर देते और पतंगोत्सव पर पतंग। क्रिसमस के दिन वे सांता क्लॉज बनकर जरूरतमंद बच्चों को तरह-तरह की चीजें और खिलौने देते। उन्हें देख बच्चे भी मुस्कुरा उठते। जब वे किसी भी गली में खिलौने लेकर निकलते तो उनकी आवाज सुन बच्चे दौड़े चले आते। अगर कोई बच्चा रोता हुआ दिखाई देता तो वे उसे इतनी गुदगुदी करते कि वो पेट पकड़कर हंसने ही लग जाता। अगर किसी के पास खिलौने लेने के पैसे ना हो तो वे उन्हें मुफ्त में भेंट के रूप में ही दे देते।

खाली समय में वे बच्चों को इक्ट्ठा कर चुटकुले या मजेदार कहानियां सुनाते। उनकी तरह-तरह की बातें सुनना बच्चों को बहुत भाता। सोम चाचा और बच्चों के बीच अनूठा रिश्ता था। यही कारण था कि फेनी और उसके दोस्तों को सोम चाचा पर आदर भाव था।

कोरोना महामारी का असर सोम चाचा के काम काज पर भी हुआ। उन्हें भी काफी नुकसान हुआ और कर्जा भी हो गया। वैसे उन्हें स्वयं के गुजरान के लिए तो थोड़ा कुछ मिल जाता था। लेकिन उनके पास बच्चों को मदद करने को पैसे नहीं बच रहे थे। इस कारण वे उदास रहने लगे। चिंता के कारण बच्चों के साथ मिलना-जुलना और बातें करना जैसे बंद सा होने लगा।

देखते ही देखते दिवाली का त्यौहार भी आया और बीत गया। सोम चाचा सोचने लगे कि नाताल का त्यौहार आने को है। हर साल की तरह मेरी राह निहारते बच्चों को मैं उनकी जरूरी चीजें-खिलौने कैसे लाकर दूंगा? कोई उधार देने के लिए भी राजी नहीं है। मांगता हूं तो कहते हैं पहले उधारी चुकाओ। पता नहीं मेरी मुश्किल कैसे हल होगी? दूसरी ओर फेन और उसके दोस्तों को भी इस बात का पता चला तो वे इक्ट्ठा होकर इस बारे में सोचने लगे। फेनी ने दोस्तों को कुछ साल पहले का नाताल याद कराया।

उस नाताल के कुछ दिन पहले ही सोम चाचा उनके गली के पास से गुजर रहे थे। तब फेनी का छोटा भाई ज्होन वहां साइकिल चलाना सीख रहा था और अचानक गिरकर बुरी तरह घायल हो गया था। घर पर कोई नहीं था। तभी सोम चाचा ही उसे अस्पताल लेकर गए थे और उसके मम्मी-पापा को फोन कर वहां बुलाया था। तब से सभी उन्हें पहचानने लगे थे और वे ज्होन से मिलने कोलोनी में आने लगे थे।

उसी साल नाताल पर वे पहली बार फेनी की कोलोनी में सांता बनकर आए थे। तब फेनी के सिवा कोई उन्हें पहचान भी नहीं पाया था। उन्होंने लाल रंग का कोट और फुंदे वाली टोपी पहनी थी। उनके पास एक बड़ा थैला भी था। वे अंतर-मंतर जादू जंतर ... बोलकर थैले में से खिलौने, चॉकलेट आदि निकाल कर बच्चों को दे रहे थे और बच्चे उनके साथ नाचते कूदते हुए खूब आनंद उठा रहे थे।

फेनी के भाई ज्होन ने तो गजब ही कर दिया था। वो सोने से पहले प्रार्थना करते हुए कह रहा था, ''सांता जी! मुझे प्यारे

सोमचाचा के लिए एक गिफ्ट चाहिए। मगर मैं उन्हें क्या दूं कुछ सूझ नहीं रहा है। आप जो देंगे मैं वही चीज उन्हें दे दूंगा। वो बहुत भले हैं।'' फिर वह अपने कुशन के पास एक मोजा रख कर सो गया था। फेनी ने जब ये बात सोमचाचा को कही थी। तब दोनों पेट पकड़कर खूब हंसे थे। फिर सोम चाचा ने गुपचुप आकर ज्होन के मोजे में एक सुंदर घड़ी रख दी थी। जब ज्होन सुबह उठा और मोजे में घड़ी पाई तो उसने दौड़ते हुए जाकर सो रहे सोमचाचा को नींद में से जबरदस्ती उठाया और निर्दोष भाव से उनकी दी हुई गिफ्ट उन्हीं को वापस दे दी थी।

सारी वास्तविकता जानते हुए फेनी और सोमचाचा तब खूब हंसे थे। लेकिन इस समय वे आर्थिक नुकसान के कारण उदास थे। फेनी ने दोस्तों के साथ मिलकर कुछ सोचा। फिर एक गजब की बात हुई। सोम चाचा नाताल के दिन निराश और उदास अकेले ही घर में बैठे थे। पुरानी बातें याद करके वे मुस्कुरा रहे थे और दुखी भी हो रहे थे।

उसी समय उनके घर का दरवाजा किसी ने खटखटाया। सोम चाचा ने दरवाजा खोला तो ये क्या? कई सारे नन्हे-नन्हे सांता क्लॉज उनके घर में दौड़ते हुए चले आए। कुछ ही देर में साफ-सफाई करके उन्होंने सोम चाचा के घर को चमका दिया और क्रिसमस ट्री भी सजाया। फिर उन्होंने सोम चाचा को कई सारी चीजें भेंट स्वरूप दी। कोई खाने की चीजें लाया था तो कोई किताब-कपड़े और हां ...साथ में ढेर सारी खुशियां भी ...।

सोम चाचा आसपास के गरीब व जरूरतमंद बच्चों को भेंट दे सकें। इसलिए फेनी के सुझाव से ही उनके दोस्त ये सब लाए थे। नन्हे-नन्हे सांता क्लॉजों की लाई तरह-तरह की चीजें देखकर सोम चाचा मुस्कुरा उठे। उनकी सारी चिंता दूर हो गई। नन्हे सांताओं के साथ सोमचाचा भी सांता बनकर मानवता और प्रेम फैलाने के लिए निकल पड़े।

बच्चों का प्रेम देखकर वे आंसू रोक नहीं पाए। सभी नन्हे सांता उन्हें कहने लगे, ''सोम चाचा! आप बिल्कुल भी चिंता न करिए, जरा हंसकर तो दिखाइए।''

सोम चाचा बच्चों की बात सुनकर हंसना रोक नहीं पाए। उनके साथ वे भी पेट पकड़कर खूब हंसे। नन्हे सांताओं ने तो सच में ही कमाल कर दिया था। इतने सारे सांता क्लॉजों को देखने के लिए आस-पास के सभी बच्चे आनंद और आश्चर्य के साथ दौड़े चले आए। सोम चाचा के चेहरे पर भी बहुत समय बाद मुस्कुराहट देखने को मिली। नन्हे सांताओं की इस पूरी टोली ने उन बच्चों को तरह-तरह की चीज वस्तुएं भेंट के रूप में दी। बच्चों ने भी सांताओं का आभार व्यक्त किया। यह देख सोम चाचा खुशी से चहक उठे। ज्होन ने अपना विश वाला खाली मोजा सोमचाचा को दिखाया। सोमचाचा ने उदास स्वर में कहा, ''अरे इस बार तो मैंने कोई गिफ्ट दी ही नहीं। तुम्हारा विश वाला मोजा खाली रह गया।''

ज्होन ने कहा नहीं सोम चाचा ये मोजा खाली नहीं है। इसमें आपका प्रेम सदा ही भरा पड़ा हुआ है। बच्चों का अपने प्रति लगाव देखकर सोम चाचा मन ही मन मुस्कुराते रहे। इस नाताल पर मानवता की खुशबु चारों ओर फैलती रही।

- डीसा, बनासकांठा (गुजरात)
मोबाइल- 9712551725

साहित्य अकादमी बालसाहित्य पुरस्कार देवेंद्र मेवाड़ी को

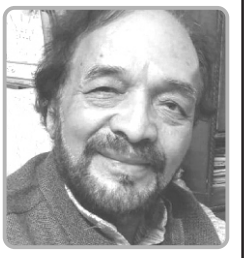

नई दिल्ली। साहित्य अकादमी का बालसाहित्य पुरस्कार इस बार विज्ञान लेखक देवेंद्र मेवाड़ी को दिया गया है। उन्हें यह पुरस्कार उनकी पुस्तक 'नाटक नाटक में विज्ञान' पर दिया गया है। साहित्य अकादमी प्रतिवर्ष 22 भारतीय भाषाओं के बालसाहित्य लेखकों को यह पुरस्कार देती है। हिंदी में यह पुरस्कार देवेंद्र मेवाड़ी को दिया गया है। प्राप्त सूचनानुसार इस वर्ष पंजाबी तथा गुजराती भाषा में यह पुरस्कार किसी को नहीं दिया गया है।

नैनीताल जनपद के ओखलकांडा विकास खंड स्थित कालाआगर गांव में जन्मे देवेंद्र मेवाड़ी कहानी के माध्यम से बच्चों को विज्ञान तथा वैज्ञानिक सोच के प्रसार के लिए अनवरत रूप से कार्य कर रहे हैं। उनकी दो दर्जन से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर कई संस्थाओं ने साहित्य एवं विज्ञान लेखन के लिए सम्मानित किया है। 'मेरी यादों का पहाड़' उनकी चर्चित पुस्तक रही है। जिसमें उन्होंने पहाड़ के कठिन जीवन को दर्शाया है। वे देश के विभिन्न राज्यों में जाकर बच्चों से संवाद करते हैं। मेवाड़ी जी बालप्रहरी तथा बालसाहित्य संस्थान अल्मोड़ा द्वारा आयोजित बालसाहित्य संगोष्ठियों के माध्यम से बालसाहित्यकारों को विज्ञान लेखन के लिए प्रेरित करते रहे हैं। 'बोलो देवीदा' स्तंभ के माध्यम से वे बालप्रहरी के प्रत्येक अंक में बच्चों के विज्ञान से संबंधित सवालों का जबाब भी देते हैं।

जानकारी:

ऐसा क्यों होता है?

● घमंडीलाल अग्रवाल

विज्ञान की तीन शाखाएं हैं - भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान एवं जीवन विज्ञान। विज्ञान की इन्हीं शाखाओं से संबंधित कुछ रोचक प्रश्नोत्तर नीचे दिए जा रहे हैं जो तुम्हारा ज्ञानवर्धन करेंगे।

● नमकीन चीजें खाने के बाद प्यास क्यों लगती है?

नमकीन चीजें खाने के बाद तुम प्यास का अनुभव तो करते ही होगे, है न? लेकिन, क्या इसका कारण तुम्हें ज्ञात है? इसका कारण है कि नमक खाने के बाद शरीर की कोशिकाओं का पानी गुर्दों की ओर चला जाता है जिससे शरीर के अन्य भागों में अस्थायी रूप से पानी की कमी आ जाती है। पानी की इस कमी को पूरा करने के लिए तुम प्यास का अनुभव करते हो तथा पानी पीते हो।

● छींक क्यों आती है?

मानव शरीर में प्रतिवर्ती क्रियाओं के कई उदाहरण पाए जाते हैं। छींक आना भी शरीर की एक प्रतिवर्ती क्रिया है। नाक के अंदर पाई जाने वाली म्यूकस झिल्ली की नाड़ियों में कभी-कभी सूजन आ जाती है अथवा उसमें कोई बाहरी पदार्थ घुस जाता है। इसे दूर करने और खुजली को रोकने के लिए प्राय: छींक आती है।

● हिचकी क्यों आती है?

दरअसल, शरीर की अनुकूलता के विरूद्ध भारी भोजन करने से कभी-कभी पेट में अम्लीयता या गैस बढ़ जाती है। अम्लीयता बढ़ने से डायाफ्राम सिकुड़ जाता है। ऐसे समय में फेफड़ों से जाने वाली वायु रूकावट के कारण एक अजीब सी आवाज उत्पन्न करने लगती है। हां, इसी आवाज को 'हिचकी' का नाम दिया जाता है।

● पसीना क्यों आता है?

यह तो तुम जानते ही होंगे कि शरीर का तापमान 37^0C होता है। जब रक्त का तापमान शरीर के सामान्य तापमान से अधिक हो जाता है तो ठंडक पैदा होनी शुरू हो जाती है। ऐसे में ऑक्सीजन की क्रिया भी धीमी पड़ जाती है तथा शरीर में निहित खेद-ग्रंथियों से पसीना निकलने लगता है। अत: शरीर के तापमान को स्थिर करने के लिए ही यह पसीना निकलता है।

● औरतों की आवाज पतली और पुरूषों की आवाज मोटी क्यों होती है?

तारत्व ध्वनि का एक गुण होता है। ध्वनि का मोटा अथवा पतला होना इसी तारत्व पर निर्भर करता है औरतों की ध्वनि का तारत्व अधिक होता है जिससे उनकी आवाज पतली होती है। इसके विपरीत पुरुषों की ध्वनि का तारत्व कम होता है। अत: पुरुषों की आवाज मोटी होती है।

● गर्मियों में दूध जल्दी क्यों खराब हो जाता है?

गर्मियों में जीवाणु अधिक सक्रिय होते हैं। ये जीवाणु दूध में उपस्थित प्रोटीन, वसा तथा अन्य पदार्थों को किण्वन द्वारा कार्बनिक अम्ल में बदल देते हैं। इससे दूध में अम्लीयता बढ़ जाती है और वह खराब होकर फट जाता है।

● इंजेक्शन लगाने से पहले डॉक्टर त्वचा को अल्कोहल से साफ क्यों करते हैं?

इंजेक्शन लगाने से पहले डॉक्टर त्वचा को अल्कोहल से साफ करते हैं। दरअसल, अल्कोहल त्वचा में उपस्थित सूक्ष्मजीवों को नष्ट कर देता है। इसके अतिरिक्त वह त्वचा को निश्तेज करके स्थानीय निश्चेतक का काम भी करता है। बस यही है इसका कारण।

● भोजन बनाने वाले पौधे हरे क्यों होते हैं?

सूर्य के श्वेत प्रकाश में सात रंग पाए जाते हैं-बैंगनी, नीला, आसमानी, हरा, पीला, नारंगी तथा लाल। जो पौधे सूर्य के प्रकाश में प्रकाश संश्लेषण की क्रिया करके भोजन बनाते हैं। वे सूर्य के प्रकाश में से केवल बैंगनी तथा लाल रंग का ही अवशोषण करते हैं। वे पौधे हरे रंग की तरंग दैर्ध्य को परावर्तित कर देते हैं जिसकी वजह से हरे दिखाई पड़ते हैं।

● मोटापा क्यों आता है?

जब मनुष्य अधिक ऊर्जा तथा वसायुक्त आहार लेता है तथा शारीरिक प्रक्रियाओं द्वारा उसे जला नहीं पाता, तो अतिरिक्त वसा पेट के चारों ओर त्वचा के नीचे जमा हो जाती है। इसी वसा के कारण व्यक्ति मोटा तथा भारी भरकम हो जाता है। मोटापा एक खतरनाक रोग कहलाता है।

● सरसों तथा मूंगफली का तेल द्रव रूप में ही क्यों रहता है?

वसा दो प्रकार की होती है-संतृप्त और असंतृप्त। सरसों तथा मूंगफली का तेल असंतृप्त वसा से निर्मित होता है। असंतृप्त वसा में वसा-अम्लों के अणुओं में एक या अधिक द्वि-आबंध होते हैं। इन वसाओं का द्रव्यांक बहुत कम होता है। अत: ये सदैव तरल अवस्था में ही रहते हैं। इसके विपरीत ताजे मक्खन में द्वि-आबंध नहीं होता है, जिससे वह ठोस अवस्था में रहता है। क्योंकि मक्खन संतृप्त वसा होता है।

- 785/8, अशोक विहार, गुरुग्राम, हरियाणा
मोबाइल-9210456666

उत्तराखण्ड शासन
22वें
उत्तराखण्ड
राज्य स्थापना दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
आज़ादी का अमृत महोत्सव
उत्तराखण्ड राज्य स्थापना दिवस की 21वीं वर्षगाँठ की आप सभी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। इस अवसर पर मैं महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों, राज्य निर्माण के अमर शहीदों, वीर बलिदानी सैनिकों को नमन करते हुए अपनी देवभूमि को सबका साथ, सबका विकास एवं सबका विश्वास की भावना के अनुरुप देश के अग्रणी विकसित राज्यों में स्थापित करने की प्रतिबद्धता अभिव्यक्त करता हूँ। हमारा प्रदेश युवावस्था में प्रवेश कर चुका है तथा हमारी सरकार युवा प्रदेश की आशाओं एवं आकांक्षाओं को पूर्ण करने हेतु संकल्पबद्ध है।
आइये, आज के दिन हम ये प्रण लें कि हमारे प्रधानमंत्री आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी के विजन के अनुरुप हम प्रदेश स्थापना के रजत जयंती वर्ष सन् 2025 तक अपने प्रदेश को भारत का एक श्रेष्ठ राज्य बनाएंगे।
जय हिन्द, जय उत्तराखण्ड
पुष्कर सिंह धामी
मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड
देवभूमि की असीम संभावनाओं पर विश्वास करते हुए आज उत्तराखण्ड की सरकार, यहां सर्वांगीण और सर्वस्पर्शी विकास के महायज्ञ से पूरी ताकत से जुड़ी है। जिस अभूतपूर्व गति से इन्फ्रास्ट्रक्चर निर्माण सहित सभी विकास कार्य हो रहे हैं, वह उत्तराखण्ड के सामर्थ्य को दिखाता है। 21वीं शताब्दी का तीसरा दशक, उत्तराखण्ड का दशक है।
प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
नये इरादे-युवा सरकार
• मुख्यमंत्री महालक्ष्मी योजना में माताओं एवं नवजात बालिकाओं को दी जा रही है आवश्यक वस्तुओं की किट।
• प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना से अब तक प्रदेश में 8.93 लाख किसान हुए लाभान्वित।
• केदारनाथ धाम में आदिगुरु शंकराचार्य की समाधि व प्रतिमा का लोकार्पण और ₹400 करोड़ के निर्माण कार्यों का लोकार्पण एवं शिलान्यास।
• मुख्यमंत्री वात्सल्य योजना के अन्तर्गत 21 वर्ष की आयु तक के युवाओं को ₹3000 प्रतिमाह तथा निःशुल्क राशन व शिक्षा की व्यवस्था।

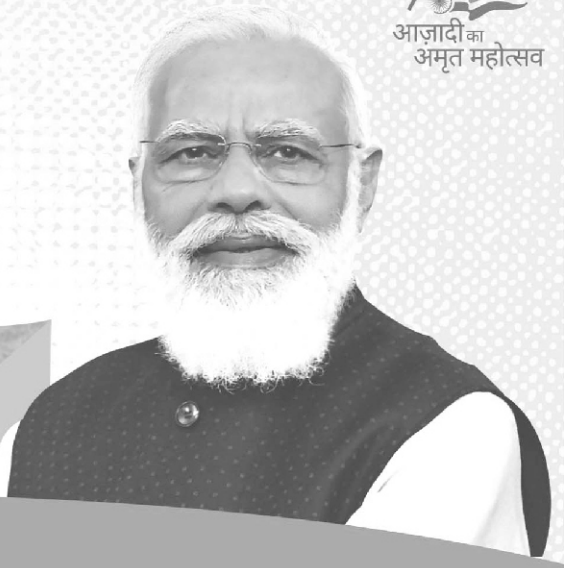

- कोविड से प्रभावित क्षेत्रों के लिए लगभग ₹600 करोड़ का राहत पैकेज। 13 लाख लोगों को मिला लाभ।
- उत्तराखण्ड कोविड वैक्सीनेशन की शत प्रतिशत प्रथम डोज लगाने वाला देश का प्रथम राज्य बना।
- 207 प्रकार की पैथोलॉजी जांच सरकारी अस्पतालों में निःशुल्क।
- NDA/CDS एवं लोक सेवा आयोग की प्रारंभिक परीक्षा पास करने वाले उत्तराखण्ड के होनहार अभ्यर्थियों को राज्य सरकार आगे की तैयारी के लिए दे रही है ₹50000/- की आर्थिक सहायता।
- देश के 27 हजार अस्पतालों में उपचार हेतु आयुष्मान कार्ड मान्य।
- प्रधानमंत्री शहरी आवास योजना (ग्रामीण) में ₹169.87 करोड़ व्यय कर 12662 परिवारों को आवास आवंटित।
- 87 आक्सीजन जनरेशन प्लांट स्थापित, 91 प्रतिशत की वृद्धि हुई।
- 5 महीने तक लगभग 35 हजार आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों को ₹2-2 हजार की प्रोत्साहन राशि दी जायेगी।
- आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों के मानदेय में ₹1800 तथा मिनी आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों तथा आंगनवाड़ी सहायिकाओं के मानदेय में भी की गई ₹1500 की मासिक वृद्धि।
- आशा एवं आशा फेसिलिटेटर को 5 महीने तक ₹2-2 हजार की प्रोत्साहन राशि।
- हरिद्वार और पिथौरागढ़ के मेडिकल कॉलेजों के लिए ₹140 करोड़ की धनराशि स्वीकृत।
- कोविड उपचार में तैनात चिकित्सकों को ₹10-10 हजार की प्रोत्साहन राशि।
- राजकीय स्कूल के कक्षा 10 व 12 तथा डिग्री कॉलेज में अध्ययनरत छात्रों को निःशुल्क मोबाइल टेबलेट।
- भारत नेट फेज-2 में 6 हजार ग्राम पंचायतों को इंटरनेट से जोड़ा गया।
- अतिथि शिक्षकों का वेतन ₹15 हजार से बढ़ाकर ₹25 हजार।
- मुख्यमंत्री घस्यारी कल्याण योजना के तहत 2 रुपये प्रति किलो पौष्टिक चारा उपलब्ध।
- प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के अन्तर्गत 62 लाख व्यक्तियों को 5 किलो चावल और 1 किलो दाल निःशुल्क।
- उत्तराखण्ड से द्वितीय विश्वयुद्ध की वीरांगना एवं पूर्व सैनिक की पेंशन ₹8 हजार से बढ़ाकर ₹10 हजार प्रतिमाह की गई।
- विभागों में लगभग 22 हजार रिक्त पदों पर भर्ती प्रक्रिया गतिमान।
- एम.बी.बी.एस. इंटर्न्स के स्टाइपेंड को ₹7500 से ₹17000 किया गया।
- समूह 'ख' एवं 'ग' के रिक्त पदों पर भर्ती हेतु अधिकतम आयु सीमा में एक वर्ष की छूट।
- टनकपुर-बागेश्वर, डोईवाला से गंगोत्री-यमुनोत्री रेल-लाइन के सर्वे की मिली सहमति।
- हल्द्वानी, देहरादून, हरिद्वार, रुद्रपुर में आउटर रिंग रोड का होगा निर्माण।
- "सुन्दर लाल बहुगुणा प्रकृति संरक्षण पुरस्कार" प्रारम्भ करने का निर्णय।
- राजकीय विद्यालयों के कक्षा 12 के 100 टॉपर्स को 5 साल तक उच्च शिक्षा की तैयारी हेतु छात्रवृत्ति।
- युवाओं को बड़ी सौगात, प्रदेश के सभी प्रतियोगी परीक्षाओं की फीस माफ।
- उत्तराखण्ड के नेशनल पार्कों व चिड़ियाघरों में 18 साल तक के बच्चों का निःशुल्क प्रवेश।
- किसानों को ₹3 लाख और महिला स्वयं सहायता समूहों को ₹5 लाख तक का ऋण बिना ब्याज के।
- ऑल वेदर रोड परियोजना के अन्तर्गत स्वीकृत 670 किमी. लम्बाई के सापेक्ष 645 किमी. लम्बाई में कार्य गतिमान।
- ऋषिकेश-कर्णप्रयाग रेल लाइन का कार्य प्रगति पर।

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा जनहित में जारी | www.uttarainformation.gov.in | uttarakhandDIPR | DIPR_UK | uttarakhand DIPR

महिला हेल्पलाइन नं. 1090 | किसान कॉल सेंटर नं. 1551 | सी.एम.हेल्पलाइन नं. 1905 | चाइल्ड हेल्पलाइन नं. 1098 | आयुष्मान उत्तराखण्ड हेल्पलाइन नं. 104 | आपदा कॉल सेन्टर नं. 1070

अगर न होते

● बलदाऊ राम साहू

अगर ना होते सूरज भैया,
कौन सवेरा लाता।
कहां से आती नन्ही किरणें,
धूप कौन दे जाता।
कैसी चलती पवन पुरवा,
पंछी कैसे गाते।
कौन हितैषी आकर भैया,
हमको भोर जगाते।
कांव-कांव चिल्लाने वाले,
कौए भी ना आते।
सोए रहते दोपहरी तक,
और बुद्धू कहलाते।
ना गर्मी ना सर्दी होती,
बादल ना बन पाते।
सूखी रहती ताल-तलैया
हम प्यासे रह जाते।

- वार्ड नंबर 53,न्यू आदर्श नगर,
दुर्ग, छत्तीसगढ़
मोबाइल -9407650458

तितली रानी

● डॉ. राकेश चक्र

तितली के हैं पंख निराले,
चितकबरे 'औ' भूरे काले।
हरे, बैगनी, नीले-पीले,
मखमल से अद्भुत मतवाले।
प्यारे पंख लिए इठलाती,
कभी न पल भर को सुस्ताती।
बच्चों को ये तितली भाती,
फूलों का है रस ये पाती।
बच्चों सी है तितली रानी।
दोनों की है प्रेम कहानी।
इनका कब है कोई सानी,
कहती हमसे प्यारी नानी।

90 बी, शिवपुरी,
मुरादाबाद ,उ.प्र.
मोबाइल-9456201857

कुहरा

● डॉ विष्णु शास्त्री 'सरस'

कुहरा छाया है हर ओर,
घिरा अंधेरा है घनघोर।
पर्वत, घाटी, खेत, रास्ते,
सबको कुहरे ने घेरा है।
क्यों धरती के लिए न जाने,
सूरज ने भी मुंह फेरा है।
उठता हुआ धुआं सा दिखता,
है हमको बाहर हर भोरा।
दृश्य सामने का कोई भी,
नहीं नजर में आ पाता है।
इस कुहरे के कारण अब तो,
हर पल ही मन घबराता है।
भूमंडल की बात करें क्या,
गुम है अंतरिक्ष का छोर।
कुहरा छाया है हर ओर,
घिरा अंधेरा है घनघोर।

- 'सिद्धायन' भैरवां, चंपावत
मोबाइल - 9411347934

काली बिल्ली

● राजा खुगशाल

काली बिल्ली, चूहा भूरा,
बिल्ली ने जब उसको घूरा।
उछल-उछल कर चूहा भागा,
बोल पड़ा इतने में कागा।
अपने बिल से उचक-उचक कर,
देख रहा था चूहा बाहर।
चूहा थर-थर कांप रहा था,
बाहर खतरा भांप रहा था।
कौए ने पांखें खुजलाई,
बिल्ली ने आंखें मटकाई।
चूहा बिल से देख रहा था,
मिट्टी बाहर फेंक रहा था।
चूहा बोला सुन लो बिल्ली,
तुम हो बहुत बड़ी निठल्ली।
चूहा बिल से बिल्ली की,
उड़ा रहा था यों खिल्ली।

- वी-208, आम्रपाली जोड़िएक
सेक्टर - 120, नोएडा (उ.प्र.)
मोबाइल-8750484177

कबूतर

● डॉ. रामनिवास 'मानव'

चौपाटी से जुड़ा कबूतर,
हिल-मिल कर चुगता है दाना।
सुनता और सुनाता गाना,
आहट पाकर उड़ा कबूतर।
लगे गुटर-गूं बड़ी सुहानी,
प्रेम भाव हो या अंदेशा।
पहुंचा देता यह संदेशा,
इसकी अपनी अलग कहानी।
इसने है धरती को देखा,
इसने है अंबर को नापा।
लेकिन खोया कभी न आपा,
कभी न लांघी सीमा-रेखा।
सबको प्यारा लगे कबूतर,
रखता हरदम साफ-सफाई।
कभी न करता मार-पिटाई,
सबसे न्यारा लगे कबूतर।

- 571, सैक्टर-1, पार्ट-2,
नारनौल (हरियाणा)
मोबाइल-8053545632

जलेबी

● पवन पहाड़िया

मुझको भाए गरम जलेबी,
मजा दिला दे गरम जलेबी।
मीठा मीठा सबको करती,
निभा स्वयं का धरम जलेबी।
हलवाई जब इसे बनाता,
रस झर झरता गरम जलेबी।
खाने को उस दिन ही मिलती,
जिस दिन अच्छे काम जलेबी।
दादाजी के दांत नहीं पर,
खा लेते गरम जलेबी।
मैदा चीनी घी से बनती,
भेद नहीं बस गरम जलेबी।
बारहों मास सभी को भाए,
सीधी मुह में गरम जलेबी।

- आयुर्वेदिक अस्पताल के पास ,पो-डेह,
जिला-नागौर (राज़) 341022
मोबाइल -9414864009

कहानी :

सब्र की कीमत

★हरीश कुमार 'अमित'

"मम्मी! पापा!" मेरी कहानी को प्रथम पुरस्कार मिला है!" ख़ुशी से उछलता हुआ शशांक उस कमरे की ओर भागा, जिसमें उसके मम्मी-पापा बैठे सुबह की चाय पी रहे थे।

अभी-अभी अख़बार वाला अख़बार फेंक कर गया था। साथ में बच्चों की पत्रिका 'महक' का नया अंक भी था।

इस पत्रिका ने पिछले वर्ष एक बाल कहानी प्रतियोगिता आयोजित की थी। जिसमें सिर्फ़ 14 वर्ष तक के बच्चे भाग ले सकते थे। ताज़ा अंक में उसी प्रतियोगिता के परिणाम की घोषणा हुई थी।

"अरे वाह, बेटू! क्या बात है!" मम्मी ने चाय का कप पास बड़ी तिपाई पर रखा और कुर्सी से उठकर शशांक को गले से लगा लिया।

तब तक पापा ने शशांक के हाथ से 'महक' का अंक अपने हाथ में ले लिया था और प्रतियोगिता का परिणाम पढ़ने लगे थे।

"मगर शशांक! यह तो वही कहानी है न जो पिछले दिनों 'भारतवर्ष टाइम्स' में छपी थी।"

पापा पूछने लगे, "पापा! मैं क्या करता। 'महक' की कहानी प्रतियोगिता में कहानी भेजे हुए कई महीने हो गए थे। लेकिन प्रतियोगिता का परिणाम आ ही नहीं रहा था। इसलिए मैंने वह कहानी 'भारतवर्ष टाइम्स' में भेज दी थी। कुछ ही दिनों में वह उसमें छप भी गई थी।" शशांक बताने लगा।

"बेटे! थोड़ा सब्र रखना चाहिए था न। पत्र-पत्रिका वाले जब कोई प्रतियोगिता आयोजित करते हैं। तो प्राप्त प्रविष्टियों का मूल्यांकन करने और पुरस्कार विजेताओं का निर्णय करने में समय तो लगता ही है। कभी-कभी किन्हीं और कारणों से ज़्यादा समय भी लग जाया करता है।" पापा समझाने लगे शशांक को।

"मगर पापा! कई महीनों तक 'महक' की प्रतियोगिता का परिणाम आया ही नहीं था। मैं बीच-बीच में उनसे फोन पर पूछता भी रहता था। मगर हर बार मुझे यही उत्तर मिलता था कि अभी टाइम लगेगा।" शशांक ने सफ़ाई दी।

"अब क्या होगा!" चिंतित-सी आवाज़ में मम्मी ने पूछा।

"अब मुझे पुरस्कार नहीं मिलेगा क्या, पापा?" शशांक की आवाज़ में भी चिंता का भाव था।

"बेटे! पुरस्कार तो तुम्हारे नाम का घोषित हो ही चुका है। यह तुम्हें मिल ही जाएगा और तुम्हारी बाल कहानी भी 'महक' में छप जाएगी, लेकिन उसके बाद" कहते-कहते पापा रुक गए।

"उसके बाद क्या, पापा?" शशांक ने उत्सुकता-भरी आवाज़ में पूछा। मम्मी भी प्रश्नवाचक नज़रों से पापा की ओर देख रही थीं।

"उसके बाद यह होने की पूरी-पूरी संभावना है कि कुछ ऐसे लोग, जिन्होंने 'भारतवर्ष टाइम्स' में छपी तुम्हारी कहानी पढ़ी होगी, 'महक' के संपादक को यह शिक़ायत भेज सकते हैं कि यह कहानी पहले से ही छपी हुई है।" पापा बता रहे थे।

"फिर क्या होगा, पापा?" चिंताभरी आवाज़ में शशांक पूछने लगा।

"उसके बाद यह हो सकता है कि 'महक' के संपादक तुमसे स्पष्टीकरण मांगें ओर अपनी पत्रिका में भी यह बात छाप दें। तुम्हारा पुरस्कार वापिस भी लिया जा सकता है और तुम्हें काली सूची (ब्लैक लिस्ट) में भी डाला जा सकता है। काली सूची में डालने का मतलब यह होता है कि भविष्य में वे तुम्हारी कोई रचना नहीं छापेंगे।" पापा के मुंह से यह सब सुनकर शशांक के तो जैसे होश ही उड़ गए। उसकी आंखों से टप-टप आंसू बहने लगे। कुछ देर पहले पुरस्कार मिलने की जो ख़ुशी

उसके मन में थी, वह न जाने कहां उड़न-छू हो गई थी। दरअसल यह सब हुआ ही इसी कारण था कि शशांक में सब्र की कमी थी। उसे हमेशा जल्दी मची रहती। किसी चीज़ की प्रतीक्षा करना तो उसे बहुत मुश्किल काम लगता था। वह हमेशा यही चाहता था कि उसका हर काम झटपट हो जाए।

सब्र न कर पाने की अपनी इसी आदत के कारण वह 'महक' की बाल कहानी प्रतियोगिता में भेजी अपनी रचना के परिणाम की प्रतीक्षा नहीं कर पाया था। वही कहानी उसने 'भारतवर्ष टाइम्स' में भेज दी थी। जहां वह छप भी गई थी।

शशांक को लिखने का शौक तब से लग गया था। जब वह चौथी कक्षा में ही पढ़ता था। अब आठवीं कक्षा तक आते-आते उसकी कई कहानियां विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छप चुकी थीं। एक-दो कहानी प्रतियोगिताओं में उसे पुरस्कार भी मिला था।

"दो फ़ायदे? पुरस्कार न मिलना तो नुकसान की ही बात है न।" मम्मी बोल उठीं।

"ऐसा है कि अगर शशांक सारी बात पत्रिका वालों को बता देगा तो वे उसे पुरस्कार तो किसी भी हालत में नहीं देंगे। भविष्य के लिए इसे काली सूची में तो नहीं डालेंगे न।" पापा कह रहे थे। "हां, वो तो है।" कुछ सोचते हुए मम्मी बोलीं।

"और दूसरा फ़ायदा क्या होगा, पापा?" शशांक ने सवाल किया।

"दूसरा फ़ायदा यह होगा बेटे कि तुम्हारी यह जो सब्र न करने वाली आदत है न, उस पर रोक लगेगी।" पापा ने उत्तर दिया। "सही बात है।" मम्मी ने पापा की बात का समर्थन किया। "बिल्कुल सही कहा आपने पापा। मैं आज ही 'महक' के संपादक को सारी बात सच-सच लिखकर बता देता हूं।" शशांक बोला। "वेरी गुड, बेटू!" मम्मी बोल उठीं।

"और एक और बात मुझे यह कहनी है कि आज की घटना के बाद मुझे समझ आ गई है। मैं अब सब्र से काम लिया करूंगा और जल्दबाजी में नहीं रहा करूंगा ।" शशांक ने कहा।

यह सुनते ही पापा झट से उठे और उन्होंने शशांक को गले से लगा लिया। मम्मी भी प्रशंसा भरी नज़रों से शशांक को देख रही थीं।

- 304 एम.एस.4, केंद्रीय विहार, सेक्टर 56, गुरुग्राम, हरियाणा
मोबाइल -9899221107

थॉमस अल्वा एडिसन का बचपन

● कृपालसिंह शीला, सरपट्टा, बासोट, अल्मोड़ा

बल्ब के आविष्कारक थॉमस अल्वा एडिसन को तो हम सब जानते हैं। उन्होंने बल्ब का आविष्कार किया। तुम्हें पता है बचपन में उन्हें मंदबुद्धि बच्चा कहा जाता था। एक दिन उनके स्कूल वालों ने एडिसन को एक पत्र दिया और कहा कि इसे केवल अपनी मां को ही देना। जब वह पत्र मां ने पढ़ा तो मां रोने लगी। एडिसन के पूछने पर मां ने बताया कि स्कूल वालों ने लिखा है कि हमारा स्कूल बहुत छोटा है। आपका बच्चा बहुत ही होनहार है। इसे घर पर ही पढ़ाएं। इस पर एडिसन का स्कूल जाना बंद हो गया। उन्होंने घर पर ही अपनी पढ़ाई की। बाद में उनकी मां ने उन्हें आविष्कार से संबंधित पुस्तक दी। उसे पढ़कर उनका संसार ही बदल गया। उन्होंने अपने घर पर ही प्रयोगशाला बनाई। वे अपना अधिक समय अपनी प्रयोगशाला में बिताते थे। हर समय आविष्कार के लिए सोचते हुए वे दूसरों को समय तक नहीं दे पाते थे। इस कारण लोग उन्हें पागल भी समझते थे। लेकिन अपने कार्य के प्रति पागलपन तथा लगन ने उन्हें एक आविष्कारक बतौर समूचे विश्व में एक अलग पहचान दिलाई। मां के मरने के बाद एडिसन को एक दिन स्कूल का वह पत्र मिल गया था जिसमें लिखा था कि आपके बच्चे को हम नहीं पढ़ा सकते हैं क्योंकि.....। अपनी मां की इस महान सोच का उल्लेख भी अपनी लेखनी में उन्होंने किया है। कहते हैं कि बचपन में एक दिन अल्वा एडिसन ने देखा कि बहुत सारी चिड़िया नाली से कीड़े खा रही हैं। उनके मन में विचार आया कि संभवतया कीड़े खाने के कारण ही इनमें उड़ने की ताकत आती है। बस क्या था। अल्वा एडिसन ने बहुत से कीड़े जमा किए। उन कीड़ों के घोल को वे अपने दोस्त पर प्रयोग करना चाहते थे। उन्हें लगा कि कीड़े के घोल को पीकर उनका दोस्त भी आसमान में उड़ सकता है।

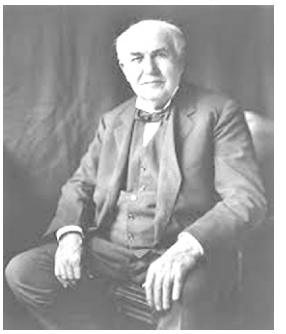

महान अमेरिकन एडिसन जिसे बल्ब का आविष्कार माना जाता है। तुम्हें पता है लगभग 10 हजार से भी अधिक बार वे अपने कार्य में असफल रहे। बाद में उन्होंने बल्ब का आविष्कार कर ही लिया। उनका कहना था कि हम लोगों की सबसे बड़ी कमजोरी यह है कि हम जल्दी ही अपनी हार मान लेते हैं। कामबाया होने का सबसे निश्चित तरीका है। हमेशा एक और बार प्रयास करना।

जानकारी:

आसमान में उड़ती परियां

● गोवर्धन यादव

आपने कभी आसमान में उड़ती हुई परियों को देखा है? प्रश्न सुनते ही आप कह उठेंगे कि परियां-वरियां नाम की कोई चीज होती ही नहीं हैं। या फ़िर यह कहेंगे कि किसी सीरियल में हमने उसे आसमान से उतरते देखा है। उसके हाथ में एक जादू की छड़ी होती है और वह पलक झपकते ही कहानी के हीरो की मदद करती है। अथवा उसके लिए कोई उपहार लेकर आती है। वह मुस्कुराते हुए प्रकट है और फ़िर गायब भी हो जाती है। यह बात सच है कि अब तक कोई परी देखी नहीं गई है। परी होने की कल्पना भर की गई है। मेरा अपना मत है कि आकाश में उड़ती सुंदर सी किसी तितली को देखकर परी होने की कल्पना की गई होगी।

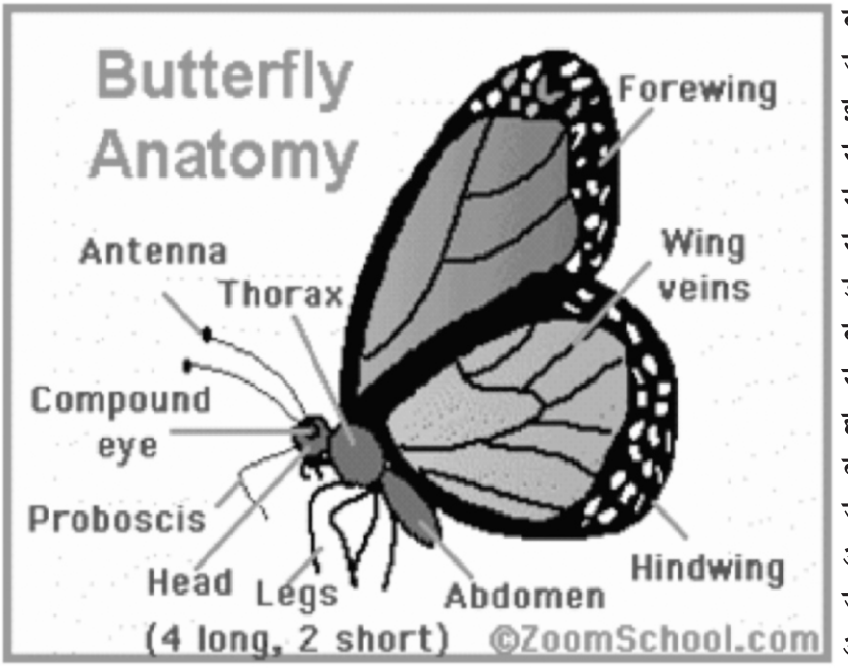

हम जिस परी की बात करने जा रहे हैं। वह किसी खूबसूरत परी से कम नहीं है। उस परी का नाम है-रंग-बिरंगी तितलियां। ये तितलियां हवा में बलखाती-उड़ती हुई कभी इस डाल पर तो कभी उस डाल पर खिले सुवासित फूलों पर जा बैठती हैं और उसका रस पीकर उड़ जाती हैं। वातावरण में लगातार आ रहे बदलाव तथा कीटनाशक दवाओं के प्रयोग के चलते यह खूबसूरत जीव दुनिया के पटल से लगभग गायब हो रहा है। अन्यथा बारिश की पहली फ़ुंवार के साथ आप अनेक प्रकार की रंग बिरंगी तितलियों को हवा में तैरते देख सकते थे। खैर न अब वे दिन हैं और न तितलियां। पर जो भी हैं, वे गजब की हैं। हवा में मटकते इन जीवों के पंखों से तो नजरें हटाए नहीं हटती। बड़ा गजब का चुंबकीय आकर्षण होता है इनके परों में।

प्रकृति ने पूरे मनोयोग से, बड़े सलीके से, धैर्यपूर्वक इनके पंखों पर चित्रकारी की है। उनके पंखों पर कहीं एक आंख बनी है, तो कहीं दो या फ़िर इससे भी ज्यादा। तितलियों के परों पर बनी इन्हीं आंखों के आधार पर इनके नाम रखे गए हैं। केसरिया रंग की तितली पर बनी दो बड़ी-बड़ी आंखें देखकर उसको नाम दे दिया गया- पीकाक पेंसी। नीली तितली को नाम दिया गया 'ब्लू पेंसी।' किसी को कामन लाइम, किसी को टेल्ड या काली तितली को कामन-क्रो आदि-आदि। हजारों प्रकार की तितलियां पाई जाती हैं।

तितलियों का नामकरण शायद हमने नहीं किया। जो भी नाम मिलते हैं, वे सब अंगरेजी में ही मिलते हैं। स्पस्ट है कि हमने कभी भी इस बात को लेकर गंभीरता से नहीं सोचा। बस तितली देखकर खुश होते रहे। जबकि पश्चिम के लोगों ने इन नन्हे जीवों के प्रति अपनी दिलचस्पी दिखलाई। उनके जीवन-चक्र के बारे में पूरी जानकारियां इकठ्ठी की। इनके नाम रखे और इनके संरक्षण के लिए उपाय खोजे और उनके संग्रहालय तक बना डाले। फ़्लोरिडा म्युजियम के नाम से विख्यात एक संग्रहालय है। इसके साथ ही इंग्लैंड सहित करीब बत्तीस देशों ने इन नन्हे जीवों के लिए वर्षावन आदि बनाए। जहां यह जीव पलता-बढ़ता और अंत में म्युजियम में सुरक्षित रख दिया जाता है।

तितली जिसे हम अंगरेजी में बटरफ़्लाई कहते हैं। यह कीट वर्ग का सामान्य सा प्राणी है। यह सब जगह पाया जाता है। ठोस आहार न लेकर यह फूलों का रस पीती है। इनका दिमाग अन्य कीटों से ज्यादा तेज गति से चलता है। कोस्टारिका में तेरह सौ प्रकार की तितलियां पाई गई हैं। विश्व में सबसे तेज गति से उड़ने वाली तितली का नाम 'मोनार्क' है। जो एक घंटे में सत्रह मील तक उड़ सकती है। सबसे बड़ी तितली 'जायंट वर्डीवग' है। इसके पंखों का फ़ैलाव करीब बारह इंच होता है। तितली के शरीर के मुख्य तीन भाग होते हैं। पहला सिर दूसरा वक्ष और तीसरा दो जोडी पंख। इनके छः पैर होते

हैं। प्रत्येक पैर में तीन जोड़ होते हैं। सिर पर दो जोड़ी आंख, मुंह में घड़ी की स्प्रिग की तरह 'प्रोवोसिस' नामक खोखली सूंडनुमा जीभ होती है। फूलों पर बैठकर ये इसी से फूलों का रस चूसकर पीती हैं। इनका जीवन ज्यादा लंबा नहीं होता है। यह एक लिंगी प्राणी है। नर और मादा अलग-अलग होते हैं। मादा तितली पत्ते के नीचे अपने अंडे देती है। कुछ समय बाद ये लार्वा में बदल जाते हैं। कुछ समय पश्चात लार्वा एक खोल के रुप में बदल जाता है जिसे 'प्यूमा' कहा जाता है। और अंत में यह तितली के रुप में ढलकर आसमान में उड़ने लगती है।

सारी तितलियां लेपिडप्टेरा वर्ग की होती हैं। यह एक ग्रीक शब्द है। 'लेपिडोस' का अर्थ है स्कल्स और पिटेरा (ptera) का मतलब है उनके 'पंख'। यह बहुत बडा वर्ग है और इसमें कई प्रकार की तितलियां पाई जाती हैं। इनके 15 हजार से ज्यादा प्रकार पूरे विश्व में पाए जाते हैं। कुछ प्रमुख तितलियों का विवरण यहां दिया जा रहा है।

मोनार्क प्रजाति की तितलियां अलग-अलग रंगों में तथा अनेक आकारों में पाई जाती हैं। लेकिन संतरे के रंग तथा काले रंग की तितलियां देखने में अत्यंत ही सुंदर होती हैं। मादा तितली के पंख गहरे रंग के होते हैं। जबकि नर तितली के पंखों के बीच धारियां देखी जाती हैं। इनके पंखों के आधार पर हम नर अथवा मादा तितली की पहचान कर सकते हैं। मादा तितली एक पेड़ पर सैकड़ों अंडे देती है। इसकी एक विशेषता यह भी है कि यह कई किमी. तक की यात्रा बड़े आराम से कर लेती

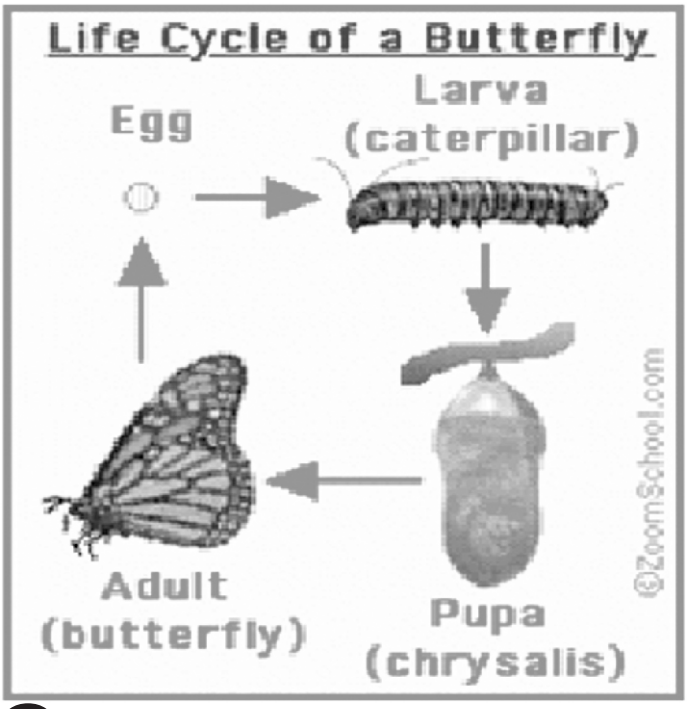

प्रस्तुति- चांद मोहम्मद घोसी, नन्हा बाजार, मेड़ता सिटी (राजस्थान)

है। आस्ट्रेलिया और उत्तरी अमेरिका के समुद्र तटों पर यह बहुतायत से देखने को मिलती हैं। तितलियां अपने पसंद के मौसम के हिसाब से एक इलाके से दूसरे इलाके में स्वत: आती-जाती रहती हैं। अमेरिकन नाट बटरफ्लाईतितली का रंग काले-भूरे रंग का होता है। जिस पर सफ़ेद, संतरे के रंग अथवा गहरे हरे तथा पीले रंग की धारियां होती हैं। यह उत्तरी तथा दक्षिण अमेरिका में पाई जाती है।

गार्डन टाइगर तितली को कुदरत ने टाइगर की शक्ल में ढाल दिया है। जिस तरह शेर के शरीर पर पट्टियां होती हैं। ठीक उसी तरह की पट्टियां गार्डन टाइगर तितली में देखे जा सकते हैं। इन्हीं पट्टियों को देखकर इसका नाम टाइगर तितली पड़ा। नीले रंग को देखकर ही एक तितली को 'नीली तितली' का नाम मिला। मादा तितली का रंग नर तितली के मुकाबले उतना आकर्षक नहीं होता। तितली की सुंदरता देखकर विस्मय होता है। जब यह किसी फूल या डाली पर बैठती है तो इसके शरीर पर भूरे-नीले रंग के आकर्षक छल्ले दिखाई देते हैं।

गोलिआय वर्डविंग तितली क्वीन अलिक्जंडर नामक तितली से थोडी छोटी, मगर सबसे बड़ी तितली होने का रुतबा इस तितली को प्राप्त है। काले-पीले-तथा हरे रंग की इस तितली के पंख 11 इंच तक के होते हैं। इसके पंखों पर कुदरत ने बड़े ही मनोहारी ढंग से रंगों का संयोजन कर इसे बेहद ही खूबसूरती दी है। वर्षा-वनों मे इसे देखा जा सकता है। केलीफोर्निया डॉगफेस तितली को देखकर लगता है कि कुदरत

शेष पृष्ठ 47 पर .....

जानकारी:

बोलो देवीदा

● देवेंद्र मेवाड़ी

विज्ञान व वैज्ञानिक सोच को जन-जन तक पहुंचाने के लिए प्रयासरत बच्चों के प्रिय लेखक आदरणीय देवेंद्र मेवाड़ी जी ने बालप्रहरी के बच्चों द्वारा पूछे गए सवालों का जबाब हर अंक में देने की सहमति प्रदान की है। आप भी कोई सवाल पूछ सकते हैं। आपका उत्तर अगले अंक में आपके नाम/प्रश्न के साथ प्रकाशित किया जाएगा। आदरणीय मेवाड़ी जी का पता व फोन अंत में दिया है।आप उनसे सीधे भी संपर्क कर सकते हैं।

प्रश्न: आपकी किताब 'विज्ञान की दुनिया' पढ़ रही हूं। 'कैसे बनी हमारी पृथ्वी' वाले पाठ में लिखा है- नेबुला में गैसों के सूक्ष्म कण थे। गुरुत्वाकर्षण के कारण वे सूक्ष्म कण खिंच कर उस बादल के बीच में जमा होने लगे। जाने क्या हुआ कि वे घूमने लगे। पूरा बादल सिमटकर लट्टू की तरह घूमने लगा। इसके कारण उसके बीच के भाग में गर्मी पैदा हो गई। गैसों का गोला हमारा सूरज बन गया। उससे छिटके पदार्थ से ग्रह और उपग्रह बन गए, हमारा सौरमंडल बन गया। हमारी पृथ्वी भी बन गई। ये कैसे हुआ होगा?

– दीपिका, नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, नानकमत्ता

उत्तर: दीपिका! यह समझ लो कि असीम अंतरिक्ष में जो खाली स्पेस है। उसमें इंटरस्टैलर गैसों के अति सूक्ष्म कण होते हैं। कहते हैं, ऐसे ही अति सूक्ष्म कणों का एक विशाल बादल था। आसमान में उमड़ने वाले जल-वाष्प के बादलों जैसा नहीं। बल्कि, बहुत विशाल क्षेत्र में वे अति सूक्ष्म कण फैले हुए थे। तब शायद कहीं किसी तारे में विस्फोट हुआ होगा। इस घटना को सुपरनोवा कहते हैं। तो, शायद उस विस्फोट से सूक्ष्म कणों के विशाल बादल में हलचल हुई होगी और वह लट्टू की तरह घूमने लगा होगा। गुरुत्वाकर्षण के कारण अति सूक्ष्म कण केंद्र की ओर इकट्ठा हो गए होंगे। इस तरह घूमते-घूमते वह विशाल बादल गैसों की एक विशाल चकती यानी डिस्क में बदल गया होगा और हमारा सूर्य बन गया होगा। उससे जो पदार्थ बाहर छिटका होगा। उससे ग्रह-उपग्रह बन गए होंगे जो विशाल सूर्य के गुरुत्वाकर्षण के कारण उसकी पकड़ में चारों ओर चक्कर लगाने लगे।

प्रश्न: लगातार एक चीज को देखते रहने पर आंखों से पानी आने लगता है?

– संतोषी, चिन्यालीसौड़

उत्तर : संतोषी! जब हम आंखें देर तक खुली रखते हैं तो 1-2 मिनट बाद ही उसकी सबसे बाहर की परत यानी कॉर्निया सूखने लगती है। आंख की यह परत बहुत नाजुक होती है और रोशनी तथा हवा से नमी उड़ने के कारण सूखने लगती है। इस कारण आंख में जलन महसूस होने लगती है। आंखों को नम बनाए रखने के लिए प्रकृति ने आंख के भीतर आंसूओं की ग्रंथियां बनाई हैं। जलन होने पर वे ग्रंथियां तेजी से आंसू छोड़ने लगती हैं और हमें लगता है कि आंखों से पानी निकल रहा है।

प्रश्न: हमें खर्राटे क्यों आते हैं? वे सोने के बाद ही क्यों आते हैं?

–चंदन नेगी, देहरादून

उत्तर: चंदन! असल में होता यह है कि हमारे नाक-मुंह से लेकर सांस नली तक हवा सीधे आती-जाती रहती है। इसमें हमारे मुंह, नाक और गले की मांसपेशियां मदद करती हैं। जब हम जागते रहते हैं या चलते-फिरते हैं तो ये मांसपेशियां सही ढंग से काम करती रहती हैं और हवा की आवाजाही आराम से चलती रहती है। लेकिन सोने पर धीरे-धीरे पूरा शरीर आराम करने लगता है। शरीर की सभी मांसपेशियां भी थोड़ा विश्राम करने के लिए ढीली पड़ जाती हैं। हमारे मुंह, नाक और गले में हवा की आवाजाही का नियंत्रण करने वाली मांसपेशियां भी ढीली पड़कर आराम करने लगती हैं। कई लोगों में इन मांसपेशियों में मांस भी अधिक और फ्लॉपी होता है। इस कारण पेशियों के आराम करने पर वायु मार्ग संकरा हो जाता है। तब जोर देकर सांस लेनी पड़ती है जिसके कारण बढ़े हुए मांस में फड़फड़ाहट होती है। इसीलिए खर्राटे आते हैं। कई लोग बढ़े हुए फालतू मांस को सर्जरी करके निकलवा देते हैं। जिसके कारण उन्हें खर्राटों से निजात मिल जाती है।

– सी-22, शिव भोले अपार्टमेंट्स प्लाट नं. 20, सैक्टर-7, द्वारका फेज-1, नई दिल्ली- 110075, फोन: 98183460
E-mail: dmewari@yahoo.com

ज्ञान विज्ञान बुलेटिन

भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा जन सहयोग से प्रकाशित ज्ञान विज्ञान बुलेटिन मासिक पत्रिका के लिए विज्ञान, जन विज्ञान, महिला मुद्दों एवं सम-सामयिक विषयों पर आलेख/ रचनाएं/सुझाव सादर आमंत्रित हैं। मेल से भेजने पर केवल ***Kurtidev 10 font*** से रचनाएं भिजवाएं। बुलेटिन नियमित मंगवाने के लिए तीन वर्ष का सदस्यता शुल्क 160/- मनीआर्डर, चैक या बैंक ड्राफ्ट से संपादक, ज्ञान विज्ञान बुलेटिन,भारत ज्ञान विज्ञान समिति मुहल्ला-खोल्टा, अल्मोड़ा उत्तराखंड 263601 के पते भिजवाएं। बालप्रहरी एवं ज्ञान विज्ञान बुलेटिन का शुल्क एक साथ भी भेजा जा सकता है।

-संपादक

बर्फ

● विपिन जोशी 'कोमल'

बर्फ गिरी है आओ खेलें,
सबको हम साथ में ले लें।
उजली और दूध सी बर्फ,
ये सब बच्चों को भाए।
बर्फ जमा करने को मुन्ना,
झटपट दौड़ लगाए।
मन को अपना धोकर हम,
बर्फ सा सुंदर कर दें।
मैल कोई रहे न मन में,
यह संकल्प सब ले लें।
बर्फ गिरी है आओ खेलें,
सबको हम साथ में ले लें।

- थपलिया, अल्मोड़ा

मेंढक

● डॉ. दलजीत कौर

कुएं में थे मेंढक चार,
टर्र टर्र टर्र करते बारंबार।
एक दिन मेंढक बाहर आया,
बड़ी है दुनिया उसने पाया।
तालाब में फिर वह नहाया,
सावन का गीत उसने गाया।
पहुंचा व नदिया के पास,
इतना पानी बुझ गई प्यास।
मेंढक फिर वापस आया,
आकर उसने यह बतलाया।
कुएं से है बड़ा तालाब,
नदिया उससे बड़ी जनाब।
नदिया से बड़ा है सागर,
देखो तुम सब उसको जाकर।

- 2571,सैक्टर 40 सी चंडीगढ़
मोबाइल-9463743144

बच्चा

● अशोक पटेल 'आशु'

मैं भोला-भाला बच्चा हूं,
मत छीनो ये मेरा बचपन।
मैं भी तो उड़ना चाहता हूं,
मैं बनके पंछी नील गगन।
इंद्रधनुषी इन बादलों में,
सतरंगी सपने सजाऊंगा।
आसमान की सैर करके,
मैं अंतर्मन को रंगाउंगा।
मेरी भी कुछ आशाएं हैं,
मेरी भी कुछ तमन्नाएं हैं।
उन परों को मत कतरो,
उन परों को उड़ जाने दो।
बंधन मुझको भाता नही,
सीमाओं का है भान नही।
मैं तो बस आजाद परिंदा
जग-जालों का ज्ञान नही।
मुझे उछलने-मचलने दो,
झरनों सा झरझर बहने दो।
मुझे जी भर के जी लेने दो,
बचपन का मजा तो लेने दो।

-मेघा,धमतरी,छत्तीसगढ़-493662
मोबाइल-9827874578

छुट्टी

● सुरेशचंद्र सर्वहारा

लो जाड़े की छुट्टी आई,
विद्यालय की खत्म पढ़ाई।
घर पर होगी धींगा मस्ती,
सिर पर लेंगे सारी बस्ती।
मित्रों से खुलकर बोलेंगे,
किस्सों की पुस्तक खोलेंगे।
खेल कई मिलकर खेलेंगे,
हर बाधा हंस-हंस झेलेंगे।
नई-नई जगहें जाएंगे,
कई-कई चीजें खाएंगे।
खुशियों से मन भरे उड़ानें,
छुट्टी के दिन बड़े सुहाने।

- 3 फ 22 विज्ञाननगर, कोटा,राजस्थान

हाथी आया

● संगीता गुप्ता

हाथी आया हाथी आया,
दादाजी ने खूब सुनाया।
पापा को कहते मुन्ना,
बचपन में तुम्हें बताऊंगा।
उनके छुटपन में तुमको,
हाथी की सैर कराऊंगा।
मुन्ने को बहुत-बहुत भाया।
सफेद -पीले तिलक लगा,
बाबाजी हाथी लाते थे।
बच्चे पीछे-पीछे ही,
पंक्ति में मचलते जाते थे।
मुन्ने ने उनको भरमाया।
बच्चों के मन की बातें,
बाबाजी खूब समझते थे।
सो वे हाथी बैठाते,
बच्चे हौदे पर चढ़ते थे।
मुन्ना घूम खूब मुस्काया।
मुन्ने की मां बाबा को,
इज्जत दे खूब बिठाती थी।
पंखा झलते-झलते खुद,
बिठाकर भोजन कराती थी।
मुन्ने ने भी शीश झुकाया।

-फालके बाजार
लश्कर,ग्वालियर म.प्र.

मार्निंग वॉक

● डॉ त्रिलोकी सिंह

नंदन वन में बंदर जी की,
जमी हुई है धाक।
बंदरिया के संग करते हैं,
नित्य मार्निंग वॉक।
प्रतिदिन जंगल की करते हैं,
बड़े मजे से सैर।
सबसे उनका प्रेमभाव है,
नहीं किसी से वैर।

- हिंदुपुर, करछना, प्रयागराज,उ.प्र.
मोबाइल-9926374805

कहानी :

नेकी का फल

● रामेंद्र कुशवाहा

उत्तराखंड के सीमांत जनपद उत्तरकाशी की बात है। भंकोली गांव की गीता पहली लड़की थी। जो देहरादून से बी. सी.ए. कर रही थी। उसकी फाइनल ईयर के अंतिम सेमेस्टर की परीक्षा हो चुकी थी। एक दो दिन में वह अपने गांव जाने वाली थी। देहरादून में किराए के कमरे में लेटी गीता अपने भविष्य के सुनहरे सपने बुन रही थी। तभी उसके मोबाइल की घंटी बज उठी।

''हैलौ '' उधर से आवाज आई।

''हैलो.....अंकल!'' गांव के दानू अंकल की आवाज को पहचानते हुए गीता ने पूछा, ''गांव में सब ठीक है न, अंकल!''

''ठीक ही तो नही है, बेटी!'' दानू अंकल बोल रहे थे। ''हम पहाड के लोगों के कष्टों का कभी अंत नही होता है। कभी धरती डोलकर हमारी बसी-बसाई गृहस्थी हिला देती है तो कभी बाढ सब कुछ बहा .....।

''अभी क्या हुआ अंकल!'' गीता ने दानू की बात बीच में काटते हुए पूछा, ''गांव मे सब ठीक-ठाक है न ?''

''फिलहाल कुछ ठीक नही है मेरी बच्ची!'' दानू अंकल ने गीता को अपडेट करते हुए कहा, ''गांव की पहाडियों में लगी भीषण आग में गांव के पांच लोग झुलस कर मौत के गाल में समा गए हैं। सभी पहाडियों पर लकड़िया लेने गए थे। उसमें तुम्हारे माता-पिता भी थे। तुम्हारा छोटा भाई बच गया। वह घर पर था।''

इसके साथ ही दानू का फोन कट गया। इतना दुखद समाचार चुन गीता जड़ हो गई। उसकी समझ में नही आ रहा था क्या करे!

गांव पहुंच गीता ने देखा छोटे भाई गगन का रो-रो कर बुरा हाल हो गया था। उसने भाई को गले लगाते हुए उसको ढांढस बढाया। अपनी चुन्नी से उसके आंसू पोछे। गांव वाले माता-पिता की डेडबॉडी के चारों ओर जमा थे।

माता-पिता की अंत्येष्ठि के बाद गीता अपने भाई गगन के साथ अकेली पड़ गई। गांव में उसका कोई रिश्तेदार भी नही था। खेती योग्य भूमि में फसल न के बराबर होती थी। सिंचाई का साधन नही था। उसके माता-पिता कमरतोड़ मेहनत-मजदूरी कर घर चला रहे थे। बड़ी मुश्किल से गीता की पढ़ाई का खर्च भेजते थे। गांव में रोजगार का कोई साधन न था। छोटा भाई 9वीं में पढ़ता था। उसकी पढाई का भी खर्च था। कई दिन इस उधेड-बुन में निकल गया कि गीता अब क्या करे? बहुत सोच-विचार के बाद गीता अपने भाई को लेकर देहरादून शहर वापस आ गई। गांव का एक और घर पलायन की त्रासदी का शिकार हो गया।

देहरादून में गीता के सामने कई समस्याएं मुंह बाएं खड़ी थी। कमरे का किराया दो माह का बकाया था। राशन भी कुछ ही दिनों के लिए बचा था। भाई को किसी स्कूल में एडमिशन करवाना था। इन सब समस्याओं से पार पाने के लिए उसे एक अदद नौकरी तलाशनी थी।

बी.सी.ए. का रिजल्ट आने में अभी वक्त था। गीता के पास काम का कोई जरिया नही था। छोटे भाई गगन का दाखिला पास के ही एक सरकारी स्कूल मे करा दिया। नौकरी की तलाश में गीता दिनभर शहर के धूल फांकती। पर उसे हर जगह निराशा ही हाथ लगी।

गीता को कंप्यूटर का अच्छा ज्ञान था। बड़ी मुश्किल से एक साइबर कैफे में उसे अति न्यून मानदेय पर नौकरी मिल गई। साइबर कैफे में 14 घंटे की कड़ी मेहनत कर गीता किसी तरह अपना और छोटे भाई का पालन-पोषण करने लगी।

किसी अच्छी नौकरी के लिए वह निरंतर 'क्लासीफाइड' विज्ञापन पर नजर रखती थी। एक दिन उसकी नजर सेलाकुई स्थित एक कंपनी के विज्ञापन पर गई। कंप्यूटर जानकर ग्रेजुएट के लिए आकर्षक वेतन में सहायक मैनेजर का पद रिक्त था।

नियत तिथि एवं समय पर गीता साक्षात्कार हेतु सेलाकुई पहुंच गई। वहां बहुत सारे उम्मीदवारों की भीड़ देख गीता की हिम्मत पस्त होने लगी। स्वागत कक्ष में जब गीता ने दूसरे उम्मीदवारों से बात-चीत करना प्रारंभ किया तो उसकी रही सही हिम्मत भी जबाव देने लगी। अधिकांश उम्मीदवार पी.जी. व कई वर्ष के कार्यानुभव वाले थे। साक्षात्कार के लिए तैयार सूची से एक-एक कर अभ्यर्थियों के नाम पुकारे जा रहे थे। गीता का नाम सूची में अंतिम था। शायद उसकी कम योग्यता व शून्य अनुभव के चलते ऐसा किया गया हो। कंपनी मालिक के केबिन से कुछ अभ्यर्थी काफी प्रसन्न मुद्रा में बाहर निकल रहे थे। उनकी मुख-मुद्रा देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उनकी यह नौकरी पक्की है।

सबसे अंत में गीता का नाम साक्षात्कार के लिए पुकारा गया। धड़कते दिल से गीता ने कंपनी मालिक के केबन में प्रवेश हेतु आज्ञा चाही। ''मे आई कम इन, सर।''

''यस, कम इन'' इजाजत देते हुए कंपनी मालिक गीता की तरफ देखते ही चौंक गया।

''तुम उत्तरकाशी के भंकोली गांव की गीता रावत हो ना?'' कुछ याद कर बोलते हुए मालिक अपनी कुर्सी से खड़ा हो गया। ''आओ, बैठो बेटी! मेरा यह जीवन तो तुम्हारा कर्जदार है।''

''मै कुछ समझी नही सर?'' गीता ने आश्चर्य से पूछा, ''आप अपनी कुर्सी से खड़े होकर मुझे बेटी क्यों कह रहे हैं? मै आपके जीवन की कर्जदार कैसे हो सकती हूं? मै तो खुद दुखों की मारी हूं। आपके पास नौकरी की याचना लेकर आई हूं।''

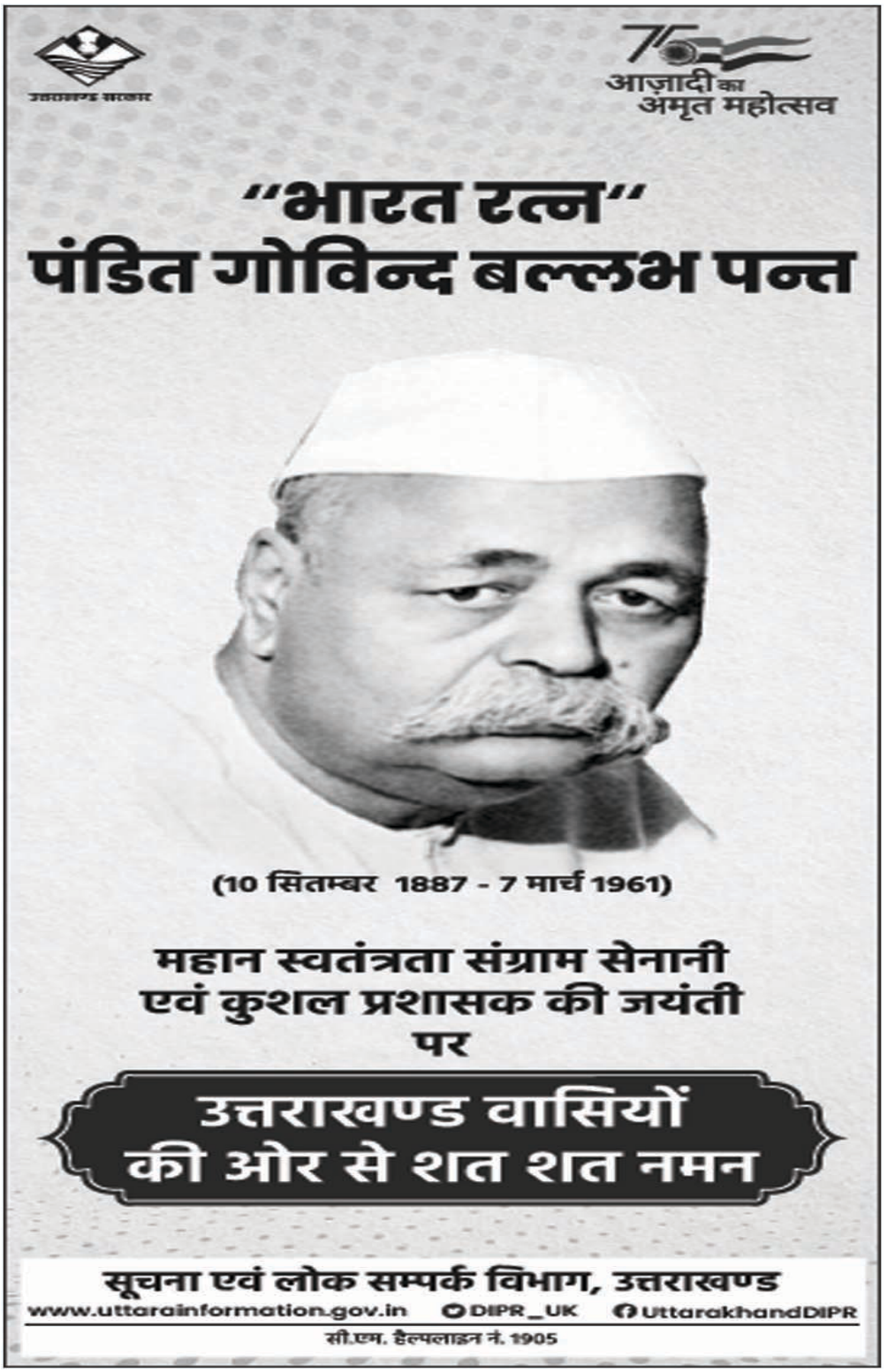

''नौकरी तुम्हें जरूर मिलेगी।'' कंपनी मालिक ने गीता को आदर के साथ बैठाते हुए कहा, ''यह नौकरी मैं तुम्हें देकर तुम्हारी बहादुरी और नि:स्वार्थ सेवा को सलाम करता हूं।''

''मैं फिर कुछ नही समझी सर!'' गीता का विस्मय पूर्ववत् था। ''तुम वाकई नेकी कर और भूल जा'' के भाव से भरी पहाड़ की बहादुर बेटी हो। याद करो 2013 की उत्तराखंड त्रासदी को। केदारनाथ धाम सहित भागीरथी भी अपने रौद्र रूप के शिखर पर थी। चारों तरफ बाढ़ का पानी फैला था। सड़कें बह गई थी। टूटे पहाड़ सड़क पर अपना डेरा डाल यात्रियों के लिए काल बन गए थे।''

'' हां....हां... याद आया।'' गीता अत्यंत सहज भाव से बोली, ''हमारे पहाड़ों में तो हमेशा ऐसा होता ही रहता है। हम पहाड़वासी इस प्रकार का कष्ट झेलने के आदी हैं सर।''

''पर हम यात्री तो कष्ट के आदी नही है।'' कंपनी मालिक ने बात आगे बढाई, ''2013 की उस विभीषिका के भंवर में हम आठ लोगों का साहसिक दल भी फंस गया था। इसमें मेरा इकलौता पुत्र भी सम्मिलित था। भागीरथी के तांडव से बचते-बचते हम तुम्हारे भंकोली गांव में भटक गए थे। कई दिनों से हम भूखे प्यासे थे। तुमने हमें अपने घर में शरण दी और भोजन दिया था। अगले दिन पहाड़ के पैदल मार्ग से हमें मुख्य सड़क तक पहुंचाया था।''

''हां.... हां...'' कुछ याद करते हुए गीता ने कहा, ''याद आया। आपने तो मुझे अपना कार्ड देकर यह भी कहा था कि कभी जरूरत पड़े तो याद करना।''

'' हां! बिल्कुल कहा था।'' कंपनी मालिक ने शिकायत के लहजे में बात आगे बढ़ाते हुए कहा, ''पर तुम कभी मेरे पास मदद के लिए नही आई।''

''हम पहाड़ के लोग किसी की मदद के बदले कोई चाहत नही रखते।'' गीता ने अपना पक्ष रखा। ''उत्तराखंड की जमीं पर आने वाला हर यात्री हमारा अतिथि है। हम अतिथि देव भव: की सच्ची भावना से कार्य करते हैं।''

''अति उत्तम विचार।'' कंपनी मालिक खुशी से झूम उठा, ''यही वजह है कि हमारी इतनी बड़ी मदद करने पर भी तुमको हमसे कोई लालसा नही है। यदि उस दिन हमें तुम्हारी मदद नही मिली होती तो हम सभी का प्राणांत तय था।''

''गांव में भूले-भटके यात्रियों को इस प्रकार की मदद हम गांव वाले हमेशा करते आए हैं।'' गीता ने आगे बताया, ''मदद करने के बाद हमें याद भी नही रहता कि हमने कब कितने लोगों की मदद की। यह तो हम सबकी मानवता व कर्तव्य है कि दुख में पड़े व्यक्ति की सहायता करें। यही कारण है कि मैं आपको पहचान नहीं पाई।''

''ठीक है।'' कंपनी मालिक ने अपना निर्णय सुना दिया, ''कल से तुम कंपनी में सहायक मैनेजर के रूप में ज्वाइन करोगी। रहने के लिए घर और आने-जाने के लिए कार कंपनी की ओर से मिलेगी। सैलेरी भी पांच इंक्रीमैंट अग्रिम जोड़ कर दी जाएगी।''

यह सुन गीता की खुशी का ठिकाना न रहा। फिर भी उसने कंपनी मालिक से पूछ ही लिया, ''पर सर! मेरा तो आपने अभी तक इंटरव्यू ही नही लिया। अब तक तो इधर-उधर की ही बातें होती रहीं।''

''इंटरव्यू लिया क्यों नही।'' कंपनी मालिक ने गीता को समझाया, ''इतनी सारी इधर-उधर की बातों से ही तुम्हारे गुणों का पता चल गया। तुम भले उच्च शिक्षित और अनुभवी न हो, पर तुममें बहादुरी, ईमानदारी, नि:स्वार्थ सेवा आदि गुण कूट-कूट कर भरे हैं। तुमसे पहले आए उच्च शिक्षित एवं अनुभवी उम्मीदवार तुम्हारे गुणों के सामने बौने हैं। मैं तुम पर कोई उपकार या पक्षपात नही कर रहा हूं। यदि तुम इस पद पर आती हो तो निश्चित ही कंपनी नई बुलंदियों को हासिल करेगी।''

''मैं आप की उम्मीदों पर खरा उतरूंगी।'' गीता ने नौकरी के प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए कहा, ''अगले माह मेरा बी. सी.ए. का रिजल्ट भी आने वाला है।''

'' बहुत खूब....'' कंपनी मालिक ने गीता के समक्ष एक तोहफा और पेश कर दिया, ''रिजल्ट आते ही तुम्हें एक एक्स्ट्रा आर्डनरी पदोन्नति देकर मैनेजर की कुर्सी दे दी जाएगी।''

''मेनी मेनी थैक्स'' बोलते हुए गीता केबिन से बाहर आ गई। गीता को अकस्मात अहसास हुआ कि सच्चे दिल से की गई नेकी कभी व्यर्थ नही जाती।

- कार्यालय मुख्य शिक्षा अधिकारी उत्तरकाशी

खोजबीन

नीचे गए शब्दों में शरीर के कम से कम 9 अंकों के नाम छिपे हैं। ढूंढ कर लिखिए।

ना मुं थ का ट ली
र धा ह पे क ती
न पै छा थे हा कं

कहानी :

मूक समझौता

● डॉ. कुसुम रानी नैथानी

वे दिन भर यहां खूब शोर मचाते। उनके शोर से पूरा वातावरण गुंजायमान रहता था। एक दिन सुबह-सुबह बहुत सारी बॉबलर लॉन में खाना ढूंढ रही थी। तभी अचानक एक डॉगी की आवाज सुनकर वे डर के मारे झट से उड़कर पेड़ पर बैठ गए। उन्होंने देखा आंगन में एक डॉगी बड़ी मुश्तैदी से टहल रहा था। वह बॉबलरों को देखकर लगातार भौंक रहा था। पेड़ पर बैठी बॉबलर के एक दल की नेता बंकी बोली,

''तुम बेवजह इस तरह से क्यों भौंक रहे हो?"

''पहले तुम बताओ। तुम सब यहां लॉन में क्या कर रही थी?"

''दिखाई नहीं देता। हम कीट पतंगे चुग रहे थे।"

''आज से तुम्हारा यहां पर कीट पतंगे चुनना बंद।"

''भला क्यों?"

''मेरे रहते तुम सब इस लॉन में नहीं आ सकती।"

''तुम तो यहां पर आज आए हो। हम तो यहां पर बहुत समय से रह रहे हैं। हमारी कई पीढ़ियां यहां रहती आई हैं।"

''रहते आए होंगे पर अब तुम्हारा यहां आना बिल्कुल बंद।"

''तुम होते कौन हमें रोकने वाले?"

''यह मेरे मालिक का हुक्म है कि मैं तुम सबको यहां लॉन में न आने दूं।" उसकी बात सुनकर पेड़ पर बैठे सारे बॉबलर बहुत परेशान हो गए। पूरे दिन स्पाइक डॉगी उन्हें इसी तरह लॉन से उड़ाता रहा। उसने किसी भी बॉबलर को नीचे चुगने के लिए नहीं आने दिया। यह देखकर उनका पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया था। वह स्पाइक डॉगी को सबक सिखाना चाहते थे। जो आते ही पहले दिन से उनकी व्यवस्था को चौपट करने पर तुला हुआ था। ऊपर से धौंस जमा रहा था ।

सारी बॉबलर दिन भर पेड़ पर बैठकर शोर मचाती रही। लेकिन स्पाइक के डर के कारण लॉन में आकर कीट पतंगे चुगने की उनकी हिम्मत न हो सकी। शाम तक भूख से परेशान होकर वे भोजन की व्यवस्था करने के लिए दूसरी जगह चले गए। वे सब बहुत गुस्से में थी और स्पाइक को सबक सिखाना चाहती थी। दूसरे दिन सुबह सब बॉबलर फिर से लॉन के समीप पेड़ों पर बैठ गए। वहां पर पहले से ही स्पाइक बैठा हुआ था। एक-दो ने नीचे आने का साहस जुटाया। उन पर नजर पड़ते ही उसने तुरंत उन्हें उड़ा दिया। किसी भी बॉबलर को नीचे नहीं आने दिया। यह देखकर बंकी चीखी,

''यह क्या बदतमीजी है?"

''बदतमीजी, मैं नहीं तुम कर रही हो। तुम्हें मना किया था कि तुम सब यहां मत आना। फिर भी तुम मुंह उठाकर चली आई हो।"

''हम तुम्हारे गुलाम नहीं हैं। जो तुम्हारी सारी बातें मानने लगें।"

''तुमने मेरी एक भी बात नहीं मानी है। मेरी बात मानो और अपनी भोजन की व्यवस्था कहीं और जाकर करो। तुम सब इधर मत आया करो। मालिक को तुम्हारा शोर जरा भी अच्छा नहीं लगता।"

''सुबह सवेरे सबको चिड़ियों की आवाजें अच्छी लगती हैं। तुम कहते हो तुम्हारे मालिक को यह सब पसंद नहीं है।"

''अपनी-अपनी पसंद है। उन्हें पसंद नहीं आता। तुम सब चुप हो जाओ।"

''तुम्हारे कहने से हम चुप नहीं होंगे। देखते हैं कब तक तुम हमारी चौकीदारी करते हो।" कोई भी अपनी बात से पीछे हटने को तैयार नहीं था। चार दिन बीत गए थे। अब बॉबलरों का धैर्य जवाब देने लगा था। बहुत सोच समझकर शाम के समय वहां रहने वाले बॉबलर के चारों दलों के नेताओं ने साथ बैठकर एक योजना बनाई। बंकी बोली, ''एक डॉगी के डर से हम यह जगह नहीं छोड़ सकते। हम सबको मिलकर उसका मुकाबला करना होगा।"

''तुम ठीक कहती हो। हम उस डॉगी को अपनी एकता दिखाकर अच्छा खासा सबक सिखा सकते हैं।" दूसरे दल की नेता टिपरी बोली। योजना के अनुसार सब दलों की बॉबलर चिड़ियां सुबह सवेरे आकर पेड़ पर बैठ गई। रोजमर्रा की तरह स्पाइक डॉगी आंगन में चौकन्ना होकर बैठा हुआ था। सबसे पहले एक बॉबलर लॉन के एक छोर पर आई। स्पाइक तुरंत उसे उड़ाने के लिए उधर बढ़ा। तभी पीछे से दूसरी बॉबलर दूसरे छोर पर उतर आई। स्पाइक उसे छोड़कर तुरंत दूसरी तरफ दौड़ पड़ा। इतनी देर में लॉन के अन्य दो छोरों पर भी कुछ बॉबलर नीचे आ गई। इस तरह से बारी-बारी से एक के बाद एक बॉबलर लॉन में अलग-अलग जगह पर उतरती जा रही थी। स्पाइक उनके पीछे बेतहाशा एक छोर से दूसरे छोर तक दौड़ लगा रहा था। दौड़ते-दौड़ते वह बुरी तरह थक गया था। लेकिन वह उन्हें लॉन से बाहर नहीं खदेड़ पा रहा था। एक उड़ती तो कुछ दूरी पर दूसरी आ बैठती। बॉबलर चिड़ियों ने भी

हिम्मत नहीं हारी थी। वे सब बारी-बारी से लॉन मे उतरकर अभी भी उसे उसी तरह से तंग कर रही थी। थकान के मारे स्पाइक का बुरा हाल हो गया था। मगर अभी बॉबलरों का अपनी योजना के अंतिम चरण को अंजाम देना बांकी था।

इस बार जैसे ही बंकी बॉबलर लॉन में उतरी। स्पाइक तुरंत उसके पीछे दौड़ पड़ा। वह बुरी तरह से थका हुआ तो था ही। इसी मौके का फायदा उठाकर पेड़ पर बैठी चारों दलों की सारी बॉबलरों ने मिलकर स्पाइक डॉगी पर हमला बोल दिया। कोईउसके कान में, कोई नाक में और कोई आंख में चोंच मार रहा था। स्पाइक गर्दन हिला कर और पंजों से उन्हें भगाने की कोशिश कर रहा था। वे सब उस पर लगातार वार कर रही थी। इस हमले में एक दो बॉबलर को भी हल्की चोटें आ गई थी। वे सब शोर मचा कर एक दूसरे को स्पाइक को सबक सिखाने के लिए लगातार प्रेरित कर रही थी।

जब स्पाइक उनका मुकाबला न कर सका तो वह उनके हमले से बचने के लिए वहां से बरामदे की ओर भागा। उसके वहां से जाते ही सारी बॉबलर चिड़ियों ने लॉन में आकर आराम से कीट पतंगे खाने शुरू कर दिए। वे सब भूखी भी थीं और इस समय थक भी गई थी। दर्द के मारे स्पाइक का बुरा हाल था। चोंच की मार से उस पर कई घाव भी हो गए थे। उनसे खून भी रिस रहा था। उसके सामने ढेर सारी बॉबलर लॉन में बैठी थी। पर वह उठने की हालत में न था। वह कुछ देर पहले के उस कटु अनुभव को भूल नहीं पा रहा था। दौड़-दौड़ कर वैसे ही वह बुरी तरह से थक गया था। ऊपर से बॉबलर चिड़ियों ने उस पर हमला भी बोल दिया था। इस समय वह अपने को बहुत असहाय पा रहा था। सब बॉबलर अपनी सफलता पर खुश होकर शोर मचाते हुए आराम से भोजन ढूंढ रही थी।

अगले दिन सुबह भी सारी बॉबलर फिर से अपनी योजना के अनुसार आक्रामक मूड में वहां चली आई थी। सबसे पहले बंकी लॉन में उतरी। स्पाइक ने उस पर एक नजर डाली और मुंह दूसरी ओर फेर लिया। कल की मार से उसकी आंखें भी सूज गई थी। एक-एक करके सभी बॉबलर लॉन में उतर आई। स्पाइक भी समझ गया था। इन सब से पार पाना उसके बस का नहीं है।

उसने भी अब उन्हें भगाना छोड़ दिया। बॉबलर चिड़ियों की समझ में भी आ गया था। अब पहले जैसी बात नहीं रही। जब यहां कोईनहीं रहता था तो वे इस जगह पर आराम से घूमती फिरती थी। अब समय की नजाकत को देखते हुए वे भी कुछ समय के लिए लॉन में आती और अपना भोजन चुगती। उसके बाद वे वहां से उड़ जाती। उस दिन के बाद से उन्होंने फिर कभी स्पाइक पर वार नहीं किया। न ही उसने किसी को वहां से उड़ाने की कोशिश की। अब वे वक्त बेवक्त वहां आकर शोर भी नहीं मचाती। दोनों पक्षों के बीच में एक मूक समझौता हो गया था। अब उन्हें एक दूसरे सेकोई परेशानी नहीं थी। छोटी सी बॉबलर चिड़ियों ने आपसी सूझ से स्पाइक को अपनी एकता का परिचय दे दिया था। उनकी एकजुटता ने डॉगी को शांत रहने के लिए मजबूर कर दिया था ।

- माणीगृह, 318 ए ओंकार रोड, चक्खूवाला, देहरादून
मोबाइल-9412922513

फरवरी माह के महत्वपूर्ण दिवस

● गरिमा राना, राजकीय इंटर कालेज जसकोट,अल्मोड़ा

अंगरेजी कलेंडर में 12 माह होते हैं। जिसमें से 11 महीने कम से कम 30 दिन के होते हैं। जनवरी, मार्च,मई,जुलाई,अगस्त, अक्टूबर और दिसंबर माह में 31 दिन होते हैं। फरवरी माह में सबसे कम दिन होते हैं। फरवरी माह में सामान्यतया 28 दिन होते हैं। लीप वर्ष में फरवरी में 29 दिन होते हैं। इससे स्पष्ट है कि जिसका जन्म दिन 29 फरवरी को होता है। वह अपना जन्म दिन हर साल नहीं मना पाता होगा।

फरवरी माह की 28 तारीख को भारत में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया जाता है। सन् 1928 में 28 फरवरी को देश के महान वैज्ञानिक सीवी रमन ने रमन इफेक्ट की खोज की थी। उनके सम्मान में प्रतिवर्ष 28 फरवरी को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया जाता है। फरवरी माह में ही वसंत पंचमी का पारंपरिक त्यौहार होता है। जिस दिन हम मां सरस्वती के सम्मान में कई कार्यक्रम करते हैं। इस वर्ष 5 फरवरी,2022 को वसंत पंचमी का पर्व है। मातृभाषा यानी अपनी दुदबोलि के संरक्षण के लिए विगत कई वर्षो से 21 फरवरी को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया जा रहा है।

7 फरवरी को पूर्व राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन की जयंती, 13 फरवरी को राष्ट्रीय महिला दिवस, विश्व रेडियो दिवस, 20 फरवरी को विश्व सामाजिक न्याय दिवस, 22 फरवरी को विश्व स्काउट दिसस मनाया जाता है। यह महीना अपने आप में छोटा है। परंतु राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई उपलब्धियों के लिए फरवरी माह को याद किया जाता है।

कहानी :

लक्ष्मी

● डॉ. जमुना कृष्ण राज

दीपा आज बहुत खुश थी। उसकी मम्मी ने उसके स्कूल से लौटते ही खुश खबरी सुनाई। खुशखबरी ये थी कि परीक्षा के बाद वे छुट्टियों में नानी मां के यहां गांव जाने वाले हैं। दीपा यह सुनते ही खुशी के मारे झूम उठी।

उसकी नानी बहुत प्यारी थी। जो हर बार आती तो उसकी पसंद के ढेर सारे पकवान बना लाती। यही नहीं, उसकी नानी उसे गांव के बारे में अनेक रोचक बातें बतातीं। जिससे दीपा का मन गांव देखने को मचल उठता। अब उसका सपना साकार होने वाला था।

आखिर छुट्टियां आईं। दीपा अपनी मम्मी के साथ चल पड़ी। गांव पहुंचते ही उसकी नानी ने उनका बड़े प्यार से आवभगत किया। कुछ देर आराम कर दीपा आंगन के पेड़ पर लगे झूले में झूलने लगी। उसे खूब अचरज हुआ यह देख कर कि नानी ने एक गाय पिछवाड़े में बांध रखी है। शहर में उसने ऐसा तो कभी नहीं देखा था। पहले तो दीपा को गाय के पैने सींगों से डर लग रहा था। पर जब नानी ने प्यार से उसे पुचकारा और भूसा खिलाया तो वह गाय बड़ी प्यारी और सीधी-सादी लग रही थी। दीपा भी साहस बटोर कर नानी के साथ खड़ी हो गई और गाय को पुचकारने लगी। अगले दिन चरवाहा आया और गाय को चराने ले गया। गांव में दूर-दूर तक खेत फैले हुए थे। जहां फसलें कट चुकी थीं। वहां अन्य गायें भी चर रही थीं। ऐसे मनोहर दृश्य को दीपा देखती रह गई।

उसकी मम्मी ने अपना बैग खोला। शहर की मशहूर दुकान से खरीदी मिठाइयां नानी को सौंपी। ये मिठाइयां आकर्षक रंगीन प्लास्टिक के लिफ़ाफ़ों में पैक की हुई थीं। नानी ने सारी मिठाइयां बांट दीं और प्लास्टिक लिफ़ाफे दीपा को सौंप कर उन्हें फेंक आने को कहा। दीपा भी तुरंत पिछवाड़े में फेंक आई। सब देर तक खूब बातें करते रहे। धीरे-धीरे दीपा नींद के आगोश में चली गई।

आधी रात हुई तो एक अजीब-सी आवाज़ से वह जाग उठी। घर के पिछवाड़े से लक्ष्मी गाय की जोर-जोर से रंभाने की आवाज़ आ रही थी। दीपा ने अपनी नानी को जगाया। दोनों पिछवाड़े गए। नानी समझ गई कि लक्ष्मी दर्द के मारे तड़प रही है। उन्होंने तुरंत उसे दवाई खिलाई तो कुछ देर में लक्ष्मी को कुछ राहत मिली। अगले दिन प्रातः ही नानी ने पशु चिकित्सक को बुलाया। उन्होंने लक्ष्मी की पूरी जांच की। उन्होंने उसे पेट दर्द की कुछ गोलियां खिलाईं। थोड़ी देर में जो गोबर उसके पेट से निकला। दीपा को अचरज हुआ कि उसमें वे प्लास्टिक कवर भी निकले। जिन्हें उसने पिछली रात पिछवाड़े में फेंका था। शायद लक्ष्मी मिठाइयों की खुशबू से आकृष्ट होकर लिफ़ाफ़े ही निगल गई। दीपा उसके पेट दर्द का कारण समझ गई। दीपा को मन ही मन आत्म ग्लानि हुई। उसी की वजह से लक्ष्मी को पेट दर्द का कष्ट सहना पड़ा। काश वे प्लास्टिक कवर न होते। न वह पिछवाड़े में फेंक आती। उसने आगे से प्लास्टिक कवरों का इस्तेमाल न करने का निर्णय लिया। उसने तुरंत अपनी मम्मी को भी अपना निर्णय सुनाया। उसने कहा कि आगे से वे हर सामान कागज के लिफाफों में या कपड़े की थैलियों में ही खरीद कर लाएंगे। उसकी मम्मी भी उसके इस निर्णय से पूर्णतया सहमत हुई।

पेट साफ होते ही लक्ष्मी गाय सामान्य हो गई। वह पुनः बड़े चाव से नानी का दिया भूसा खाने लगी। कुछ ही देर में वह आराम से सो भी गई। दीपा गाय के पास गई। उसने बड़े प्यार से उसके पीठ को सहलाया। इस घटना ने दीपा को एक सबक सिखाया। छुट्टियां खत्म होते ही वह गांव से लौट आई। उसने अपने स्कूल की सहेलियों को गांव के बारे में बताया। प्लास्टिक के इस्तेमाल से हुए नुकसान की जानकारी दी। उसकी टीचर भी दीपा की बातों से प्रभावित हुई।

– चेन्नई, तमिलनाडू
मोबाइल-9444400820

श्याम पलट पांडेय को मिला सोहनलाल द्विवेदी बाल कविता सम्मान

लखनऊ(उ.प्र.)। उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का सोहनलाल द्विवेदी बाल कविता सम्मान 2020 बालप्रहरी के संरक्षक वरिष्ठ साहित्यकार श्यामपलट पांडेय(अहमदाबाद, गुजरात) को दिया गया है। इसके अतिरिक्त संस्थान ने डॉ. मंजरी शुक्ला को सुभद्राकुमारी चौहान महिला बालसाहित्य सम्मान, श्याम नारायण श्रीवास्तव को लल्लीप्रसाद पांडेय बालसाहित्य पत्रकारिता सम्मान, डॉ. अनीता भटनागर जैन को अमृतलाल नागर बाल कथा सम्मान तथा कल्पना कुलश्रेष्ठ को जगपति चतुर्वेदी बाल विज्ञान लेखन सम्मान दिया गया है। इसके अतिरिक्त रवींद्र प्रताप सिंह, श्री सिराज अहमद को भी बालसाहित्य सम्मान दिया गया है। सभी बालसाहित्यकारों को बालप्रहरी परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

कहानी :

गुणवान और प्रतिभावान

● राधेलाल 'नवचक्र'

सेठ करमचंद्र का बहुत बड़ा कारोबार था। उसके दो लड़के थे। सुशील और निर्मल। एक दिन सेठ जी ने अपने मुनीम को बुलाकर कहा, " मेरे दोनों बेटे अब जवान हो चुके हैं। उन्हें धीरे-धीरे मेरे कारोबार की जानकारी दीजिए।"

"ऐसा ही करूंगा।" मुनीम जी ने जवाब दिया।

अगले दिन मुनीम जी ने दोनों भाइयों को अपने समीप बुलाकर सेठ जी के कारोबार के बारे में कुछ महत्वपूर्ण बातें बताई। इसके बाद मुनीम जी ने दोनों को बहीखाता से संबंधित अलग-अलग कार्य भार भी सौंपा। फिर कहा, "देखता हूं तुम दोनों अपने-अपने कार्य को कितनी जल्दी निपटा सकते हो?"

"बहुत अच्छा।" कहकर दोनों वहां से चले गए।

एक सप्ताह बाद सुशील ने मुनीम जी द्वारा दिया हुआ कार्य अपने ढंग से निपटा कर उसे दिखाया। देखकर मुनीम जी ने उससे कहा, "अधिकांश कार्य तो तुमने अच्छी तरह निपटाया है। मगर कुछ कार्यो को तुमने अधूरा और कुछ को तो बिल्कुल छोड़ दिया है, ऐसा क्यों?" "दरअसल, जिस कार्य को मैं जितना जानता व समझता था। उसे उतना कर दिया है। जिस कार्य को जानता ही नहीं हूं, उसे बिल्कुल छोड़ दिया हूं।" सुशील स्पष्ट बोला।

एक सप्ताह और गुजरा। मगर निर्मल ने अपना कार्य पूरा कर मुनीम जी को नहीं दिखाया। तब मुनीम जी स्वयं उससे मिलने गए। उन्होंने देखा कि निर्मल अपने कमरे में चित्रकारी कर रहा था। अपने कार्य में वह खोया था। थोड़ी देर तक मुनीम जी उसके बनाए चित्र को एकटक निहारते रहे। वह भूल गए कि वहां वे क्यों आए हैं। निर्मल भी चित्रकारी में इतना व्यस्त था कि उसे मुनीम जी के कमरे में प्रवेश करने का जरा भी आभास नहीं हुआ। थोड़ी देर बाद मुनीम जी को ख्याल आया कि वह वहां क्यों आया है। फिर उसने निर्मल का ध्यान अपनी ओर खींचा, ''निर्मल सुनो।"

निर्मल का ध्यान टूटा। उसने उठकर आवाज की ओर देखा। फिर बोला, "क्या है मुनीम जी?"

"दो सप्ताह पहले मैंने तुम्हें कारोबार से संबंधित कुछ कार्य करने दिया था। क्या तुमने उसे किया?"

"नहीं तो!" "कब तक करोगे?"

"नहीं कर सकता।" "क्यों?"

"मुनीम जी! मुझे चित्रकला के कार्य से फुरसत ही नहीं मिलती है कि मैं आपका दिया कार्य निपटा सकूं।"

"सेठजी तुम्हें चित्रकार नहीं, एक सफल व्यवसायी बनाना चाहते हैं। इसलिए चित्रकारी छोड़कर मैंने व्यवसाय संबंधी जो कार्य तुम्हें दिया है, उसे जल्द से जल्द पूरा करने की कोशिश करो।" मुनीम जी ने निर्मल को समझाया।

सुनकर निर्मल एक क्षण किंकर्त्तव्यविमूढ़ रहा। फिर पूरी दृढ़ता के साथ बोला, "मुनीम जी! चित्रकारी मेरा प्राण है। मैं चित्रकारी इसलिए नहीं करता हूं कि मैं चित्रकला जानता हूं। बल्कि इसलिए कि इसे किए बिना मैं जीवित नहीं रह सकता। मेरे मन-प्राण इसमें बसे हैं। मुझे इससे अलग मत कीजिए।" वस्तु स्थिति अच्छी तरह समझकर मुनीम जी लौट गए। अगले दिन मुनीम जी ने सेठजी से कहा, "आपका एक लड़का गुणवान है तो दूसरा प्रतिभावान।"

"मतलब?" सेठजी ने मुनीम जी के कहने का अभिप्राय नहीं समझा। मुनीम जी ने बात साफ की, "सुशील गुणवान है। वह जो जानता है, जितना जानता है और जो कर सकता है, उन्हें अवश्य करता है। प्रशिक्षण और अनुभव के सहारे वह एक दिन अवश्य ही एक सफल व्यवसायी बन जाएगा।" "और निर्मल?" थोड़ा आशंकित हो सेठ जी ने पूछा।

"वह गुणवान नहीं, प्रतिभावान है। चित्रकला में उसकी गहरी रुचि है, आस्था है। उसी में उसके मन-प्राण बसते हैं। उसके बिना वह जीवित नहीं रह सकता। इसलिए आप उसे चित्रकला की दुनिया में ही विचरने दीजिए। उससे अलग करने का सीधा अर्थ होगा मछली को जल से अलग करना। मुझे भरोसा है कि निर्मल एक दिन श्रेष्ठ चित्रकार के रूप में विख्यात होगा। मैंने उसकी प्रतिभा को करीब से देखा है।"

सेठजी ने मुनीम की बात मान ली और कहा, "ऐसे में सुशील को ही व्यवसाय की सारी जानकारियां दीजिए और निर्मल को अपनी ही राह बेरोक-टोक आगे चलने-बढ़ने के लिए छोड़ दीजिए।"

''बहुत खूब!" कहकर मुनीम जी वहां से चले गए।

-तोता साह लेन, हसनगंज,
मिरजान हाट,
भागलपुर (बिहार)

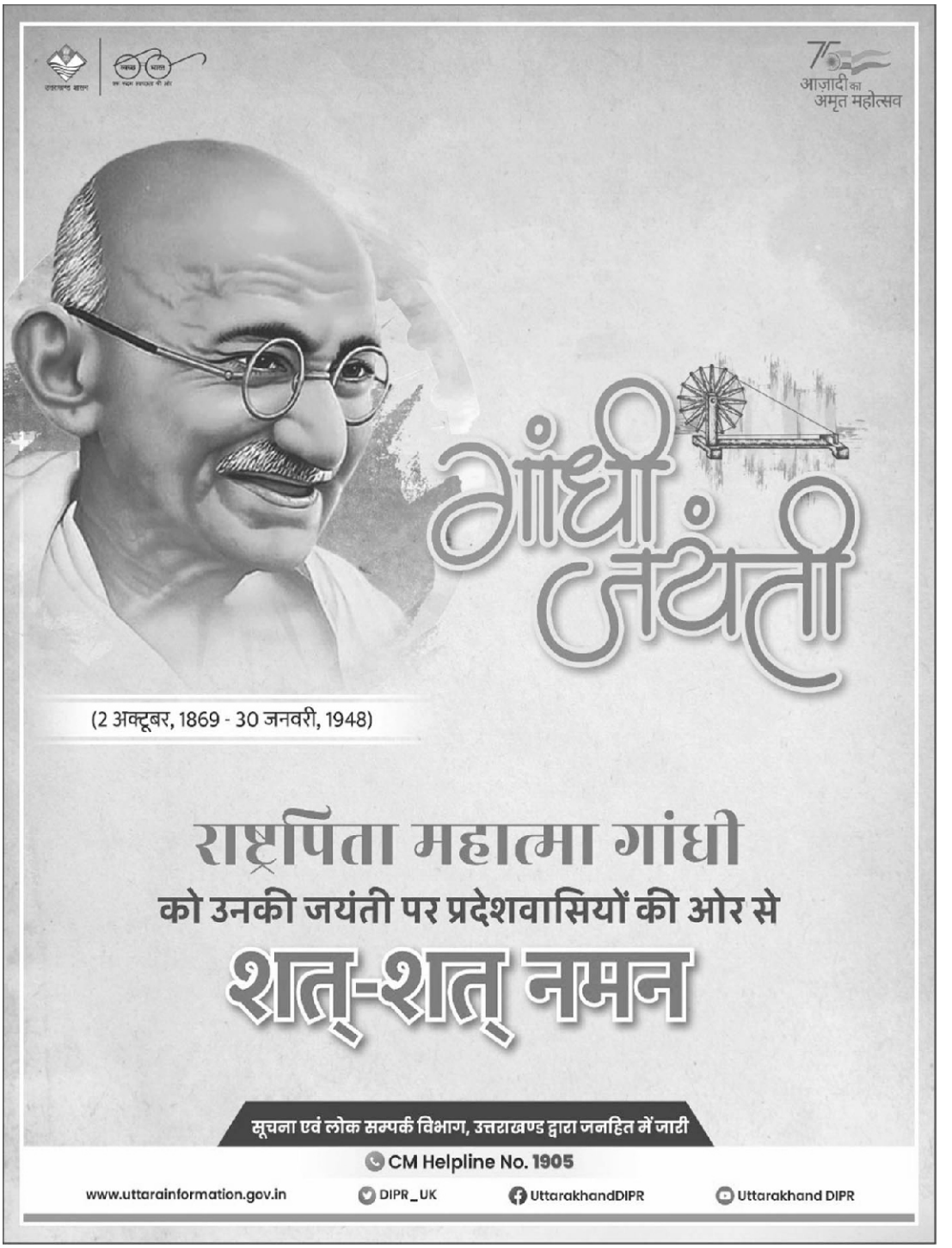

वर्ण पहेली

सामने की श्रंखला में अंगरेजी के वर्ण एक निश्चित क्रम में दिए गए हैं। क्रम के अनुसार खाली स्थानों पर वर्ण भरिए।

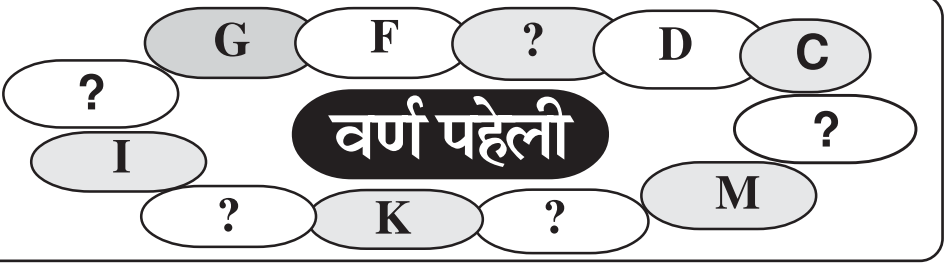

रंग भरो

- चांद मोहम्मद घोसी,
नन्हा बाजार, मेड़ता सिटी
(राजस्थान)

आई दिवाली

● ज्ञान प्रकाश 'पीयूष'

जगमग जगमग आई दिवाली,
सबके मन को भाई दिवाली।
घर की करते साफ-सफाई,
रंग-रोगन औ पोत-पुताई।
बच्चों को हर्षाती आई,
उनके लिए फुलझड़ियां लाई।
सब मिलकर हैं दीप जलाते,
घर-आंगन को खूब सजाते।
नए-नए सब कपड़े पहने,
मां-बहिना गहने भी पहने।
लक्ष्मी-गणेश का पूजन करते,
सभी बड़ों का आदर करते।
मिल जुल कर फिर पकवान हैं खाते,
छुरी-पटाखे खूब चलाते।
जगमग-जगमग आई दिवाली,
सब के मन को भाई दिवाली।

- 1/258, मस्जिद वाली गली, तेलियान
मोहल्ला नजदीक सदर बाजार, सिरसा (हरि.)
मोबाइल-9414537902

हम बच्चे हैं

● भूपालसिंह अधिकारी

कितने भोले कितने अच्छे,
बच्चे होते मन के सच्चे।
रूंठें कभी हंसते बच्चे,
कभी मन से बहकते बच्चे।
कभी हाथ पकड़ते बच्चे,
कभी साथ अकड़ते बच्चे।
कभी फूल से खिलते बच्चे,
कभी धूल पे मिलते बच्चे।
कभी खींझें तो डराए बच्चे।
कभी परिहास कराएं बच्चे।
कभी पानी से खेलें बच्चे,
कभी झेलें नानी से बच्चे।
कभी धूप में होते बच्चे,
कई रूप में होते बच्चे।
कभी जो होते संग हैं बच्चे,
जीवन के कई रंग हैं बच्चे।

- रा.इ.का.द्वाराहाट,अल्मोड़ा

व्यक्तित्वः

पर्यावरणविद् : सुंदरलाल बहुगुणा

● गीता लालवानी

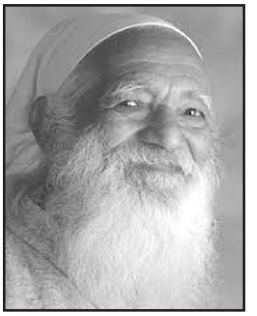

पर्यावरणविद् सुंदरलाल बहुगुणा का जन्म 9 जनवरी,1927 को उत्तराखंड के टिहरी जनपद में हुआ। उन्होंने प्रताप इंटर कालेज से इंटर की परीक्षा उत्तीर्ण की। स्नातक की परीक्षा उन्होंने सनातन धर्म कालेज लाहौर से उत्त्तीर्ण की। इनके पिता अंबादत्त बहुगुणा टिहरी रियासत में वन अधिकारी थे। 13 वर्ष की आयु में ही वे टिहरीवासियों के नागरिक अधिकारों हेतु संघर्षशील गांधी जी के शिष्य श्रीदेव सुमन के संपर्क में आए। श्री देव सुमन से प्रभावित होकर जन आंदोलनों में सक्रिय हो गए।

9 जून,1956 को उनका विवाह विमला नौटियाल जी के साथ हुआ। राजनीति से हटकर उन्होंने हमेशा समाज के लिए कार्य किया। भूदान आंदोलन से लेकर दलित उत्थान, शराब विरोधी आंदोलन में भी उनकी सक्रिय भूमिका रही। उन्होंने जनता को वनों के वास्तविक लाभ और उनके मौलिक अधिकारों के प्रति जागरूक किया। उनका कहना था कि वन हमें ईधन, पशु चारा तथा औषधियां देते हैं। साथ में जीवन की मूलभूत आवश्यकता हवा, पानी और स्वस्थ जीवन भी देते हैं। पर्यावरण संरक्षण के लिए सन् 1971 में उन्होंने 16 दिन तक लगातार अनशन किया। सन् 1973 में चमोली जिले के रैणी गांव में उन्होंने पेड़ काटने के सरकार की नीति के विरोध में चिपको आंदोलन चलाया। गौरा देवी के नेतृत्व में जब महिलाएं पेड़ों पर चिपकी तब पूरी दुनिया में 'चिपको आंदोलन' प्रसिद्ध हो गया। पेड़ों से चिपककर उन्हें काटने से बचाने का यह अभियान उत्तराखंड से पूरे देश विदेश में फैल गया। इस आंदोलन के सूत्रधार बहुगुणा को वृक्ष मित्र के नाम से भी जाना जाने लगा।

बहुगुणा जी पहाड़ों में बड़े बांधों के विरोधी थे। उन्होंने 1990 में एशिया के सबसे बड़े बांध टिहरी डैम का विरोध किया। सन् 1995 में उन्होंने टिहरी बांध के विरोध में भूख हड़ताल भी की। उनका मानना था कि हिमालय जैसे पर्यावरण के प्रति संवेदनशील क्षेत्रों में 100 मेगावाट से अधिक क्षमता का बांध नहीं बनना चाहिए।

सन् 1949 में मीरा बहिन के संपर्क में आने के बाद बहुगुणा जी ने दलित छात्रों के लिए टिहरी में हॉस्टिल की स्थापना की। दलितों को मंदिर प्रवेश का अधिकार दिलाने के लिए भी उन्होंने अनेक बार आंदोलन किए। पर्यावरण जागरूकता के लिए उनके पर्यावरण संरक्षण आंदोलन को पूरे विश्व में मान्यता मिली। संयुक्त राष्ट्र संघ प्रतिनिधि सभा को भी उन्होंने संबोधित किया। जापान, इंग्लेंड, अमेरिका, जापान, कनाडा, फ्रांस, जर्मनी सहित विश्व के 170 देशों में उन्होंने पर्यावरण के लिए लोगों को प्रेरित किया।

पर्यावरण संरक्षण के लिए भारत सरकार ने सुंदरलाल बहुगुणा को सन् 1981 में नागरिक सम्मान 'पद्मश्री' देने की घोषणा की। लेकिन बहुगुणा जी ने वह सम्मान लेने से यह कह कर मना कर दिया कि जब तक पेड़ों की कटाई जारी है, मैं स्वयं को इस सम्मान के योग्य नहीं समझता हूं। उन्हें सन् 1986 में जमनालाल बजाज पुरस्कार, सन् 1987 में राइट लाइवलीहुड अवार्ड सहित राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई सम्मान मिले। 21 मई, 2021 को कोरोना संक्रमण से सुंदरलाल बहुगुणा का 94 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

पर्यावरणविद् सुंदरलाल बहुगुणा को शत-शत नमन।

-3/9 मुरलीनगर, हुसैनगंज, लखनऊ, उ.प्र.
मोबाइल- 8090084919

रंगों के नाम ढूंढो

● अमृता राजेंद्र प्रसाद

इन वाक्यों में कुछ रंगों के नाम छिपे हुए हैं जरा दिमाग लगाकर उन्हें ढूंढ निकालिए।

1. विमला लकड़ी लेकर घर जा रही है।
2. मुन्ना! सुन पानी लाकर पिला।
3. मेरी कॉपी ला देना।
4. यह मोहन का लालटेन है।
5. रामू! जा मुनीमजी को बुला कर लाना।
6. वाह! आतिशबाजी से कितना रंगीन नजारा है।
7. शंभू राम का नाम जपता रहता है।
8. यह राहुल का घर है।
9. वह सुनहरा अवसर खो चुका है।
10. गुड़िया को गुलाबी चुनरी ओढ़ा दो।

-धरमपुरा नं एक, जगदलपुर,बस्तर, छत्तीसगढ़

उत्तर-लाल,नीला,पीला,काला,जामुनी, नारंगी, भूरा,हरा,सुनहरा,गुलाबी।

कहानी :

मेरे प्यारे दादा जी

● नरेंद्र श्रीवास्तव

"मम्मी! दादाजी कहां गए हैं?" हुप-हुप नन्हे बंदर ने मम्मी से पूछा।

"बेटा! भूल गए क्या? वे इतने समय रोज सामने वाले पार्क की एक बड़ी सीमेंट की बनी पट्टी पर बैठकर आराम फरमाते हैं।"

"अरे हां मम्मी! मैं तो भूल ही गया था।" हुप-हुप बोला।

"क्या पूछना है उनसे? मुझे ही बता दो। शायद मैं तुम्हारी मदद कर दूं।" मम्मी बोली।

"नहीं मम्मी! मैं दादाजी से ही पूछूंगा।" हुप-हुप बोला और चुप होकर पुस्तक पढ़ने लगा। मम्मी भी काम में लग गई। थोड़ी देर बाद दादाजी आ गए तो हुप-हुप खुश होकर उछलने लगा, "दादाजी आ गए ... मेरे प्यारे दादाजी आ गए।"

"दादाजी! आप रोज पार्क में क्यों जाते हैं? आपको वहां जाना क्यों अच्छा लगता है? कल से मैं भी आपके साथ चलूंगा। आप मुझे साथ में ले चलेंगे न दादाजी?" हुप-हुप ने एक साथ ढेर सारे सवाल पूछ लिए।

"बेटा! दादाजी के आते ही इतने सवाल पूछने लगे। उन्हें थोड़ा आराम से बैठने तो दो। फिर जितना मन चाहे पूछ लेना।" मम्मी ने समझाया और फिर दादाजी से बोली, "पापाजी! बैठिए, मैं आपको खाने के लिए कुछ लाती हूं।"

"रहने दे बहू! अभी कुछ नहीं खाना।" बहू से कहने के बाद हुप-हुप से बोले, "बेटा! कल मैं तुम्हें वहां ले चलूंगा। तुम्हारे सभी सवालों के जबाव वहीं मिल जाएंगे।" फिर तनिक रुककर बोले, "तुम्हारे पापा नहीं लौटे, अभी तक?"

"वो आ रहे हैं। अरे, आज तो खाने के लिए खूब चीजें लेकर आ रहे हैं।" पापा को दूर से आते देखकर मम्मी बोली।

पापा आते ही सभी सामान मम्मी को एक-एक कर देते हुए बोले, "ये हुप-हुप के लिए बिस्कुट, ये पापाजी के लिए केले और संतरे, ये तुम्हारे लिए जलेबी।"

"और आपके लिए? कुछ नहीं? है न? बस, यही आदत खराब है। हम सब के लिए रोज कुछ न कुछ लाते हो। परंतु अपने लिए कभी कुछ नहीं लाते।" मम्मी बोली।

"तुम सबकी पसंद ही मेरी पसंद है। इसी में से जो तुम मुझे दोगी वहीं खा लूंगा। तुम जो रोज अपनी पसंद का खाना खिलाती हो। वह क्या कम है?" कहते हुए पापा जी हल्के से मुस्कुरा दिए।

"पापा! कल दादाजी मुझे भी पार्क में घुमाने ले जाएंगे।" हुप-हुप बोला।

"ठीक है, पर वहां दादाजी को बिल्कुल भी परेशान नहीं करना।" पापा ने कहा। "हां नहीं करेगा। तू मेरी चिंता न कर और आकर बैठकर आराम कर ले। इतना सामान लादकर आया है।" दादाजी पापा का हाथ पकड़कर उन्हें बिठाते हुए बोले। फिर सब ने मिल बैठकर खाया और आराम करने लगे। दूसरे दिन दादाजी हुप-हुप को भी साथ ले गए। वहां का वातावरण देख कर हुप-हुप दंग रह गया। जगह-जगह फूल खिले हुए थे। बैंचें थी जिन पर बुजुर्ग बैठे बातचीत कर रहे थे। झूले डले थे, जिनमें बच्चे झूल रहे थे। कुछ बच्चे फुटबॉल खेल रहे थे। कुछ बच्चे क्रिकेट खेलने में मस्त थे। पेड़ों पर और भी बंदर थे जो धमाचौकड़ी मचा रहे थे।

"दादाजी! यह तो बहुत सुंदर जगह है। मुझे तो बहुत अच्छा लग रहा है। मजा आ गया।" हुप-हुप खुश होकर बोला।

"वो पट्टी देख रहे हो, वहां जाकर मैं लेटकर आराम करता हूं। चलो वहीं चलते हैं।" कहकर दादाजी हुप-हुप के साथ वहां पहुंचे और लेट गए। फिर हुप-हुप से बोले, "तुम थोड़ी देर घूम लो। ज्यादा दूर नहीं जाना। मेरे आसपास ही रहना। और हां, किसी को तंग नहीं करना। न ही किसी का सामान छीनना। उलजुलूल चीजें भी न खाना। वरना पेट दुखेगा तो फिर रात भर न तुम सोओगे और न हमें ही सोने दोगे।"

दादाजी चुपचाप आराम करते हुए टुकुर-टुकुर देखने

चुहलबाजी

● दिविक रमेश

मामू मामू मामू मामू,
हो कितने उस्ताद जानते।
हमें चला देते हो झट से
हम आपसे जब भी मांगते।
ये तो हम हैं जिनके आगे,
चल ना पाता दांव आपका।
जैसे ही जिद पर आते हैं,
खुल जाता है राज आपका।
सीधी राह आ जाते मामू!
हमें घुमाने ले जाते हो।
अच्छे बच्चों से बनकर के
प्यारी चीजें दिलवाते हो।
सच मानो मामू हम को तो,
प्यारे बहुत-बहुत लगते हो।
जब शरारतें हम सी करते,
बिल्कुल बच्चों से लगते हो।

-एल-1202,ग्रेंड अजनारा
हेरिटेज, सेक्टर-74, नोएडा-201301
मोबाइल- 9910177099

मनमानी

● कौशल पांडेय

कोरोना ने बदला सब कुछ,
बदल दिए सब रीति-रिवाज।
बदली सुबह शाम की रौनक,
घर में बैठे हैं सब आज।
पापा लैपटॉप पर बैठे,
मोबाइल ले दादा जी।
देख-देख हैरान है दादी,
चाय मांगते दादा जी।
याद बहुत आती है मुझको,
अपनी प्यारी टीचर जी।
ऑन लाइन न मुझको भावे,
सुस्त बहुत कंप्यूटर जी।
जल्दी जाओ कोरोना तुम,
बहुत कर चुके मनमानी।
हम बच्चों को अब सुनना है,
नानी के घर कथा-कहानी।

- 1310, ए बसंत बिहार, कानपुर
मोबाइल-9625525271

मेरा पोतू

● डॉ. प्रत्यूष गुलेरी

मेरा पोतू मुझको छेड़े,
पकड़ो दादा खाओ पेड़े।
मेरे वह तो हाथ न आता,
ताली मारे कूक बजाता।
फ़ोन छीन कर दौड़ा भागा,
सुबह-सुबह मैं जैसे जागा।
मत करना तुम गुस्सा दादा,
बी पी बढ़ता होता ज्यादा।
लौटाता हूं देखो दादा,
करता हूं मैं तुमसे वादा।
खुद दौड़े वह आगे-आगे,
दादा उसके पीछे भागे।
कहे-तुम्हें सुनाता गाना,
इचक दाना मीचक दाना।
पापा ने है देख लिया अब,
उनसे मेरी जान बचाना।

- कीर्ति कुसुम,सरस्वतीनगर,दाड़ी,
धर्मशाला, हि.प्र.
मोबाइल -9418121253

लगे। जी भर कर आराम करने के बाद दादाजी ने हुप-हुप को इशारा करके बुलाया और वापिस घर आ गए।

हुप-हुप बहुत ही खुश था। घर पहुंचकर मम्मी से बोला, ''मम्मी, बहुत अच्छी जगह है। आप और पापा भी चलना। बहुत मजा आएगा।''

अब तो दादाजी के साथ उनका परिवार भी उस पार्क में आने लगा था। न किसी से छीना-झपटी। न उछल-कूद। बस, चुपचाप इधर-उधर चहलकदमी करते और वापिस घर आ जाते।

रोज की तरह आज भी हुप-हुप पूरे परिवार के साथ पार्क में आया हुआ था। वह चुपचाप वहां के सुंदर वातावरण का आनंद ले रहा था। तभी दादाजी ने देखा। कोई दूसरा बंदर हाथ में पर्स दबाए भागा जा रहा है। उसके पीछे-पीछे बहुत से आदमी भी चीखते-चिल्लाते भाग रहे हैं। दादाजी फौरन तेजी से भागे और उस बंदर को पकड़ने में सफल हो गए। उन्होंने बंदर से वह पर्स झपटा और वहीं उसे छोड़कर उस बंदर को भगाते हुए दूर निकल गए। तब तक भीड़ उस पर्स के पास पहुंच गई थी। उसमें से एक ने वह पर्स उठाकर जिस महिला का था उसे सौंप दिया। दादाजी ने दूर से अपने परिवार को खोजना चाहा। उन्हें खुशी हुई कि उनका परिवार भी पीछे-पीछे चला आ रहा था।

''दादाजी! आप बहुत अच्छे हैं। आपने उन आंटी जी का पर्स लौटाने में उनकी मदद कर दी। नहीं तो वे परेशान हो जाती। मुझे अपने प्यारे दादाजी पर गर्व है।'' हुप-हुप बोला। और वे अपने घर वापिस आ गए।

- पलोटन गंज, गाडरवारा,
नरसिंहपुर (म.प्र.)

अंक पहेली

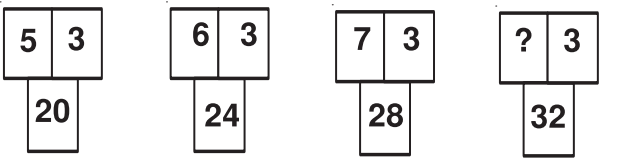

ऊपर के चित्र में गुणा व जोड़ के आधार पर अंक भरे गए हैं। खाली स्थान में अंक भरिए।

कहानी :

मुट्ठी में जीवन

● डॉ. रंजना जायसवाल

बहुत समय पहले की बात है। एक शहर में एक लड़का रहता था मनु। वह स्वभाव से शरारती स्वभाव का था। गली के कुत्तों को पत्थर से मारना, गाय के ऊपर पानी फेंक देना उसका रोज का काम था। दिन भर कोई न कोई उसकी शिकायत लेकर घर आता ही रहता था। उसकी मां ने उसे समझाते हुए कहा, ''मनु! किसी जीव को इस तरह से तंग करना ठीक नहीं। जीव भी हमारी तरह परेशान होते हैं।"

''ऐसा कुछ नहीं मां! तुम भी न.....।"

''मनु! सोचो उसको कितनी तकलीफ होती होगी। यदि कोई तुम्हें इस तरह परेशान करे तो।" पर मनु को इन सब बातों से कोई प्रभाव नहीं पड़ता। अब तो मुहल्ले के लोग भी अपने बच्चों को उसके साथ खेलने नहीं देते थे। वे सोचते कि उसकी संगति में रहकर उनके बच्चे भी बिगड़ जाएंगे। इस कारण मनु बहुत अकेला पड़ गया था। मनु की मां सब कुछ देख रही थी पर वो भी क्या करती। अखबार और टी.वी. पर एक ही खबर चल थी। हर तरफ कोरोना के कारण सब लोग बहुत परेशान थे। कोई घर से बाहर नहीं निकलता था। मनु बार-बार घर के दरवाजे तक आता पर वहां कोई न होता। कुत्ते और गाय भी उसके डर के मारे दरवाजे पर नहीं आते। मनु दिन भर टी.वी.पर वही सब कार्यक्रम देखकर बोर हो गया था। पढ़ाई करने के लिए भी कुछ न था। एक दिन मनु की मां ने कहा ''मनु !...जरा चौके से अलमारी में से पीले रंग का डिब्बा निकाल लाओ।'' ''मां!...आप ले लो न।"

मां ने मनु को घूरकर देखा। मनु समझ गया था कि अगर अब उसने टालमटोल की तो पापा भी घर पर ही हैं। वो मन मारकर रसोईघर से पीला डिब्बा उठा लाया।

''जानते हो मनु! इस डिब्बे में क्या है?"

''क्या है मां?" मनु ने उत्सुकता से पूछा। ''तुम खुद ही निकाल लो।" मनु ने झट से अपना हाथ डिब्बे के अंदर डाला। धनिये के दाने देख मनु का चेहरा उतर गया।

''क्या मां! आप भी न,ये कैसा मजाक है।" मां ने मनु के छोटे-छोटे हाथों को पकड़ा और बगीचे की तरफ ले गई। ''मनु!...चल तुझे एक जादू सिखाती हूं।"

''पर मां ये तो धनिया के दाने हैं।" जानते हो मनु! तुम्हें ऐसा लगता है कि ये सिर्फ धनिया के दाने हैं। पता है तुम्हारे हाथों में किसी को जीवन देने का जादू है।" मनु आश्चर्य से मां को देख रहा था। ''आओ तुम्हें जादू दिखाती हूं।" मां ने खुरपी उठाई और मिट्टी खोदना शुरू किया। मनु बड़े ध्यान से सब कुछ देख रहा था। थोड़ी देर में मां ने बगीचे की मिट्टी खोद डाली। मां ने आंचल से अपने पसीने को पोछा। '' मनु!.. चल तू अब इन दानों को मिट्टी में बिखेर दे और हां रोज पानी देना मत भूलना।"

''पर मां तुम तो जादू दिखाने वाली थी।" मां के चेहरे पर मुस्कान आ गई। उन्होंने बड़े प्यार से मनु के सर पर हाथ फेरा। ''बस थोड़ा सा इंतज़ार करो। अब ये तुम्हारी जिम्मेदारी है। इन बीजों की देखभाल करने की। फिर देखना जादू .."

मनु को तो जैसे अपने जीवन का लक्ष्य मिल गया। सुबह-सवेरे उठते ही सबसे पहले वो बगीचे की तरफ भागता। शायद अब तो कुछ जादू होगा...जो मनु घर में बैठे-बैठे बोर हो रहा था। अब उसका ज्यादातर समय बगीचे में ही बीतता।

एक दिन सुबह-सुबह जब वो बगीचे में गया तो धनिए के बीज में से कोपलें फूटने लगी थी। मनु की खुशी का ठिकाना नहीं था। वह रसाईघर की तरफ भागा। ''मां ! जल्दी से बाहर चलो। तुमने सच कहा था मेरे हाथों में जादू है। देखो न मैंने सचमुच में जादू कर दिया।" मनु खुशी से नाच रहा था। उसने जल्दी से फोन करके अपने चाचा,नाना-नानी को बताया। अब मनु का समय बगीचे में और भी बीतने लगा। अपने छोटे-छोटे हाथों से उसने पूरे बगीचे की साफ-सफाई भी कर डाली।

एक दिन सुबह-सुबह जब मनु की आंख खुली तो बग़ीचे के कई गमले टूटे हुए थे। मनु के नन्हे-नन्हे हाथों से बोए धनिया के छोटे-छोटे पौधे उजड़े हुए थे। मां हाथ में झाड़ू लिए बगीचे को समेटने में लगी थी। मनु जोर-जोर से रोने लगा, ''मां! देखो न मेरे पौधे..किसी ने मेरे सारे पौधे खराब कर दिए।"

मां ने बड़े प्यार से मनु को अपने पास बैठाया। उसके आंसू पोछते हुए कहा, ''देख रही हूं बेटा! कल भोजन की तलाश में बंदरों के झुंड ने अपना बगीचा उजाड़ दिया। मनु तुम्हें आज बहुत दर्द हो रहा है न इन पौधों के नष्ट हो जाने से। कुछ ऐसा ही दर्द उन बेजुबान जानवरों को भी होता है। जिन्हें तुम दिनभर तंग करते हो। सोचो उन्हें भी कितनी तकलीफ होती होगी। आखिर इन पौधों की तरह उनमें भी तो जीवन है। वे बेजुबान जानवर भी तो भगवान का जादू है।"

मनु को धीरे-धीरे मां की बात समझ में आ रही थी। ''मां! मैं आज से किसी भी जानवर को परेशान नहीं करूंगा।'' कहते हुए मनु तितर-बितर हुए बगीचे की सफाई करने लगा। मां बहुत खुश थी।

- लाल बाग कॉलोनी,छोटी बसही मिर्जापुर, उ.प्र.

पुस्तक समीक्षा :

चंइयां मंइयां

बाल गीतिका संग्रह में तितली, दीपावली, कबूतर, बादल आदि विषयों पर 28 गीत संग्रहीत हैं। सभी रचनाएं बाल मनोविज्ञान पर खरी उतरती हैं। रचनाकार ने बच्चों की रुचि तथा उनके मनोविज्ञान को देखते हुए कविताएं लिखी हैं। कविताएं जहां बच्चों का स्वस्थ मनोरंजन करती हैं। वहीं ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक भी हैं।

पृष्ठ संख्या : 40 मूल्य- 120/- रुपए
रचनाकार : राजा भइया गुप्ता 'राजाभ'
संपर्क : 616/227 बसंत विहार,निकट विश्वनाथ पार्क,सीतापुर रोड,लखनऊ - 226021

51 बाल पहेलियां

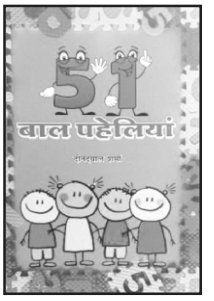

पुस्तक में महापुषों, पशु-पक्षियों तथा दैनिक जीवन में काम आने वस्तुओं पर आधारित 51 पहेलियां दी गई हैं। मजे की बात ये है कि पहेलियों के सचित्र उत्तर भी पुस्तक के अंत में दिए गए हैं। पहेलियां जहां बच्चों की तर्क शक्ति को बढ़ाने में सक्षम हैं वहीं बच्चों को समाज, संस्कृति तथा पर्यावरण आदि से भी जोड़ती हैं।

पृष्ठ संख्या : 64 मूल्य- 100/-रुपए
रचनाकार : दीनदयाल शर्मा
संपर्क: 10/22 आर.एच.बी., डी रोड, हनुमानगढ़ जंकशन, राजस्थान

आकू-काकू

बाल गीत संग्रह में 29 रचनाएं आकर्षक चित्रों के साथ बाल मनोविज्ञान को ध्यान में रखते हुए दी गई हैं। कुछवा और खरगोश जैसी अन्य पारंपरिक कहानियों को पद्य कथा में देने का अनूठा प्रयोग हुआ है। बच्चों के मन में वैज्ञानिक सोच जाग्रत करने तथा उन्हें पर्यावरण से जोड़ने में भी रचनाएं सक्षम हैं। कविताएं शिक्षाप्रद तथा मनोरंजन से भरपूर हैं।

पृष्ठ संख्या- 108 मूल्य- 150/- रुपए
रचनाकार : जयसिंह आशावत
संपर्क : नैनवां,जिला बूंदी, राजस्थान- 323801

अच्छी बातें

लघु बाल द्वि-पदी संग्रह में लंबे बाल गीत के द्वारा 105 द्विपदियों के माध्यम से रचनाकार ने बच्चों को अच्छी बातों से जोड़ने का प्रयास किया है। एक ही गीत को घटना क्रम के अनुसार दिया गया है। बालसाहित्य में यह अपने आप में एक अनूठा प्रयोग है। पुस्तक को आकर्षक बनाने के लिए रंगीन चित्र भी दिए गए है।

पृष्ठ संख्या : 54 मूल्य- 150/-रुपए
रचनाकार : राजकुमार निजात
प्रकाशक : 57, गली-1, हरि बिष्णु कॉलोनी
कंगनपुर रोड, सिरसा, हरियाणा- 125055

समीक्षक :
रतनसिंह किरमोलिया
मो.7534007179

रोचक लोक कहानियां

कहानी संग्रह में 36 लोक कहानियां संकलित हैं। कहानियों को तीन भागों में बांटा गया है। रचनाकार ने प्रारंभ में बच्चों से संवाद करते हुए कहा है कि कैसे वे कहानीकार बनी। संकलन में देश-विदेश की लोक कहानियों को बहुत ही सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया है।

पृष्ठ संख्या : 124 मूल्य : 200/- रुपए
रचनाकार: डॉ. बानो सरताज
संपर्क: अपोलो प्रकाशन, 25 सिद्धेश्वर महादेव मंदिर के पीछे,
न्यू पिंकसिटी मार्किट, राजा पार्क, जयपुर, राजस्थान

मेरी माटी मेरा देश

इस पुस्तक में बालसाहित्य विमर्श की पत्रिका बालवाटिका के यशस्वी संपादक डॉ. भैरूंलाल गर्ग के आत्म संस्मरण संकलित हैं। पुस्तक संदेश देती है कि यदि हमें चाह है तो हम अपने लक्ष्य को आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। जीवन में आगे बढ़ने के लिए संघर्षो से गुजरना होता है। पुस्तक हमें अपनी जड़ों से जुड़ने की प्रेरणा भी देती है।

पृष्ठ संख्या : 168 मूल्य 195/- रुपए
लेखक : डॉ. भैरूंलाल गर्ग
प्रकाशक : दिल्ली पुस्तक सदन, 4735/22 प्रकाशदीप भवन,(जी.एफ.5ई) अंसारी रोड,दरियागंज,दिल्ली-02

बचपन रसगुल्लों का दोना

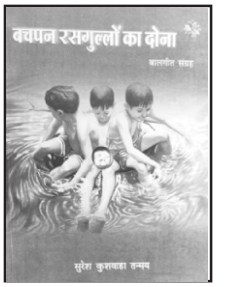

बालगीत संग्रह में 91 बाल गीत संकलित हैं। रचनाएं जहां सरल भाषा में बच्चों के मनोविज्ञान को समझते हुए लिखी गई हैं, वहीं रचनाएं गेय हैं। बच्चों को प्रकृति, संस्कृति,मानवीय मूल्यों तथा सामाजिक सरोकारों व पर्यावरण से जोड़ने का सार्थक प्रयास भी रचनाकार ने किया है। चित्रों ने पुस्तक को आकर्षक बना दिया है।

पृष्ठ संख्या : 188 मूल्य- 250/- रुपए
रचनाकार : सुरेश कुशवाहा तन्मय
संपर्क : 101, महानंद ब्लाक,,विराशा हाइटस,दानिशकुंज, कोलार रोड, भोपाल, म.प्र.

हिंदी बाल कविताएं

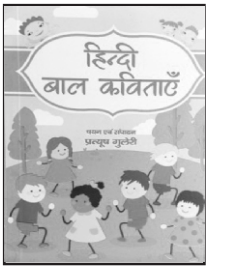

पुस्तक में आदिकाल के कवि श्रीधर पाठक से लेकर वर्तमान काल के 118 प्रमुख बालसाहित्यकारों की बाल कविताएं संकलित की गई हैं। बालसाहित्यकारों के पते तथा संपर्क नंबर भी दिए गए हैं। बालसाहित्य के दस्तावेज के तौर पर पुस्तक पठनीय तथा संग्रहणीय है।

पृष्ठ संख्या : 160 मूल्य- 160/- रुपए
संपादक: डॉ. प्रत्यूष गुलेरी (श्रीकांत प्रत्यूष गुलेरी)
प्रकाशक : निखिल पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स
37, शिवराम कृपा, बिष्णु कॉलोनी,शाहगंज,आगरा,उ.प्र.-282010

.....पृष्ठ 30 का शेष.....

ने इस पर कुत्ते की सूरत उकेरी है। काले-पीले रंग की इस तितली के उपरी पंखों पर सफ़ेद रंग से यह आकृति दिखाई देती है। इसके पंख 22 से 31 एमएम के होते हैं। जुलिया तितली पीले-नारंगी रंग की होती है। इस तितली के चार पंख होते हैं। जो तीन से चार इंच लंबे होते हैं। जिस पर गहरी नारंगी रंग की लकीरें दिखाई देती हैं। दक्षिणी तथा मध्य अमेरिका में इसे देखा जा सकता है। इस तितली का सिर बड़ा होता है। इसे गंदी चीजों से रस प्राप्त करने में मजा आता है। कार्नर तितली के पंखों के किनारों पर सफ़ेदी देखी जा सकती है। इस कारण इस तितली का नाम कार्नर तितली कहा गया है। दून नेशनल पार्क सहित न्यूजर्सी, न्यूयार्क आदि जगहों पर इसे देखा जा सकता है। जुलाई और अगस्त माह के मध्य इसे देखा जा सकता है।

मिल्बर्ट्स टारटाइजशेल तितली चार पंखों वाली होती है। इस तितली के पंख 1.6-2.5 इंच के होते हैं। उत्तरी अमेरिका तथा मैक्सिको में यह पाईजाती है। सड़े फ़लों से यह रस प्राप्त करती है। गहरे भूरे रंग अथवा सुर्ख लाल रंग के परों पर काले छल्ले तथा सफ़ेद रंग इसके आकर्षण को बढ़ा देते हैं। मार्निंग क्लाक तितली मेरुन रंग की होती है। जिस पर नीले रंग के छल्ले तथा पीले रंग की बार्डर होती है। फूलों के पराग तथा फ़लों का रस पीना इसे प्रिय है। यूरोप के कुछ भागों तथा अमेरिका के गर्म प्रदेशों में यह देखी जाती है।

पेंटेड लेडी बटरफ्लाई नामक तितली की खूबसूरती देखते ही बनती है। गहरे भूरे तथा लाल रंग के परों पर सफ़ेद छल्ले इसकी सुंदरता में चार चांद लगा देते हैं। आस्ट्रेलिया तथा अमेरिका के भूभागों में यह पाईजाती है। पिकाक बटरफ़्लाय में गहरे मेरुन रंग के परों पर चार बडी-बडी आंखें देखी जा सकती हैं। ऊपर के दो पंखों पर सफ़ेद गोले तथा नीचे के दो पंखों पर नीले गोले इसकी सुंदरता बढा देते हैं।

उपर्युक्त तितलियों के अलावा पोस्टमन तितली, सदर्न डागफ़ेस तितली, रेड एडमाइरल तितली, समर एज्योर तितली, टाईगर स्वालोटेल तितली, जेबरा स्वालोटेल तितली ज्युलिसेस तितली तथा वायसराय तितली आदि तितलियों की प्रमुख प्रजातियां हैं। प्रकृति ने कितने ही प्यारे जीव-जंतु इस धरती पर भेजे हैं। ये सभी जीव मानव के लिए परम हितैषी भी होते हैं। बस हमें अपना नजरिया बदलने भर की आवश्यकता है।

- 103, छिंदवाड़ा, म.प्र.
मोबाइल-9425014719

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता-69

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर नीचे कूपन में गोला भरकर **15 मार्च, 2022** तक संपादक बालप्रहरी, अल्मोड़ा-263601 उत्तराखंड के पते पर (कूपन काटकर) भेजना है। प्रतियोगिता में 14 साल तक के बच्चे भाग ले सकते हैं। अधिक बच्चों के सही उत्तर होने पर ड्रा से नाम निकाला जाएगा। सर्वोत्तम आने वाले बच्चे का नाम पत्रिका में छापा जाएगा। उपहार में 200 रुपए की पुस्तकें/पत्रिकाएं भेजी जाएंगी। सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता-68 में **श्री मोहित सक्सेना कक्षा 6 सु.बो.मै.स्कूल पटना,बिहार** का चयन किया गया है। इन्हें पुरस्कार में पुस्तक/पत्रिकाएं भेजी जा रही हैं।

1. राष्ट्रीय विज्ञान दिवस कब मनाया जाता है?
(a) 28 मार्च (b) 28 फरवरी
(c) 21 जून (d) 5 जून

2. संसार में सबसे तेज गति से उड़ने वाली तितली है।
(a) मोनार्क (b) बटरफ्लाई
(c) जुलिया (d) कार्नर तितली

3. रेडियाग्राफी दिवस कब मनाया जाता है?
(a) 18 नवंबर (b) 8 नवंबर
(c) 8 मार्च (d) 2 दिसंबर

4. विश्व का सबसे वर्दीधारी संगठन है।
(a) राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (b) एन.एस.एस.
(c) भारत ज्ञान विज्ञान समिति (d) एन.सी.सी.

5. सुंदरलाल बहुगुणा का संबंध है।
(a) बालसाहित्य (b) पर्यावरण
(c) स्वास्थ्य (d) इनमें से कोई नहीं

बालप्रहरी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता-68 का सही उत्तर

1. (c), **2.** (c), **3.** (b), **4.** (d) **5.** (c)

बालप्रहरी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता-69

नाम : ..... **कक्षा** .....

पता : .....

.....

फोन (कोड सहित)..... **मो.** .....

	(a)	(b)	(c)	(d)
प्रश्न सं. 1	○	○	○	○
2	○	○	○	○
3	○	○	○	○
4	○	○	○	○
5	○	○	○	○

नोट : सही उत्तर वाले गोले को पेंसिल या काले पैन से (इस प्रकार (●) काला करना है।

शुभचिंतकों से

- बालप्रहरी केवल एक पत्रिका ही नहीं बच्चों के मन में वैज्ञानिक सोच जाग्रत करने, उन्हें साहित्यिक मंच प्रदान करने तथा रचनात्मक कार्यों व पठन-पाठन की संस्कृति से जोड़ने का एक सामूहिक प्रयास भी है।
- बालप्रहरी के लिए रचनाएं भिजवाकर सहयोग करें। पारिवारिक व परिचित बच्चों को बालप्रहरी के लिए रचनाएं लिखने के लिए प्रेरित कीजिएगा। एक कागज पर एक ही रचना लिखी हो।
- बार-बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिए आजीवन /सरंक्षक सदस्यता भिजवाएं। धनराशि पंजाब नेशनल बैंक अल्मोड़ा स्थित बालप्रहरी के खाता सं. 0962000101357002 (IFSC Code : PUNB 0096200) में सीधे भी जमा की जा सकती है। धनराशि बैंक में जमा करने पर कृपया सूचना वाट्सअप/मेल/ एस.एम.एस./पोस्टकार्ड या पत्र से देकर सहयोग करें।
- बालप्रहरी के लिए शुल्क/ मनीआर्डर व रचना भेजते समय अपना नाम, पूरा पता एवं फोन न. अवश्य भेजें। पता बदलने तथा पत्रिका नियमित नहीं मिलने पर वाट्सअप/ पोस्ट कार्ड /पत्र/एस.एम.एस. से सूचित करें।

बालप्रहरी को बालोपयोगी बनाने के लिए आप सबसे सहयोग एवं मार्गदर्शन की अपेक्षा है। - संपादक

बालप्रहरी

(बच्चों की त्रैमासिक पत्रिका)

संपादकीय कार्यालय

दरबारीनगर, अल्मोड़ा, उत्तराखंड-263601

मोबाइल/वाट्सअप: 9412162950

सदस्यता फार्म

मैं 'बालप्रहरी' की सरंक्षक सदस्यता 5000/-, आजीवन सदस्यता 2,000/-, 3 वर्ष का शुल्क 300/-रु. मनीआर्डर / ड्राफ्ट/चैक सं0 .....दिनांक .....द्वारा भेज रहा/रही हूं। कृपया मुझे पत्रिका की प्रति नियमित रूप से डाक से भिजवाएं।

नाम .....

पता .....

.....

.....

.....पिन.....

मोबाइल/ फोन .....

पुस्तक प्राप्ति

पुस्तक : गिरै कौतिक
रचनाकार: कृपालसिंह शीला
संपर्क : सरपटा, बासोट, भिक्यासैण,अल्मोड़ा-263680

पुस्तक : हमोरो पर्यावरण और जैव विविधता
रचनाकार : दिनेश भट्ट
संपर्क : न्यू सेरा,निकट नौला, जीआईसी रोड, पिथौरागढ़ - 262501

पुस्तक : मेरे पापा बस्ता लाए
रचनाकार : राजकुमार निजात
संपर्क : 57 गली-1,हरि बिष्णु कॉलोनी,कंगनपुर रोड, सिरसा, हरियाणा

पुस्तक : सत्यव्रत चूंडा
रचनाकार : फतहसिंह लोढ़ा
संपर्क : सरस्वती विहार,शब्द गंध द्वार,सेशन कोर्ट के सामने,भीलवाड़ा(राज.)

पुस्तक : हम बगिया के फूल
रचनाकार : दीनदयाल शर्मा
संपर्क : एकता प्रकाशन, चुरू, राजस्थान - 331001

पुस्तक : डॉ. स्वर्ण किरण के आत्मीय पत्र
रचनाकार : डॉ. रामदुलार सिंह पराया
संपर्क : उदितनगर, कुसुम्ही,चुनार,मिर्जापुर,उत्तर प्रदेश

पुस्तक : बाल कृष्णा की दौड़ी रेल
संपादक : वीणा शर्मा वशिष्ट
संपर्क : पंचकुला, हरियाणा

पुस्तक : अंजुरी भर प्यास लिए
रचनाकार : डॉ. रसिक किशोर सिंह 'नीरज'
संपर्क : प्रबंधक,उ.प्र. राज्य कर्मचारी कल्याण निगम कलेक्ट्रेट, रायबरेली, उ.प्र.

पुस्तक : दीवार पर पीपल
संपादक : चंद्रशेखर जोशी
संपर्क : जमुना मैमोरियल अस्पताल,पीलीभीत रोड, खटीमा,ऊधमसिंहनगर

पुस्तक : मन के उद्गार
रचनाकार: नारायणसिंह राणा
संपर्क : निकट डोभाल निवास,गुलर घाटी रोड, बालावाला, देहरादून

पुस्तक : झलकारी बाई
रचनाकार: राम लखन प्रजापति 'प्रतापगढ़ी'
प्रकाशक : बेनी विहार-2 पीरूमदारा,रामनगर,नैनीताल 244715

पुस्तक : हमारे अविस्मरणीय दिवस
रचनाकार: डॉ. सुरेंद्रदत्त सेमल्टी
संपर्क : पुजारगांव,चंदबदनी, टिहरी- 249122

पुस्तक : दिव्य मौन साधना
संपादक : डॉ. कुसुम शर्मा
संपर्क : बी- 2778, इंदिरानगर,लखनऊ, उत्तर प्रदेश

पुस्तक : बच्चों की दुनिया
रचनाकार : डॉ. रमेश आनंद
संपर्क : 2/305 बघेल कुंज, नामनेर,आगरा,उत्तर प्रदेश 282001

पत्रिका : अविराम साहित्यिकी
संपादक : डॉ. उमेश महादोषी
संपर्क : एफ 498/गली-11 राजेंद्रनगर,रूड़की, हरिद्वार- 247667

पुस्तक : सीटी बजाता हाथी आया
संपादक : श्यामपलट पांडेय
संपर्क : 907 पंचतीर्थ अपार्ट. जोधपुर चार रास्ता,सेटेलाइट, अहमदाबाद

पुस्तक : जय भारत जय भारती
रचनाकार : हितेश कुमार शर्मा
प्रकाशक : गणपति भवन,सिविल लाइंस, बिजनौर,उ.प्र. 246701

पुस्तक : समय
संपादक : दिलीप भाटिया
संपर्क : रावतभाटा,राजस्थान-323307

बालप्रहरी बाल क्लब

प्रतिष्ठा रावत
सोलन, हि.प्र.

चैतन्य बिष्ट
अल्मोड़ा

वर्धन तलसेरा
नाथद्वारा, राजस्थान

निलेश भट्ट
अल्मोड़ा

भूमिका गहतोड़ी
लोहाघाट, चंपावत

अर्चित जैन
उदयपुर (राजस्थान)

अनेरी पोद्दार
इंदौर (म.प्र.)

गायत्री
हरनौली, अल्मोड़ा

आर्या ठाकुर
खंडवा (म.प्र.)

पार्थ जी चंद्रा
सोमेश्वर, अल्मोड़ा

रक्षिता गोस्वामी
हल्द्वानी, नैनीताल

मनन पंत
हल्द्वानी

भूमिका मेहता
मदकोट, पिथौरागढ़

अदिति श्रीवास्तवा
जामौ, अमेठी (उ.प्र.)

आरती चौहान
मानिला, अल्मोड़ा

अर्पित चतुर्वेदी
चंपावत

दीक्षा बिष्ट
चंपावत

शीतल बुटौला
रुद्रप्रयाग

योगिता जोशी
पोखरी, पिथौरागढ़

ईशा अवस्थी
खंडवा (म.प्र.)

आंचल बिष्ट
चंपावत

भूमिका रावत
हरनोली, अल्मोड़ा

युवराज रौथान
देहरादून

मुग्धा शर्मा
देहरादून

कनिका जोशी
चनौदा, अल्मोड़ा

नेहा बिष्ट
चहज पिथौरागढ़

पलक कुड़ाई
हल्द्वानी

नए संरक्षक : श्री टी.बी.चंद्र सुब्बा

सिंचाई विभाग सिक्किम सरकार में सहायक अभियंता पद पर कार्यरत टी.बी.चंद्र सुब्बा की आंशुका करूण थोपाहरू (कथा संग्रह), अभ्यस्त (कविता संग्रह), अनद्वेगको रूप (खंड काव्य), दुख सागर (गीति काव्य), जीवनदेखि धेरै टाढ़ा (उपन्यास), साहित्यका आठ शिखर पुरूष (जीवनी संकलन) सहित 10 पुस्तकें प्रकाशित हैं। आपने 11 स्मृति ग्रंथों, पत्रिकाओं के विशेषांकों का संपादन भी किया है। 'भारत और नेपाल राष्ट्र का संपूर्ण जात-जाति हरूका इतिहास, संस्कृति र परंपरा' पुस्तक प्रकाशनाधीन है। नेपाली साहित्य परिषद, सिक्किम लेखक संघ,साहित्य अकादमी नई दिल्ली, त्रिफला राष्ट्रीय पुस्तकालय नेपाल, युवा साहित्य प्रतिष्ठान सहित कई संस्थाओं से आप जुड़े हैं। आपको राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर की कई संस्थाओं ने सम्मानित किया है। कई संस्थाओं ने आपका नागरिक सम्मान भी किया है। नेपाली टेलीविजन,आकाशवाणी सिक्किम, सहित कई सरकारी तथा गैर सरकारी चैनलों के माध्यम से आपकी वार्ताएं प्रसारित होती रही हैं। बालप्रहरी संरक्षक बतौर आपने पत्रिका को संबल प्रदान किया है। हम आपके आभारी हैं। बालप्रहरी को समय-समय पर आपका सहयोग एवं मार्गदर्शन मिलते रहेगा, ऐसी आशा है।

सपंर्क : नेपाली साहित्य परिषद भवन,जीवन थिंग मार्ग,
विकास क्षेत्र, गांतोक, पूर्वी सिक्किम- 737101

नए संरक्षक : डॉ. अशोक कुमार नेगी

शिक्षण कार्य को केवल नौकरी के बजाय कुछ लोग एक मिशन के तौर पर करते हैं। उनमें एक नाम है- डॉ. अशोककुमार नेगी। डॉ. नेगी जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान खंडवा मध्य प्रदेश में व्याख्याता पद पर कार्यरत हैं। उनका मानना है कि आज के दौर में अपने को अपडेट करने के लिए पुस्तकें एवं पत्र-पत्रिकाओं का अध्ययन जरूरी है। देश की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में जहां उनकी रचनाएं प्रकाशित होती रही हैं। वहीं विभिन्न विषयों पर उनके आलेख आकाशवाणी से भी प्रसारित हुए हैं। उनके कई शोध आलेखों का प्रकाशन राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं में हुआ है। स्थानीय परिवेश को समझने के लिए उन्होंने निमाड़ी व कोरकू आदि भाषाओं का अध्ययन किया है। इन आंचलिक भाषाओं के बच्चों के लिए शैक्षणिक सामग्री तैयार करने में भी वे जुटे हैं। कोरोना काल में बच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने के साथ ही उन्होंने शोधात्मक अध्ययन भी किया। बालप्रहरी की ऑनलाइन कार्यशालाओं में वे जहां प्रतिदिन जुड़ते हैं। वहीं खंडवा तथा मध्य प्रदेश के बच्चों को कोरोना काल में पाठ्यक्रम से इत्तर जोड़ने का प्रयास भी वे कर रहे हैं। बालप्रहरी संरक्षक बतौर पत्रिका को उनके अनुभवों का लाभ मिलेगा, ऐसा हमारा मानना है।

सपंर्क : जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, खंडवा,म.प्र.
मोबाइल- 8717899310

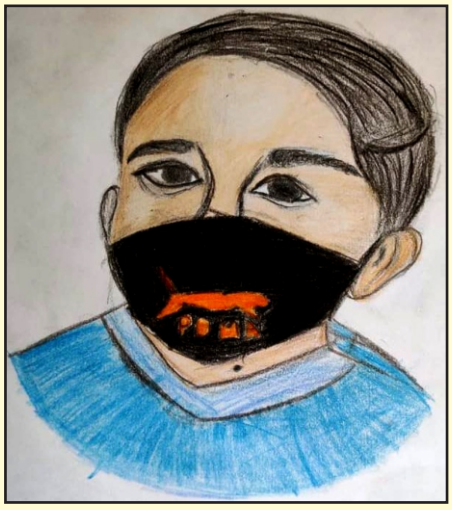

अनंत घुघत्याल, कक्षा - 6
यू.सी.एस. द्वाराहाट, अल्मोड़ा

वंशिका, कक्षा - 11
केन्द्रीय विद्यालय गोपेश्वर, चमोली

आयुषी श्रीवास्तवा, कक्षा - 9
रा.बा.इ.कालेज, जामो, अमेठी (उ.प्र.)

सुवर्णा जोशी, कक्षा - 4
रा.प्रा.वि. सेलाबगड़, गरुड़, बागेश्वर

आरुष पी योगेश
संस्कृति स्कूल दिल्ली

दीक्षित पपनै, कक्षा - 4
बाल विकास विद्या मंदिर, भटकोट

डिंपल आर्या, कक्षा - 5
रा.प्रा.वि.बसभीड़ा, चौखुटिया, अल्मोड़ा

RNI No. UTTHIN/2004/18604

सेवा में,

प्रेषक : संपादक बालप्रहरी, अल्मोड़ा, उत्तराखंड। मो. 9412162950

लक्षित वर्मा, कक्षा - 3, डी.पी.एस. भिलाई छत्तीसगढ़

मयंक कांडपाल, कक्षा - 8, विवेकानंद इ.कालेज, अल्मोड़ा

मुद्रक : प्रकाश पब्लिकेशन, हल्द्वानी। मो. : 9412092336